THE LARGEST CIRCULATED AND READ HINDI DAILY IN TELANGANA & ANDHRA PRADESH

स्वतंत्र वार्ता

epaper.vaartha.com
Vaartha Hindi
@Vaartha_Hindi
Vaartha official
www.hindi.vaartha.com

वर्ष-30 अंक : 57 (हैदराबाद, निजामाबाद, विशाखापट्टणम, तिरुपति से प्रकाशित) ज्येष्ठ कृ.12 2082 शनिवार, 24 मई-2025

प्रधान संपादक – डॉ. गिरीश कुमार संघी हैदराबाद नगर ※ पृष्ठ : 16 मूल्य : 8 रुपये

पीएम मोदी 26 को जाएंगे गुजरात

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 26 मई को दो दिवसीय दौरे पर गुजरात जाएंगे। इस दौरान वह देश के पहले 9,000 हॉर्स पावर के लोकोमोटिव इंजन का अनावरण करेंगे। साथ ही एक रोडशो और कई कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। राज्य सरकार के अधिकारियों ने बुधवार को बताया कि पीएम मोदी सोमवार को सुबह करीब 10 बजे वडोदरा हवाई अड्डे पर पहुंचने के बाद दाहोद, भुज, वडोदरा व गांधीनगर में कई कार्यक्रमों में शिरकत करेंगे। वडोदरा नगर निगम की स्थायी समिति की अध्यक्ष शीतल मिस्त्री ने बताया कि प्रधानमंत्री का स्वागत करने और ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के लिए उन्हें बधाई देने के लिए वडोदरा नगर निगम ने हवाई अड्डे के पास एक किलोमीटर लंबे रोड शो की योजना बनाई है।

छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र बॉर्डर पर मुठभेड़ 4 नक्सली ढेर

जगदलपुर, 23 मई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़-महाराष्ट्र बॉर्डर पर शुक्रवार को महाराष्ट्र के सी-60 कमांडो ने 4 नक्सलियों को ढेर कर दिया है। बताया जा रहा है कि सीआरपीएफ के 300 जवानों की टीम ने जंगल के बीच नक्सलियों को घेरकर मारा है। बड़ी संख्या में हथियार बरामद किए गए हैं। मामला कवांडे और नेलगुंडा इलाके का है।

मिली जानकारी के मुताबिक शुक्रवार की सुबह गुंडा इलाके में नक्सलियों ने जवानों पर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी, जिसका जवानों ने मुंहतोड़ जवाब दिया। लगभग 2 घंटे से रुक-रुककर गोलीबारी जारी है। सर्चिंग के दौरान 4 नक्सलियों के शव, एक सेल्फ लोडिंग राइफल, एक 303 राइफल और एक भरमार बंदूक बरामद की गई। इसके अलावा मौके से वॉकी-टॉकी और नक्सली साहित्य बरामद किया गया। वहीं सुकमा में भी पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई है।

ट्रंप की ऐपल को धमकी

> भारत या किसी और जगह बना तो 25 प्रतिशत टैरिफ लगाएंगे

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फिर से बम गिराया है। उन्होंने सख्ती से कहा है कि ऐपल को अमेरिका में बिकने वाले आईफोनों को भारत या किसी दूसरे देश में नहीं, बल्कि स्थानीय स्तर पर बनाना होगा। ऐसा न होने पर उन्होंने 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने की धमकी दी है। ऐपल ने इसे लेकर कोई भी कदम उठाया तो उसका भारत पर कई तरह से असर पड़ सकता है।

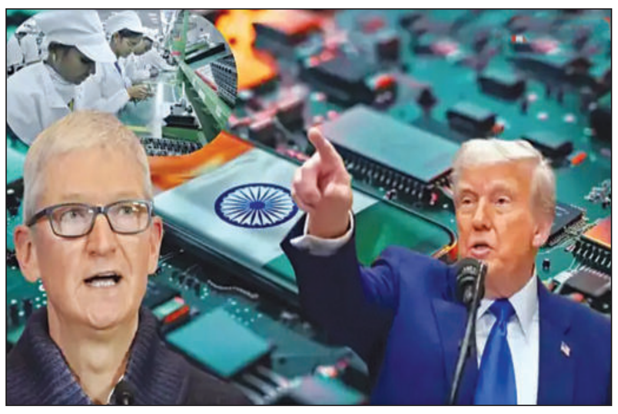

ट्रंप ने ट्रूथ सोशल पर एक पोस्ट में लिखा, मैंने बहुत पहले ही ऐपल के टिम कुक को बता दिया था कि मैं चाहता हूं कि उनके आईफोन जो अमेरिका में बेचे जाएंगे, वे भारत या किसी अन्य जगह पर नहीं, बल्कि अमेरिका में ही बनें। अगर ऐसा नहीं होता है तो ऐपल को अमेरिका को कम से कम 25 प्रतिशत का टैरिफ देना होगा। ट्रंप ने ये बातें तब कहीं हैं जब खबरें आई हैं कि ऐपल भारत में अपना उत्पादन बढ़ा रही है। ट्रंप ने पहले कहा था कि वह चाहते हैं कि ऐपल अमेरिका में ही उत्पादन करे। हालांकि, ट्रंप की अनदेखी करते हुए ऐपल ने भारत में क्षमता बढ़ाने का फैसला किया। चीन और वियतनाम जैसे अन्य प्रमुख मैन्युफैक्चरिंग हब के खिलाफ अमेरिका की ट्रेड वॉर के बाद से ऐपल भारत पर नजर रख रहा है। फाइनेंशियल टाइम्स ने रिपोर्ट दी कि टेक दिग्गज अगले साल तक अमेरिका में बेचे जाने वाले सभी आईफोन की असेंबली को भारत में शिफ्ट करने पर विचार कर रही है। ट्रंप की टिप्पणी के तुरंत बाद रिपोर्टें सामने आईं कि भारत पर ऐपल के फोकस में कोई बदलाव नहीं हुआ है। ऐपल के अधिकारियों ने भारतीय सरकारी अधिकारियों को आश्वासन दिया कि कंपनी की निवेश योजनाएं बरकरार हैं।

देश ऐपल का एक प्रमुख मैन्युफैक्चरिंग बेस होगा। कुक घोषणा कर चुके हैं कि ऐपल जून तिमाही में अमेरिका में बेचे जाने वाले ज्यादातर आईफोनों को भारत से सोर्स करेगा। >14

सीजेआई प्रोटोकॉल मामला

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। सीजेआई प्रोटोकॉल उल्लंघन मामले को लेकर दायर की गई याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को सुनवाई की। सुप्रीम कोर्ट ने इस संबंध में याचिका डालने वाले शख्स पर 7000 रुपये का जुर्माना लगाया है। जनहित याचिका (पीआईएल) भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) बी.आर. गवई के सीजेआई के रूप में पदभार ग्रहण करने के बाद अपने गृह राज्य महाराष्ट्र की पहली यात्रा के संबंध में प्रोटोकॉल के उल्लंघन को लेकर एक दायर की थी।

मुख्य न्यायाधीश बी.आर. गवई की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि यह याचिका केवल 'पब्लिसिटी इंटरेस्ट लिटिगेशन' है।

शीर्ष कोर्ट ने खारिज की याचिका

'सस्ती लोकप्रियता के लिए दायर की पीआईएल'

जिसे 'सस्ती लोकप्रियता' हासिल करने के लिए दायर किया गया है। इसके बाद पीठ ने याचिका को खारिज कर दिया।

क्या है मामला : प्रधान न्यायाधीश बनने के बाद जस्टिस बीआर गवई पहली बार महाराष्ट्र पहुंचे थे। 14 मई को शपथ लेने वाले सीजेआई गवई महाराष्ट्र और गोवा बार काउंसिल द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के लिए मुंबई में थे। इस दौरान महाराष्ट्र के मुख्य सचिव, पुलिस महानिदेशक या मुंबई पुलिस आयुक्त कोई भी उनके स्वागत के लिए मौजूद नहीं था। सीजेआई की टिप्पणी के कुछ घंटों बाद तीनों शीर्ष अधिकारी उस समय मौजूद रहे, जब सीजेआई गवई प्रतिष्ठित समाज सुधारक और भारत के संविधान के मुख्य वास्तुकार को श्रद्धांजलि देने के लिए दादर में बीआर अंबेडकर के अंतिम संस्कार स्थल चैत्यभूमि गए थे।

'पाक की गोली का जवाब बीएसएफ ने गोले से दिया'

अमित शाह ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को जमकर सराहा

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को सीमा सुरक्षा बल अलंकरण समारोह को संबोधित किया। इस दौरान अमित शाह ने कहा कि जब यह निर्णय लिया गया कि एक सीमा पर एक बल सुरक्षा प्रदान करेगा, तो बीएसएफ को दो सबसे कठिन सीमाओं बांग्लादेश और पाकिस्तान बॉर्डर की रक्षा करने की जिम्मेदारी दी गई थी। आपकी क्षमताओं को देखते हुए आपने इसे बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित किया है। उन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' के दौरान बीएसएफ के शौर्य को भी सलाम किया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की हर गोली का जवाब बीएसएफ ने गोले से दिया।

कैसे विश्व में सर्वश्रेष्ठ बल बना जा सकता है, उसका उत्तम उदाहण बीएसएफ :

उन्होंने कहा कि 1965 से लेकर 2025 तक अपने कर्तव्य के पथ पर निडर होकर सर्वोच्च बलिदान की भावना के साथ चलते हुए 2,000 से ज्यादा जिन सीमा प्रहरियों ने अपना सर्वोच्च बलिदान दिया है, मैं पूरे राष्ट्र की ओर से उन्हें

प्रणाम करता हूं। देशभक्ति के आधार पर सभी कठिनाईयों को पार करके कैसे विश्व में सर्वश्रेष्ठ बल बना जा सकता है, उसका उत्तम उदाहण बीएसएफ है। केएफ रुस्तमजी बीएसएफ के संस्थापक और पहले महानिदेशक थे। यह दुनिया का सबसे बड़ा सीमा सुरक्षा बल है, जिसमें लगभग 2.75 लाख कर्मी पश्चिम में पाकिस्तान और पूर्व में बांग्लादेश के साथ भारतीय सीमाओं की रक्षा करने का काम करते हैं। बीएसएफ की स्थापना 1965 में हुई थी।

ऑपरेशन सिंदूर पर कही यह बड़ी बात :

अमित शाह ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर तब सफल हुआ, जब हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति, हमारी खुफिया एजेंसियों से सटीक जानकारी और सेना की मारक क्षमता का अद्भुत प्रदर्शन एक साथ आए। जब ये तीनों एक साथ आए तो ऑपरेशन सिंदूर बना। हमारा देश कई दशकों से पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का सामना कर रहा है।

पाकिस्तान ने कई बड़ी घटनाओं को वर्षों से अंजाम दिया, लेकिन उसे माकूल जवाब नहीं दिया गया। 2014 में नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बने, भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली सरकार बनी और पहला बड़ा हमला उरी में हमारे सैनिकों पर हुआ, उन्हें जिंदा जलाने का दुस्साहस किया और हमने उरी के तुरंत बाद सर्जिकल स्ट्राइक करके पहली बार आतंकियों के ठिकानों में घुसकर उन्हें मुंहतोड़ जवाब देने का काम किया। फिर पुलवामा में हमला हुआ, सीआरपीएफ के काफिले को निशाना बनाया गया।

राहुल ने फिर पूछे सवाल : धराशायी हुई विदेश नीति, भाजपा ने किया पलटवार

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने एक बार फिर विदेश मंत्री एस. जयशंकर से 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर कड़े सवाल किए। उन्होंने 'एक्स' पर लिखा, क्या जेजे बताएंगे-भारत को पाकिस्तान के साथ क्यों जोड़ दिया गया है? पाकिस्तान की निंदा करने में एक भी देश ने हमारा साथ क्यों नहीं दिया? ट्रंप को भारत और पाकिस्तान के बीच मध्यस्थता करने के लिए किसने कहा? भारत की विदेश नीति ध्वस्त हो गई है।

जवाब में भाजपा ने राहुल को निशान-ए-पाकिस्तान बताया। पार्टी ने कहा कि राहुल भारतीय सशस्त्र बलों की वीरता को कमतर आंकना बंद करें और चल रहे ऑपरेशन सिंदूर के बारे में गैर-जिम्मेदाराना टिप्पणी करके देश की सुरक्षा को खतरे में डालना बंद करें। राहुल

ने 17 मई को 'एक्स' पर एक वीडियो साझा किया। इसमें जयशंकर का बयान था। राहुल ने लिखा, हमारे हमले की शुरूआत में पाकिस्तान को सूचित करना एक अपराध था। विदेश मंत्री ने सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया है कि भारत सरकार ने ऐसा किया। 1. इसे किसने अधिकृत किया? 2. इसके परिणामस्वरूप हमारी वायुसेना ने कितने विमान खो दिए? इसके बाद 19 मई को राहुल ने फिर जयशंकर से सवाल किए। उन्होंने लिखा, विदेश मंत्री जयशंकर की चुप्पी सिर्फ बयानबाजी नहीं है- यह निंदनीय है। इसलिए मैं फिर से पूछूंगा- हमने कितने भारतीय विमान खो दिए, क्योंकि पाकिस्तान को पता था? यह कोई चूक नहीं थी। यह एक अपराध था। और देश को सच्चाई जानने का हक है। दिल्ली में होंडुरास दूतावास के उद्घाटन के बाद 15 मई को पत्रकारों से बात हुए जयशंकर ने कहा था, यह स्पष्ट है कि कौन गोलीबारी बंद करना चाहता था। हमने आतंकवादी ढांचे को नष्ट करके जो लक्ष्य निर्धारित किए थे, उन्हें हासिल कर लिया है।

फ्लाइट के टेक ऑफ-लैंडिंग के वक्त खिड़कियां बंद रहेंगी : फोटोग्राफी और वीडियो बनाना बैन

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। डिफेंस एरिया की सुरक्षा को देखते हुए भारत सरकार ने फ्लाइट के टेक ऑफ-लैंडिंग के वक्त खिड़कियां बंद रखने का आदेश दिया है। यह आदेश डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) की तरफ से जारी किया गया है।

आदेश के मुताबिक पैसेंजर्स के फोटो खींचने और वीडियो बनाने पर भी बैन रहेगा। यह नियम देश के उन 4 डिफेंस एयरपोर्ट पर लागू होगा, जिनका इस्तेमाल कमर्शियल फ्लाइट के लिए होता है। इसमें अमृतसर, जम्मू, श्रीनगर और जैसलमेर एयरपोर्ट शामिल है।

डीजीसीए ने एयरलाइंस, हेलीकॉप्टर और चार्टर्ड प्लेन ऑपरेटरों को निर्देश जारी किया है कि डिफेंस एयरफील्ड में आने और जाने वाली उड़ानों में पैसेंजर्स के बगल वाली सीटों की खिड़कियां तब तक बंद रहेंगी जब तक कि विमान टेकऑफ के दौरान 10,000 फीट की ऊंचाई तक नहीं पहुंच जाता या लैंडिंग के दौरान नीचे नहीं उतर जाता। >14

'जी परमेश्वर के ठिकानों पर ईडी की छापेमारी कांग्रेस की गुटबाजी का नतीजा'

बेंगलूरू, 23 मई (एजेंसियां)। कर्नाटक के गृहमंत्री जी परमेश्वर से जुड़े ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय की छापेमारी के मामले में राजनीति तेज हो गई है। अब भाजपा के कई नेताओं ने इसे लेकर कांग्रेस की कर्नाटक इकाई को ही आड़े हाथों ले लिया है। जहां केंद्रीय मंत्री प्रहलाद जोशी ने दावा किया है कि जी परमेश्वर के ठिकानों पर ईडी की कार्रवाई कांग्रेस की कर्नाटक इकाई के भीतर गुटबाजी का नतीजा है। वहीं, केंद्रीय मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने छापेमारी को लेकर कर्नाटक सरकार का मजाक उड़ाया। साथ ही कहा कि उन्हें केवल अपने कांग्रेस मित्रों के कारण समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। प्रह्लाद जोशी ने निशाना साधते हुए कहा कि कर्नाटक में सत्तारूढ़ कांग्रेस के एक गुट ने ईडी को सारी जानकारी मुहैया कराई थी, जिसके कारण परमेश्वर से जुड़े संस्थानों पर छापेमारी की गई।

केंद्र और उपराज्यपाल के खिलाफ मामलों को वापस लेने की अनुमति

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने आप सरकार के कार्यकाल में केंद्र और उपराज्यपाल के खिलाफ दायर मामलों को वापस लेने की भाजपा सरकार को अनुमति दी है। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को दिल्ली सरकार को उन सात मामलों को वापस लेने की अनुमति दे दी, जो पूर्ववर्ती आम आदमी पार्टी (आप) सरकार ने केंद्र सरकार और उपराज्यपाल के खिलाफ दायर किए थे। ये मामले राष्ट्रीय राजधानी में सेवाओं के नियंत्रण सहित कई मुद्दों से संबंधित थे। मुख्य न्यायाधीश बीआर गवई और न्यायमूर्ति अगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने भाजपा नेतृत्व वाली सरकार की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ऐश्वर्य भाटी की दलीलों पर विचार करते हुए इस याचिका को मंजूरी दी। सुनवाई के दौरान एक वकील ने आप सरकार के कार्यकाल के दौरान नियोजित अधिवक्ताओं की लंबित फीस के भुगतान का मुद्दा उठाया।

'कोटा में ही छात्र क्यों मर रहे?'

सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान सरकार को फटकारा

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को राजस्थान सरकार को कोटा में छात्रों द्वारा आत्महत्या के मामले बढ़ने पर जमकर फटकारा। सुप्रीम कोर्ट ने स्थिति को बेहद गंभीर बताया। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस आर महादेवन की पीठ ने कहा कि इस साल अब तक कोटा में 14 छात्र-छात्राएं आत्महत्या कर चुके हैं।

पीठ ने पूछा-कोटा में ही क्यों मर रहे छात्र :

पीठ ने राजस्थान सरकार के प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि आप बतौर राज्य क्या कर रहे हैं? क्यों कोटा में ही ये बच्चे आत्महत्या कर रहे हैं? क्या बतौर राज्य आप इस बारे में सोच भी नहीं रहे हैं? इस पर राजस्थान सरकार की तरफ से पेश हुए वकील ने बताया कि कोटा में छात्रों द्वारा आत्महत्या के मामलों की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया गया था। बीती 4 मई को आईआईटी खड़गपुर में पढ़ने वाले 22 वर्षीय छात्र ने अपने हॉस्टल के कमरे में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली थी। सुप्रीम कोर्ट ने इसी मामले पर सुनवाई करते हुए उक्त टिप्पणी की।

पीठ ने नीट की तैयारी कर रही एक छात्रा के आत्महत्या मामले पर भी सुनवाई की। छात्रा कोटा में अपने कमरे में फांसी के फंदे पर झूलती मिली थी। छात्रा अपने माता-पिता के साथ रह रही थी। अदालत ने आईआईटी खड़गपुर के छात्र की आत्महत्या के मामले में एफआईआर चार दिन की से देरी से दर्ज होने पर भी नाराजगी जाहिर की। सर्वोच्च अदालत ने कहा कि इन चीजों को बिल्कुल भी हल्के में मत लीजिए, ये गंभीर चीजें हैं।

भारत एफएटीएफ के सामने पाक को फिर ग्रे सूची में डालने के लिए मजबूती से मामला उठाएगा

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। भारत एफएटीएफ के समक्ष पाकिस्तान को धन शोधन और आतंकवाद के वित्तपोषण रोधी नियमों का पालन करने में विफल रहने के कारण उसे अपनी "ग्रे सूची" में वापस लाने के लिए मजबूत मामला रखेगा। एक सरकारी सूत्र यह जानकारी दी है।

जब सूत्र से पूछा गया कि क्या भारत वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (एफएटीएफ) के समक्ष पाकिस्तान को ग्रे सूची में रखने का मामला रखेगा, तो उन्होंने कहा, हम इस मुद्दे को (एफएटीएफ के समक्ष) उठाएंगे। 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकवादी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव बढ़ गया है, जिसमें 26 नागरिक मारे गए थे। भारत का मानना है कि पाकिस्तान अपने क्षेत्र से उत्पन्न आतंकवाद पर कार्रवाई करने में विफल रहा है और वह बहुपक्षीय एजेंसियों से प्राप्त धनराशि को हथियार और गोला-बारूद खरीदने में लगा रहा है। जो देश धन शोधन, आतंकवादी वित्तपोषण और प्रसार वित्तपोषण का मुकाबला करने के लिए अपने शासन में रणनीतिक कमियों को दूर करने में विफल रहते हैं, और जिन पर कड़ी निगरानी रखी जाती है, उन्हें एफएटीएफ की ग्रे सूची में रखा जाता है। जब एफएटीएफ किसी क्षेत्र को को बढ़ी हुई निगरानी के अधीन रखता है, तो इसका अर्थ है कि उस देश ने निर्धारित समय-सीमा के भीतर पहचानी गई रणनीतिक कमियों को शीघ्रता से हल करने के लिए प्रतिबद्धता दिखाई है और अब उस पर बढ़ी हुई निगरानी लागू होगी। एफएटीएफ, जो एक निर्णय लेने वाली संस्था है की पूर्ण बैठक साल में तीन बार- फरवरी, जून और अक्टूबर में होती है।

'भारतीय सेना की वीरता को कम करके न आंकें'

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने शुक्रवार को विपक्ष के नेता राहुल गांधी पर निशाना साधा। पार्टी ने कहा कि वह ऑपरेशन सिंदूर पर गैरजिम्मेदाराना टिप्पणी करके भारतीय सशस्त्र बलों की बहादुरी को कमतर करके आंकना और देश की सुरक्षा को खतरे में न डालें। पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता गौरव भाटिया ने राहुल गांधी को 'निशान-ए-पाकिस्तान' बताते हुए आरोप लगाया कि पाकिस्तान कांग्रेस नेता के बयान का इस्तेमाल भारत को बदनाम करने के लिए के लिए कर रहा है। भाटिया ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए कहा, राहुल गांधी, आपको तय करना होगा कि आप किसके पक्ष में हैं। क्या आप भारत के विपक्ष के नेता हैं या निशान-ए-पाकिस्तान? भाजपा की ओर से यह बयान ऐसे समय में सामने आया है, जब राहुल गांधी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भारत की छवि को नुकसान पहुंचाने का आरोप लगाया है।

मंत्री विजय शाह ने तीसरी बार मांगी माफी

भोपाल, 23 मई (एजेंसियां)। सेना की अधिकारी कर्नल सोफिया कुरैशी को आतंकियों की बहन बताने वाले एमपी के मंत्री कुंवर विजय शाह ने एक बार फिर माफी मांगी है।

उन्होंने कहा- ये मेरी भाषाई भूल थी। इसके लिए मैं बहन सोफिया कुरैशी और देशवासियों से माफी मांगता हूं। मंत्री विजय शाह ने शुक्रवार को एक वीडियो जारी किया है। जिसमें उन्होंने कहा है कि किसी को ठेस पहुंचाना मेरा उद्देश्य नहीं था। जय हिंद, पिछले दिनों पहलगाम में हुए जघन्य हत्याकांड से मन दुखी और विचलित था। मेरा राष्ट्र के प्रति अपार प्रेम और भारतीय सेना के प्रति आदर और सम्मान हमेशा रहा है। मेरे द्वारा कहे गए शब्दों से समुदाय धर्म और देशवासियों को दुख पहुंचा है, यह मेरी भाषाई भूल थी। मेरा आशय किसी भी धर्म जाति या समुदाय को ठेस पहुंचाना या आहत करना नहीं था।

'जाति जनगणना को लेकर निडर होकर जनता के बीच जाएं'

> खड़गे की कांग्रेस कार्यकर्ताओं से अपील

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। सामाजिक न्याय पर आयोजित कांग्रेस प्रवक्ताओं की कार्यशाला को संबोधित करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि जाति जनगणना को लेकर हमारी जिम्मेदारी है कि हम तथ्यों के साथ, संवेदनशीलता के साथ और निडर होकर जनता के बीच जाएं। खड़गे ने कहा कि यह कार्यशाला केवल एक कार्यक्रम नहीं है, यह हमारे विचार और संघर्ष की निरंतरता है।

आज जब देश जातीय न्याय की बात कर रहा है, तब कांग्रेस पार्टी का यह दायित्व बनता है कि वह इस विमर्श को दिशा दे, उसे नारे से नीति तक ले जाए और 'जितनी आबादी, उतना हक' को केवल एक नारा नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय संकल्प बनाए। हम सभी जानते हैं कि जातिगत जनगणना का मुद्दा कोई नया नहीं है। कांग्रेस पार्टी ने इसे लगातार उठाया है, हमारे घोषणा पत्रों में, संसद में, सड़कों पर और हर उस मंच पर जहां सामाजिक न्याय की बात होनी चाहिए। मैंने स्वयं अप्रैल 2023 में प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर यह मांग दोहराई थी कि जाति जनगणना को तत्काल शुरू किया जाए। उस पत्र में मैंने साफ कहा था, जब तक हमारे पास सही आंकड़े नहीं होंगे, तब तक कोई भी सरकार यह दावा नहीं कर सकती कि वह सबको न्याय दिला रही है।

उन्होंने कहा कि आज हमें यह पूछना है, ओबीसी, दलित और आदिवासी समुदायों की देश के सत्ता-संरचनाओं में भागीदारी क्या है? क्या वे मीडिया में, नौकरशाही में, न्यायपालिका में, कॉर्पोरेट सेक्टर में और उच्च शिक्षा संस्थानों में अपनी आबादी के अनुपात में प्रतिनिधित्व रखते हैं? अगर नहीं, तो इसका कारण क्या है? और, समाधान क्या है? इसका समाधान है, सच्चाई को सामने लाना, आंकड़ों को सार्वजनिक करना और फिर नीतियों का पुनर्निर्माण करना। यही कारण है कि जाति जनगणना को हम केवल एक आंकड़ों की कवायद नहीं मानते, बल्कि यह भारतीय लोकतंत्र का नैतिक दायित्व है।

कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि हमें यह भी स्पष्ट रूप से मांग करनी है कि संविधान के अनुच्छेद 15(5) को तुरंत लागू किया जाए, जिससे ओबीसी, दलित और आदिवासी छात्रों को निजी शैक्षणिक संस्थानों में आरक्षण मिले। आज जब शिक्षा का बड़ा हिस्सा निजी क्षेत्र में केंद्रित हो गया है, तब इन समुदायों को उस पहुंच से वंचित रखना एक प्रकार का शोषण है।

विमान में चीख-पुकार, फिर भी पाक ने नहीं दी परमिशन

टर्बुलेंस में फंसी इंडिगो फ्लाइट की श्रीनगर में इमरजेंसी लैंडिंग, 224 पैसेंजर थे सवार

नई दिल्ली/मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। दिल्ली से श्रीनगर जा रही इंडिगो की एक फ्लाइट 21 मई को ओलावृष्टि के कारण भीषण टर्बुलेंस (हवा में झटकों) की चपेट में आ गई थी। इस दौरान पायलट ने पाकिस्तान से उसका एयरस्पेस इस्तेमाल करने की इजाजत मांगी थी। हालांकि, पाकिस्तान ने मना कर दिया।

न्यूज एजेंसी ने 22 मई को सूत्रों के हवाले से बताया कि इंडिगो फ्लाइट जब अमृतसर के ऊपर से गुजर रही थी, तब पायलट ने हल्का टर्बुलेंस महसूस किया। उन्होंने लाहौर एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) से कॉन्टैक्ट किया और खराब मौसम से बचने के लिए पाकिस्तान के एयरस्पेस में घुसने की परमिशन मांगी।

लाहौर एटीसी ने पायलट को साफ मना कर दिया, जिसके कारण फ्लाइट को अपने तय रूट पर आगे बढ़ना पड़ा। आगे जाकर फ्लाइट गंभीर टर्बुलेंस की चपेट में आ गई। फ्लाइट जोर से हिलने-डुलने लगी। फ्लाइट में 227 लोग सवार थे। तेज झटकों के कारण सभी चीखने-चिल्लाने लगे थे।

पायलट ने श्रीनगर एटीसी को जानकारी दी और फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग कराई। लैंडिंग के बाद देखा गया कि फ्लाइट का अगला हिस्सा (नोज कोन) टूट गया था। सोशल मीडिया पर फ्लाइट के भीतर के कई वीडियो सामने आए हैं, जिनमें लोग अपनी जान के लिए प्रार्थना करते नजर आ रहे हैं। >14

घुसपैठियों पर एक्शन

दिल्ली पुलिस ने 121 अवैध बांग्लादेशियों को पकड़ा, बड़े सिंडिकेट का शक: किया जाएगा डिपोर्ट

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। राजधानी दिल्ली में अवैध घुसपैठियों के खिलाफ पुलिस का अभियान जारी है। दिल्ली पुलिस ने कथित तौर पर भारत में अवैध रूप से रह रहे 121 बांग्लादेशी नागरिकों को हिरासत में लिया है। जिन्हें डिपोर्ट किया जाएगा। दिल्ली में पकड़े गए अवैध बांग्लादेशियों को लेकर उनके निर्वासन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। जो विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय (एफआरआरओ) के माध्यम से की जा रही है। अधिकारियों ने जानकारी देते हुए बताया कि एक सप्ताह में अवैध प्रवासियों को हिरासत में लिया गया है। इन सभी से पूछताछ की जा रही है। कैसे भारत में एंट्री मिली और कैसे यहां तक पहुंचे हैं। वहीं इस मामले पर पुलिस उपायुक्त (बाहरी उत्तर) निधिन वलसन ने कहा कि देश में बाहर से आकर रह रहे अवैध प्रवेश और ठहरने में कथित रूप से शामिल एक संदिग्ध सिंडिकेट की जांच के लिए नरेला औद्योगिक क्षेत्र पुलिस स्टेशन में भी मामला दर्ज किया गया है। जिसकी जांच की जा रही है।

दिल्ली-एनसीआर में एक बार फिर आंधी और बारिश की संभावना

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में बीते दिनों भारी बारिश और आंधी-तूफान देखने को मिली। इस बीच अब भारतीय मौसम विभाग ने शुक्रवार को दिल्ली में और बारिश की भविष्यवाणी की और कहा कि शहर के आसमान में आंशिक रूप से बादल छाए रहेंगे। ऐसे में एक बार फिर शुक्रवार और शनिवार को बारिश और आंधी-तूफान आने की संभावना बन रही है। आईएमडी ने मौसम बुलेटिन में कहा, 25 और 26 मई को संभावित गरज और बिजली के साथ आंशिक रूप से बादल छाए रहने के साथ मौसम फिर से सामान्य हो जाएगा। 27 मई को बारिश या गरज के साथ बौछारें पड़ने का अनुमान है।

मुंबई में रेड अलर्ट

आईएमडी ने अगले कुछ दिनों के लिए महाराष्ट्र के कई जिलों में 'रेड' और 'ऑरेंज' अलर्ट जारी किया है और अत्यधिक भारी से बहुत भारी बारिश की भविष्यवाणी की है। मौसम कार्यालय ने 23 और 24 मई के लिए मुंबई के लिए ऑरेंज अलर्ट जारी किया है, जिसमें अलग-अलग स्थानों पर 50 से 60 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से तेज हवाएं चलने और गरज के साथ भारी से बहुत भारी बारिश की चेतावनी दी गई है। आईएमडी ने इस मौसमी गतिविधि के लिए दक्षिण कोंकण और गोवा के तट से दूर पूर्व-मध्य अरब सागर पर एक कम दबाव प्रणाली के बनने को जिम्मेदार ठहराया है। आईएमडी ने भविष्यवाणी की है कि इसके तेज होने से कोंकण और महाराष्ट्र के अन्य हिस्सों में तेज बारिश होने की संभावना है।

केरल में भारी बारिश की संभावना

केरल के अलग-अलग हिस्सों में भारी बारिश जारी है। इसके बावजूद आईएमडी ने अगले कुछ दिनों के लिए राज्य के विभिन्न जिलों में ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। आईएमडी ने कन्नूर और कासरगोड जिलों में 24 मई से 26 मई तक, कोझीकोड और वायनाड में 25 और 26 मई को तथा त्रिशूर, पलक्कड़ और मलप्पुरम में 26 मई को ऑरेंज अलर्ट जारी किया है। इसके अलावा, मौसम विभाग ने 23 मई को केरल के 12 जिलों में, 24 मई को नौ जिलों में, 25 मई को 10 जिलों में तथा 26 मई को 7 जिलों में येलो अलर्ट जारी किया है। आईएमडी ने कहा कि दिन के दौरान कोट्टायम और इडुक्की जिलों में एक या दो स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश और 40 किमी प्रति घंटे की गति से तेज हवाएं चलने की संभावना है।

पश्चिम बंगाल में भारी बारिश

आईएमडी के अपडेट के अनुसार, पश्चिम बंगाल के तटीय क्षेत्रों में 28 मई से भारी बारिश होने की संभावना है, क्योंकि बंगाल की खाड़ी के ऊपर कम दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है। मौसम विभाग ने कहा कि अनुकूल हवा के पैटर्न और बंगाल की खाड़ी से नमी के प्रवेश की उपस्थिति में, गुरुवार से अगले कुछ दिनों के दौरान पश्चिम बंगाल के कुछ जिलों में तेज हवाओं और तेज गरज के साथ बारिश होने की संभावना है। मौसम विभाग ने कहा कि 27 मई के आसपास पश्चिम-मध्य और उससे सटे उत्तरी बंगाल की खाड़ी में कम दबाव का क्षेत्र बनने की संभावना है, जो अगले दो दिनों में और अधिक स्पष्ट हो जाएगा।

तितलियों की जादुई दुनिया अब रालामंडल में! खुलने जा रहा अनोखा बटरफ्लाय पार्क

इंदौर, 23 मई (एजेंसियां)। इंदौर के रालामंडल अभयारण्य में आने वाले पर्यटकों को जल्द ही तितलियों की एक खूबसूरत दुनिया का अनुभव मिलने वाला है। शहर में चल रही दो दिवसीय वर्कशॉप के दौरान तितली पार्क की सौगात पर्यटकों को मिलने जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि पार्क के शुभारंभ से जुड़ी सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं और संभावना है कि होटल मेरिएट में चल रही वर्कशॉप के दौरान ही वरिष्ठ अधिकारी इसका वर्चुअल उद्घाटन करेंगे। करीब तीन साल पहले रालामंडल में 0.75 हेक्टेयर जमीन पर इस पार्क का निर्माण कार्य शुरू हुआ था, जो पिछले वर्ष के अंतिम माह तक पूर्ण हो गया था। इस प्रोजेक्ट पर अब तक करीब 10 लाख रुपये खर्च हो चुके हैं।

'बॉलीवुड सेलिब्रिटिज-क्रिकेटर्स देते हैं बढ़ावा'

सट्टेबाजी ऐप्स पर नकेल की तैयारी; एससी से बैन करने की मांग

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। देश में बढ़ते अवैध सट्टेबाजी ऐप्स पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने की मांग कर एक याचिका सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई है, जिसपर विचार करने पर सहमति जताई गई। याचिका दायर कर ऑनलाइन गेमिंग ऐप्स और फैंटेसी स्पोर्ट्स ऐप्स पर सख्त नियम और कानून बनाने की भी मांग की गई है। इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश सूर्यकांत औक न्यायमूर्ति एनके सिंह की पीठ ने केंद्र को नोटिस जारी कर जवाब मांगा है। हालांकि, अभी राज्य सरकारों को नोटिस जारी नहीं किया गया है। ऐप्स पर प्रतिबंध लगाने की मांग करने वाले याचिकाकर्ता ने खुद को 'एक प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता, मानवतावादी और ग्लोबल पीस इनिशिएटिव का अध्यक्ष, जो विश्व स्तर पर शांति और न्याय को बढ़ावा देने के लिए समर्पित है' बताया है। याचिकाकर्ता ने कहा कि यह जनहित याचिका (पीआईएल) दायर कर लाखों लोगों के हित में और अवैध सट्टेबाजी ऐप्स पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है। बता दें, इसी साल मार्च में तेलंगाना में 25 बॉलीवुड सेलिब्रिटिज, क्रिकेटरों और फेमस लोगों के खिलाफ सट्टेबाजी ऐप्स को बढ़ावा देने का मामला दर्ज हुआ था। याचिकाकर्ता ने इस मामले को भी हवाला अपनी याचिका में दिया है। इसके अलावा, तेलंगाना में 24 लोगों द्वारा आत्महत्या करने से संबंधित एक समाचार लेख का भी हवाला दिया गया है।

इसमें कहा गया है कि यह याचिका भारतीय युवाओं और कमजोर नागरिकों को अनियमित ऑनलाइन सट्टेबाजी और जुए के खतरों से बचाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय में दायर की गई थी। याचिकाकर्ता ने कहा कि यह याचिका फैंटेसी स्पोर्ट्स और कौशल-आधारित गेमिंग की आड़ में संचालित खतरनाक ऑनलाइन सट्टेबाजी बिजनेस से भारत के युवाओं की सुरक्षा के लिए दायर की गई थी। याचिका में कहा गया है, ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह की सट्टेबाजी स्वाभाविक रूप से भाग्य का खेल है, कौशल का नहीं। इसलिए यह जुए की श्रेणी में आता है, जो सार्वजनिक दुआ अधिनियम 1867 के तहत कई राज्यों में प्रतिबंधित है।

भगवंत मान सरकार का बड़ा एक्शन

जालंधर सेंट्रल से विधायक रमन अरोड़ा पर विजिलेंस की रेड

चंडीगढ़, 23 मई (एजेंसियां)। पंजाब की भगवंत मान सरकार ने भ्रष्टाचार के मामले में शुक्रवार को बड़ा एक्शन लिया। दरअसल, पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने आम आदमी पार्टी के जालंधर सेंट्रल से विधायक रमन अरोड़ा ठिकानों पर छापेमारी की है। जांच एजेंसी ने आप विधायक के खिलाफ ये कार्रवाई भ्रष्टाचार से जुड़े मामले में की है। आप विधायक रमन अरोड़ा पर आरोप है कि वह जालंधर नगर निगम के अफसरों के जरिए मासूम लोगों को झूठे नोटिस भिजवाता था। फिर पैसे लेकर उन नोटिसों को रफा दफा करवा देता था। पंजाब विजिलेंस विभाग ने रमन अरोड़ा के खिलाफ कार्रवाई जालंधर नगर निगम के पूर्व सहायक नगर नियोजक सुखदेव वशिष्ठ से जुड़े भ्रष्टाचार के मामले में की है। एटीपी सुखदेव वशिष्ठ को पिछले सप्ताह गिरफ्तार किया गया था। रमन अरोड़ा ने कथित तौर पर वशिष्ठ का इस्तेमाल फर्जी नोटिस जारी करने और पीड़ित व्यक्तियों से पैसे ऐंठने के लिए करता था।

ऑपरेशन सिंदूर: सांसदों के विदेश दौरे पर प्रियंका चतुर्वेदी बोलीं

'इसका उद्देश्य है कि भारत एकजुट है'

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान की तरफ से आतंकवाद को बढ़ावा देने के मुद्दे पर भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाक को एक्सपोज कर रहा है। सांसदों और अन्य वरिष्ठ जानकारों की टीम संयुक्त अरब अमीरात (यूएई), रूस और जापान पहुंच चुकी है। अन्य टीमें भी अलग-अलग देश जाने के लिए तैयार है। इस बीच उद्धव ठाकरे गुट की सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि हम पिछले तीन दशकों से पाकिस्तान से आने वाली परेशानियों से जूझ रहे हैं। शिवसेना यूबीटी की सांसद चतुर्वेदी ने कहा, "इस आउटरीच का उद्देश्य यह दिखाना है कि हम विपक्ष और सत्ताधारी पार्टी पाकिस्तानी आतंकवाद के खिलाफ एकजुट हैं। यह भारत की आवाज है।"

पाकिस्तान को जवाबदेह ठहराना होगा- प्रियंका चतुर्वेदी

उन्होंने कहा, "पहलगाम में जो हुआ। पिछले तीन दशकों से हम पाकिस्तान से आने वाली परेशानियों से जूझ रहे हैं। पाकिस्तान अपने आतंकवादियों को बढ़ावा दे रहा है, उन्हें बढ़ावा दे रहा है जो वैश्विक स्तर पर जाकर आतंकी हमले करते हैं। जब तक पाकिस्तान को जवाबदेह नहीं ठहराया जाता, तब तक हर देश असुरक्षित है।"आतंकियों ने जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हमला किया था। इस हमले में 26 लोगों की मौत हो गई थी। इसके बाद भारत ने बड़ी कार्रवाई करते हुए पाकिस्तान और पीओके में 9 आतंकी ठिकानों को ध्वस्त कर दिया। इस कार्रवाई में 100 से अधिक आतंकियों की मौत हुई है। इस बड़े ऑपरेशन को ऑपरेशन सिंदूर नाम दिया गया। इसके साथ ही भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान की साजिश को उजागर के लिए प्लान तैयार किया है।

नोएडा में 3 बिल्डर के ठिकानों पर ईडी रेड

दिल्ली-एनआरसी में 15 जगहों पर पहुंची टीम; खंगाल रही दस्तावेज

नोएडा, 23 मई (एजेंसियां)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने शुक्रवार को नोएडा में तीन बिल्डरों के ठिकानों पर छापेमारी की है। यह छापेमारी घर खरीदारों, निवेशकों से करीब 1200 करोड़ रुपये के गबन व फंड डायवर्सन को लेकर बताई जा रही है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, ईडी ने दिल्ली एनसीआर में 15 जगहों पर छापेमारी की है। मुंबई में भी कुछ ठिकानों पर छापेमारी है। ईडी की टीमें जेपी, गौर, गुलशन बिल्डर व सुरक्षा रियलिटी के ठिकाने व दस्तावेज खंगाल रही हैं। सेक्टर 128 में जेपी बिल्डर के मार्केटिंग ऑफिस पर एक टीम पहुंची हुई है। यहां पर दस्तावेज व कंप्यूटर खंगाले जा रहे हैं। मुख्य गेट को बंद कर दिया गया है। सिर्फ उन्हीं लोगों को आने जाने दिया जा रहा है जिनको टीम बुला रही है। अभी बरामदगी को लेकर आधिकारिक तौर पर कोई सूचना नहीं दी गई है। जांच अगले कुछ दिन तक जारी रहेगी।

राहुल गांधी करेंगे पुंछ का दौरा, पीड़ित परिवारों से करेंगे मुलाकात

जम्मू, 23 मई (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी शनिवार यानी 24 मई को जम्मू-कश्मीर के पुंछ इलाके का दौरा करेंगे। इस दौरान वो हालिया पाकिस्तानी गोलाबारी में मारे गए और प्रभावित लोगों के परिवारों से मुलाकात करेंगे। पार्टी नेता जयराम रमेश ने राहुल गांधी के दौरे की जानकारी दी। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में 22 अप्रैल को हमला हुआ था। इस हमले के बाद भी राहुल गांधी जम्मू-कश्मीर गए थे। इसी के बाद अब वो पुंछ में पाकिस्तान की तरफ से की गई गोलीबारी के बाद एक बार फिर इलाके का दौरा करने जा रहे हैं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने राहुल गांधी के दौरे की जानकारी देते हुए सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट किया। उन्होंने कहा, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी कल यानी 24 मई को पुंछ का दौरा करेंगे, जहां वो हाल ही में पाकिस्तान की गोलाबारी में मारे गए लोगों के परिजनों से मुलाकात करेंगे। उन्होंने आगे कहा, इससे पहले, 25 अप्रैल को राहुल गांधी श्रीनगर गए थे, जहां उन्होंने पहलगाम में हुए बर्बर आतंकी हमले में घायल लोगों और अन्य संबंधित पक्षों से मुलाकात की थी। उन्होंने उपराज्यपाल और मुख्यमंत्री से भी मुलाकात की थी।

"आतंकवाद को हराने के लिए एकजुट हो"

हमले के बाद पिछले महीने जम्मू-कश्मीर की अपनी यात्रा के दौरान, राहुल गांधी ने कहा था कि आतंकवादी हमले के पीछे की सोच देश के लोगों को विभाजित करने की थी और यह जरूरी है कि भारत आतंकवाद को हमेशा के लिए हराने के लिए एकजुट हो।

ऑपरेशन सिंदूर के बाद बौखलाया पाक

पाकिस्तान को आतंकवाद के खिलाफ सबक सिखाने के लिए भारत ने 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया था। इस ऑपरेशन के तहत भारत ने पाकिस्तान के 9 आतंकी ठिकानों पर हमला किया था और उनको तबाह कर दिया था। भारत के ऑपरेशन सिंदूर से पाकिस्तान बौखला गया था इसी के बाद पाकिस्तान ने एलओसी पर अंधाधुंध फायरिंग की थी। इस फायरिंग में सबसे ज्यादा गोलीबारी पुंछ में ही की गई थी। भारत के ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किए जाने के बाद पाकिस्तान से भी नाकाम जवाबी हमला किया गया। 8 मई से लेकर 10 मई दोनों देशों ने एक दूसरे पर मिसाइलें दागी। इस दौरान पुंछ में पाकिस्तान की तरफ से गोलाबारी की गई, मिसाइलों और ड्रोन हमलों में 27 लोग मारे गए और 70 से अधिक घायल हुए। हालांकि, 10 मई को दोनों देशों के बीच सीजफायर हुआ और दोनों तरफ से हमला रोक दिया गया।

गैंगरेप के 7 आरोपियों को कोर्ट ने दी जमानत निकाला विजय जुलूस, पूरे हावेरी जिले में आक्रोश

हावेरी, 23 मई (एजेंसियां)। कर्नाटक के हावेरी जिले से हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है।

साल 2024 के हनगल गैंगरेप मामले में 7 लोगों को कोर्ट से जमानत मिल गई है। इसके बाद आरोपियों ने विजय जुलूस निकाला है। आरोपियों की विजय जुलूस निकालने की घटना से पूरे हावेरी जिले में आक्रोश है। सोशियल मीडिया पर विजय जुलुस का वीडियो वायरल होने के बाद लोग उनकी रिहाई पर सवाल खड़े कर रहे हैं।

किस आधार पर मिली जमानत?

हनगल गैंगरेप मामले में गैंगरेप के आरोपियों ने रिहाई के बाद अक्की आलूर में बाइक और कारों के साथ विजय जुलुस निकाला। इस मामले में सात मुख्य आरोपियों को हावेरी सेशंस कोर्ट ने जमानत दे दी, क्योंकि पीड़िता आरोपियों की सुनिश्चित पहचान नहीं कर पाई।

क्या है पूरा केस?

गैंगरेप का यह मामला जनवरी 2024 का है, जब एक युवती ने सात लोगों पर गैंगरेप का आरोप लगाया था। आरोपी एक लॉज में जबरन घुसे थे और पीड़िता पर एक गैर मजहब के युवक के साथ रिश्ता रखने पर सवाल खड़ा किया था। पुलिस ने मोरल पुलिसिंग का केस कर आरोपियों को अरेस्ट कर लिया था। इसके बाद पीड़िता ने मजिस्ट्रेट के सामने दिए बयान में कहा था कि इन 7 आरोपियों ने उसके साथ गैंग रेप भी किया।

आरोपी होटल से उसे जबरन लेकर गए और पास के जंगलनुमा इलाके में उसके साथ गैंग रेप किया। इस बयान के बाद पुलिस ने गैंगरेप की धाराएं भी जोड़ दी थीं। कोर्ट ने इन आरोपियों को जमानत पर रिहा करने के आदेश दिये। आरोपियों की रिहाई और उसके बाद निकाले गए विजय जुलूस ने लोगों की भावनाओं को झकझोर दिया है, और कानून व्यवस्था पर कई सवाल खड़े कर दिए हैं। अक्की अलूर पुलिस में मामले का संज्ञान लेते हुए वीडियो सबूतों को अदालत में पेश करने और इस आधार पर उनकी जमानत को रद्द करने की प्रक्रिया की बात कही है।

दिल्ली एनसीआर में मिले कोविड 19 के 3 नए मामले, मरीजों को किया गया आईसोलेट

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। देश में एक बार फिर कोविड 19 की सुगबुगाहट देखने को मिल रही है। इस बीच हरियाणा के गुरुग्राम और फरीदाबाद में कोविड-19 के कम से कम तीन मामले सामने आए हैं। एक अधिकारी ने इसकी पुष्टि की। गुरुग्राम से कोरोना वायरस के दो और फरीदाबाद से एक मामला सामने आया है। बता दें कि गुरुग्राम में हाल ही में मुंबई से लौटी 31 वर्षीय महिला पॉजिटिव पाई गई है। इसके अलावा एक 62 वर्षीय बुजुर्ग भी संक्रमित पाए गए हैं, जिनका कोई ट्रैवल रिकॉर्ड नहीं है। दोनों मरीजों को फिलहाल आइसोलेट कर दिया गया है। इसके अलावा फरीदाबाद में 28 वर्षीय शख्स को कोविड पॉजिटव पाया गया है। बता दें कि लंबे वक्त से खांसी, जुकाम और बुखार से पीड़ित होने के बाद जब शख्स सफदरजंग अस्पताल में इलाज कराने गया तो वहां जांच में कोरोई संक्रमण की पुष्टि हुई। गुरुग्राम स्वास्थ्य विभाग के डॉ। जेपी राजलीवाल ने बताया, गुरुग्राम में दोनों मरीजों को होम आइसोलेशन में रखा गया है। स्वास्थ्य विभाग उन पर नजर रख रहा है। उन्हें अपने परिवार से दूर रहने की सलाह दी गई है। स्वास्थ्य विभाग उनके संपर्क में आए लोगों की पहचान कर रहा है, ताकि उनके सैंपल की भी जांच की जा सके।

फरीदाबाद मामले में स्वास्थ्य विभाग ने सफदरजंग अस्पताल प्रबंधन को पत्र लिखकर संक्रमित व्यक्ति के गले की लार के सैंपल उपलब्ध कराने को कहा है। फरीदाबाद जिला स्वास्थ्य विभाग के डॉ। रामभगत ने कहा, ₹रिपोर्ट आने के बाद कोरोना के वैरिएंट की पुष्टि की जाएगी। फिलहाल युवक और उसका पूरा परिवार स्वस्थ है। देश में कोविड-19 समेत श्वसन संबंधी वायरल बीमारियों की निगरानी के लिए एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी) और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) के माध्यम से एक मजबूत प्रणाली भी है।

भाषा के बाद कर्नाटक में अब बाहरी पर विवाद

तमन्ना भाटिया को ब्रांड एंबेसडर बनाने पर आई सरकार की सफाई

बेंगलूरू, 23 मई (एजेंसियां)। दक्षिण के राज्यों में भाषा को लेकर विवाद आए दिन गहराता रहा है। अभी पिछले ही दिनोंबेंगलुरु स्थित भारतीय स्टेट बैंक की मैनेजर का वहां के कस्टमर के साथ कन्नड़ में बात न करने को लेकर विवाद हुआ।अब मशहूर अदाकारा तमन्ना भाटिया को ब्रांड एंबेसडर बनाने को लेकर कर्नाटक में विवाद हो गया है। कर्नाटक के उद्योग मंत्री एमबी पाटिल ने कहा है कि कर्नाटक के उत्पादों का ब्रांड एंबेसडर भाटिया को बनाने से स्थानीय लोग नाराज हैं। एक प्रेस कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए पाटिल ने कहा कि मामला भाषा का नहीं, बल्कि काम के जरिए वैश्विक और राष्ट्रीय उपलब्धि हासिल करने का है। एमबी पाटिल ने कहा, "मैं एक एक ऐसा व्यक्ति हूं, जो कन्नड़ पहचान का बहुत सम्मान करता है।" उन्होंने सफाई दी कि भाटिया को ब्रांड एंबेसडर के रूप में चुना गया क्योंकि उनको करीब तीन करोड़, ठीक-ठीक कहा जाए तो 2 करोड़ 80 लाख फॉलोअर्स हैं। वही एकमात्र सही चयन थीं। क्योंकि रश्मिका मंदाना का दूसरी जगह करार था। जबकि पूजा हेगड़े और कियारा आडवाणी संभव नहीं थीं। साथ ही, दीपिका पादुकोण बजट में फिट नहीं होती। पाटिल ने आगे कहा कि कन्नड़ कलाकारों के लिए सम्मान होना चाहिए।

मंत्री ने सफाई में और क्या कहा

22 मई को तमन्ना भाटिया को कर्नाटक साबुन-डिटर्जेंट लिमिटेड (केएसडीएल) ने ब्रांड एंबेसडर चुना था। हालांकि, कर्नाटक सरकार के फैसले की कुछ हलकों में आलोचना हुई, कई लोगों ने सवाल किया कि एक कन्नड़ अदाकारा को इसके लिए क्यों नहीं चुना गया। अब सफाई देते हुए उद्योग मामलों के मंत्री एमबी पाटिल ने कहा है कि "अभिनेत्री की व्यापक अपील, मजबूत डिजिटल मौजूदगी और नौजवान पीढ़ी से जुड़ने की उनकी क्षमता को देखते हुए ये फैसला किया गया है" "मंत्री का कहना है कि हमारा लक्ष्य 2030 तक इन चीजों की बिक्री को 5 हजार करोड़ रुपये तक पहुंचाना है। इसी लिए एक मजबूत रणनीति के तहत उनको लिया गया है। दीपिका पादुकोण, रश्मिका मंदाना, पूजा हेगड़े और कियारा आडवाणी जैसी अन्य प्रमुख हस्तियों पर भी विचार किया गया पर आखिरकार भाटिया को चुना गया। बता दें तमन्ना 'वीवन' फिल्म में सिद्धार्थ मल्होत्रा के साथ स्क्रीन साझा करती नज़र आएंगी, जो 15 मई, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होने वाली है।

उदित राज को मायावती के समर्थकों से जान का खतरा

कोर्ट ने दिल्ली पुलिस को आंकलन करने के दिए निर्देश

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। दिल्ली हाईकोर्ट ने कांग्रेस नेता डॉ. उदित राज की ओर से दायर की गई याचिका पर दिल्ली पुलिस को खतरे की आशंका का आकलन करने का निर्देश दिया है।

याचिका में बहुजन समाज पार्टी प्रमुख मायावती के समर्थकों से जान और सुरक्षा को खतरा होने का आरोप लगाया गया है। उदित राज के वकील ने दलील दी कि उन्हें मायावती के समर्थकों से धमकियां मिल रही हैं। उन्होंने दिल्ली पुलिस से सुरक्षा मांगी, लेकिन किसी ने उन्हें सुरक्षा मुहैया नहीं कराई। जस्टिस रविन्द्र डुडेजा ने निर्देश दिया कि खतरे की जांच 2 महीने के भीतर की जाए। कोर्ट ने कहा कि सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए संबंधित एसएचओ और बीट अधिकारी को याचिकाकर्ता के साथ अपना संपर्क विवरण साझा करना होगा इसलिए बीट अधिकारी को निर्देश दिया गया कि वह कम से कम 2 महीने तक हर दिन शाम 7 बजे से पहले याचिकाकर्ता को फोन करें। वहीं, केंद्र सरकार की ओर से पेश वकील ने कहा कि रिट याचिका में उन्होंने आरोप लगाया है कि चूंकि वह विपक्षी पार्टी से हैं इसलिए दिल्ली पुलिस कुछ नहीं कर रही है। अब वे मीडिया में जाएंगे और कहेंगे कि हमने सरकार के खिलाफ आरोप लगाते हुए याचिका दायर की है और कोर्ट ने हमें सुरक्षा दी है। यह मूल एजेंडा है। इसपर जस्टिस डुडेजा ने कहा कि हमने आपको नोटिस भी जारी नहीं किया है। कोर्ट धमकियों का संज्ञान नहीं ले रहा है। हम केवल खतरे की आशंका के बारे में चिंतित हैं।

सुविचार: समय को सार्थक बनाओ अगर एक बार चला गया तो वापस नहीं आएगा

पलेरु सागर अंडर टनल का कार्य युद्ध स्तर पर जारी : पोंगुलेटी

मंत्री ने कार्यों का औचक निरीक्षण किया, दिए कई निर्देश

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। राज्य के राजस्व, आवास, सूचना और नागरिक संबंध मंत्री पोंगुलेटी श्रीनिवास रेड्डी ने अधिकारियों को पलारू में नागार्जुन सागर बाएं मुख्य नहर अंडर टनल (यूटी) का निर्माण कार्य युद्ध स्तर पर पूरा करने का निर्देश दिया है, जो खम्मम जिले में लगभग चार लाख एकड़ जमीन को सिंचाई का पानी प्रदान करता है। उन्होंने निर्देश दिए कि 10 जुलाई तक हर हाल में कार्य पूरा किया जाए तथा मानसून सीजन के लिए किसानों को पानी दिया जाए। शुक्रवार को उन्होंने कुसुमांची मंडल के जुज्जुलारावपेट में चल रहे पालेरू सागर नहर कार्य का औचक निरीक्षण किया। इस अवसर पर बोलते हुए मंत्री ने कहा कि पिछले वर्ष भारी बारिश के कारण, सितंबर में पलारू निर्वाचन क्षेत्र के कुसुमांची मंडल में जुज्जुलारावपेट के पास पलारू जलाशय के पास मुख्य नहर पर एक अंडर-टनल (यूटी) बह गई थी। किसानों को कोई परेशानी न हो इस विचार से उस समय सिंचाई जल उपलब्ध कराने के लिए अस्थायी व्यवस्था की गई थी। इस नहर की मरम्मत का कार्य 14.20 करोड़ रुपये की लागत से स्थायी आधार पर शुरू कर दिया गया है। हम इस नहर की मरम्मत का काम पूरा करेंगे, जो खम्मम जिले में कृषि क्षेत्र की जीवन रेखा है, और सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराएंगे। उन्होंने कहा कि इससे खम्मम जिले में लगभग चार लाख एकड़ भूमि को सिंचाई का पानी मिलेगा, जबकि अकेले पलेरू निर्वाचन क्षेत्र में 1.33 लाख एकड़ भूमि को सिंचाई का पानी मिलेगा। बरसात के मौसम को ध्यान में रखते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि यदि आवश्यक हो तो सर्वोच्च प्राथमिकता के क्रम में प्रतिदिन दो शिफ्टों में कार्य कराएं तथा निर्माण कार्य समय सीमा के भीतर पूरा करें।

केटीआर ने की टीपीसीसी प्रमुख की सुप्रीम कोर्ट पर टिप्पणी की निंदा

न्याय पालिका के प्रति कांग्रेस के सम्मान पर उठाया सवाल

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव ने पलामुरु-रंगारेड्डी लिफ्ट सिंचाई योजना मामले में विशेष अनुमति याचिका को सुप्रीम कोर्ट द्वारा खारिज किए जाने के बाद टीपीसीसी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ द्वारा की गई टिप्पणियों की निंदा की है। रामा राव ने इस टिप्पणी को बेहद भयावह बताते हुए कहा कि कांग्रेस ने एक बार फिर न्यायपालिका के प्रति अपनी उपेक्षा दिखाई है। उन्होंने कहा कि यह न केवल सर्वोच्च न्यायालय बल्कि भारत के संविधान का भी अपमान है। उन्होंने कांग्रेस पर राजनीतिक लाभ के लिए न्यायिक फैसलों पर बार-बार संदेह जताने का आरोप लगाया और कांचा गाचीबोवली वन मुद्दे और पलामुरु-रंगारेड्डी परियोजना मामले का उदाहरण दिया।

पूर्व मंत्री ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर सीधा निशाना साधते हुए उनकी न्याय यात्राओं की ईमानदारी पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी जी को यह तय करना चाहिए कि

उनकी पार्टी अदालत के फ़ैसलों का सम्मान करना चाहती है या नहीं। जब उनके नेताओं में देश की न्यायिक व्यवस्था के प्रति ज़रा भी सम्मान नहीं है, तो वे संविधान की प्रति लेकर 'न्याय यात्रा' नहीं कर सकते।

महेश कुमार गौड़ पर निशाना साधते हुए रामा राव ने पूछा कि अगर नेशनल हेराल्ड मामले में सोनिया गांधी और राहुल गांधी के पक्ष में कोर्ट का फैसला आता तो क्या कांग्रेस उसे चुनौती देती? उन्होंने कहा, 'अगर कोर्ट उनके खिलाफ फैसला देता है तो वे रोते हैं। अगर कोर्ट उनके पक्ष में फैसला देता है तो वे जश्न मनाते हैं। यह दोहरा मापदंड खतरनाक है।

तेलंगाना सरकार के अनुरोध पर हैदराबाद को 2,000 इलेक्ट्रिक बसें आवंटित : पोन्नम प्रभाकर

परिवहन मंत्री ने केंद्रीय मंत्री कुमारस्वामी को धन्यवाद दिया

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के परिवहन मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत हैदराबाद को दो हजार इलेक्ट्रिक बसें आवंटित करने की घोषणा के लिए केंद्रीय मंत्री कुमारस्वामी को धन्यवाद दिया।

तेलंगाना सरकार दिन-प्रतिदिन बढ़ते प्रदूषण को कम करने के लिए पहले ही ईवी नीति ला चुकी है और 100 प्रतिशत कर छूट प्रदान कर रही है। इसके अलावा, उन्होंने कहा कि सरकार ने पहले ही हैदराबाद शहर में ओआरआर के भीतर चलने वाली आरटीसी बसों को 2,800 इलेक्ट्रिक बसों से बदलने का फैसला किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने मंत्री उत्तम कुमार रेड्डी के साथ पहले केंद्रीय मंत्री कुमारस्वामी से मुलाकात की थी और उनसे इलेक्ट्रिक बसों के लिए केंद्र सरकार के साथ सहयोग करने का अनुरोध किया था। मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने इस घोषणा पर प्रसन्नता व्यक्त की कि प्रधानमंत्री तेलंगाना सरकार के अनुरोध को ध्यान में रखते हुए इस अभियान योजना के

तहत हैदराबाद शहर को दो हजार बसें आवंटित करेंगे। उन्होंने शेष 800 इलेक्ट्रिक बसें भी आवंटित करने की अपील की।

इसी क्रम में करीमनगर में एक मीडिया सम्मेलन में मंत्री पोन्नम प्रभाकर ने कहा कि हम शुरू से ही यह कहते आ रहे हैं कि भाजपा बीआरएस अलग नहीं है। वे दिल्ली की दोस्ती गली के पहलवानों की तरह काम कर रहे हैं।

कविता द्वारा लिखा गया पत्र इसका आधार है।भाजपा नेतृत्व को भी जवाब देना चाहिए। भाजपा के साथ समझौता हो गया है। दूसरे दिन, बीआरएस ने कहा कि अगर भाजपा हैदराबाद स्थानीय निकाय चुनावों में अपना नामांकन दाखिल करती है तो वह उसका समर्थन करेगी। भाजपा में बीआरएस विरोधी लोगों ने, बीआरएस में भाजपा विरोधी लोगों ने ऐसा अवसर नहीं दिया, उनके गुप्त समझौते को लागू नहीं किया गया। यह सिर्फ एक दिन की बात नहीं थी, उन्होंने संसदीय चुनावों में पार्टी को भाजपा के सामने समर्पित कर दिया था। अगर हम उस दिन इस बारे में बात करते तो वे राजनीतिक आलोचना करते। उन्होंने आरोप लगाया कि जब बंडी संजय भाजपा अध्यक्ष थे, तो बीआरएस-भाजपा राजनीतिक समझौते के अनुसार, केसीआर के निर्देश पर ही किशन रेड्डी अध्यक्ष बने थे। क्या किशन रेड्डी केसीआर द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रपति नहीं हैं? केसीआर को भाजपा को जवाब देना चाहिए। यदि राष्ट्रीय बजट में तेलंगाना को एक भी रुपया नहीं दिया गया, यदि विभाजन के वादों को लागू नहीं किया गया, और यदि सिलेरू परियोजना को छीन लिया गया, तो आप चुप क्यों हैं? राज्य के लोगों को बताया जाना चाहिए।

किसानों ने किया रास्ता रोको प्रदर्शन

जगतियाल, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। सरकार से धान की खरीद में तेजी लाने की मांग को लेकर किसानों ने शुक्रवार को जगतियाल शहरी मंडल के गोपालरावपेट में रास्ता रोको प्रदर्शन किया। किसानों के सड़क पर बैठ जाने से जगतियाल-धर्मपुरी मुख्य मार्ग पर वाहनों का आवागमन ठप हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और यातायात को अन्य रास्तों से डायवर्ट किया।

आंदोलनकारी लोगों ने धान की खरीद में देरी के लिए सरकार को दोषी ठहराया। उन्होंने आरोप लगाया कि बेमौसम बारिश के कारण फसल तो भीग रही है, लेकिन सरकारी मशीनरी को किसानों की समस्याओं की कोई परवाह नहीं है।

मदिगा समुदाय के विधायकों ने की तेलंगाना मंत्रिमंडल में स्थान की मांग

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। पिछड़ी जातियों और अन्य समुदायों के बाद, मडिगा समुदाय के विधायकों ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) से आगामी मंत्रिमंडल विस्तार में समुदाय से एक मंत्री नियुक्त करने का आग्रह किया है। शुक्रवार को एआईसीसी प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे को लिखे पत्र में मदिगा समुदाय के विधायकों ने चेवेल्ला घोषणा और तेलंगाना विधानसभा द्वारा पारित एससी वर्गीकरण विधेयक की याद दिलाई। मंडुला सैमुअल (थुंगतुर्थी), वेमुला वीरेशम (नाकरेकल), कव्वमपल्ली सत्यनारायण (मानकोंदूर), अदलुरी लक्ष्मण (धर्मपुरी) और थोटा लक्ष्मीकांत राव (जुक्कल) सहित पांच विधायकों ने कहा कि तेलंगाना में एससी आबादी का लगभग दो-तिहाई हिस्सा होने के बावजूद, प्रमुख पदों पर समुदाय का प्रतिनिधित्व न्यूनतम है। उन्होंने जोर दिया कि विभागों के मौजूदा आवंटन में, उपमुख्यमंत्री और स्पीकर पद माला समुदाय के सदस्यों के पास थे। केवल एक कैबिनेट पद मडिगा उप जाति को आवंटित किया गया है, जो अनुसूचित जाति की आबादी का एक प्रतिशत प्रतिनिधित्व करता है।

मणिकोंडा आरटीए ने फैंसी नंबरों की बिक्री से कमाए 46.10 लाख रुपये

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकरण (आरटीए) ने गुरुवार को मणिकोंडा कार्यालय में फैंसी वाहन नंबर प्लेटों की नीलामी के जरिए 46.10 लाख रुपये की प्रभावशाली राशि जुटाई। आरटीए अधिकारियों के अनुसार, पंजीकरण संख्या नीलामी के दौरान कई उच्च मूल्य वाले नंबरों को अच्छी रकम प्राप्त हुई। शीर्ष बोलियों में सबसे ऊंची बोली 'टीजी 07 एए 9999' नंबर प्लेट के लिए लगी, जो 15,01,999 रुपये में बिकी और इसे सोफस इंफ्रा कंपनी ने अपने नाम कर लिया।

हैदराबाद में फैंसी नंबर प्लेट की नीलामी के लिए अन्य बोलियों में 'टीजी 07 एबी 0009' के लिए एपिटोम प्रोजेक्ट्स द्वारा 8,10,000 रुपये का दावा किया गया, तथा 'टीजी 07 एबी 0099' के लिए लीड स्पेस द्वारा 2,75,000 रुपये की बोली लगाई गई। व्यक्तिगत पंजीकरण नंबरों की मांग लगातार बढ़ रही है, कार मालिक कई तरह की पसंद जाहिर कर रहे हैं।

डलास में बीआरएस रजत जयंती समारोह की तैयारियां जोरों पर

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। अमेरिका के डलास में डीआर पेपर एरिना में 1 जून को बीआरएस के भव्य रजत जयंती समारोह की तैयारियां जोरों पर हैं। इस कार्यक्रम में पिछले 25 वर्षों में पार्टी की यात्रा और उपलब्धियों को याद किया जाएगा। डलास स्थित उद्यमी अनिल ग्रांधी के निवास पर आयोजित एक तैयारी बैठक में, बीआरएस एनआरआई वैश्विक समन्वयक महेश बिगाला और बीआरएस एनआरआई यूएसए इकाई सलाहकार बोर्ड के अध्यक्ष थन्नेरू महेश, दयाकर पुसुकुरी, सतीश (एटीए), वामसी रेड्डी (टीटीए) और राज प्रधाल सहित सामुदायिक नेताओं ने इस आयोजन को सफल बनाने के लिए पूर्ण समर्थन का वचन दिया।

महेश बिगाला ने बताया कि बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव ने मुख्य अतिथि के तौर पर कार्यक्रम में शामिल होने की पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि हजारों पंजीकरण पहले ही हो चुके हैं। डलास और अमेरिका के अन्य हिस्सों में रहने वाले तेलुगु भाषी एनआरआई केटी रामाराव का स्वागत करने और बीआरएस की विरासत को प्रदर्शित करने के लिए तैयार हैं। थानेरू महेश ने कहा कि यह बैठक बीआरएस की वैश्विक पहुंच में मील का पत्थर साबित होगी।

राहुल गांधी के विजन और कांग्रेस की नीतियों का प्रचार-प्रसार करें : श्रीधर बाबू

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। आईटी और उद्योग मंत्री दुदिल्ला श्रीधर बाबू ने युवा कांग्रेस नेताओं से आग्रह किया है कि वे राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के तानाशाही शासन का मुकाबला करने के लिए राहुल गांधी की विचारधारा और कांग्रेस पार्टी के सिद्धांतों को जनता तक पहुंचाएं। मंत्री ने शुक्रवार को मेडचल-मलकाजगिरी जिले के कीसरा में बाल विकास केंद्र में तेलंगाना युवा कांग्रेस अध्यक्ष जक्किडी शिव चरण रेड्डी के नेतृत्व में आयोजित "व्हाइट टी-शर्ट" प्रशिक्षण शिविर के दौरे के दौरान ये टिप्पणियां कीं। युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं को दिशा और प्रेरणा प्रदान करते हुए श्रीधर बाबू ने राहुल गांधी द्वारा शुरू किए गए "व्हाइट टी-शर्ट" आंदोलन के महत्व पर जोर दिया और इसे एक गहन और दूरदर्शी अभियान बताया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि सफेद टी-शर्ट पांच मार्गदर्शक मूल्यों का प्रतीक है : करुणा, एकता, अहिंसा, समानता और समावेशी प्रगति। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि युवा कांग्रेस कांग्रेस पार्टी की रीढ़ है और देश के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में सक्षम एक शक्तिशाली ताकत के रूप में उभरी है। इस भावना से प्रेरित होकर, श्रीधर बाबू ने कार्यकर्ताओं से कांग्रेस पार्टी को केंद्र में सत्ता में वापस लाने और राहुल गांधी को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में देखने के लिए ईमानदारी और समर्पण के साथ काम करने का आह्वान किया। इस कार्यक्रम में मेडचल-मलकाजगिरी डीसीसी अध्यक्ष हरिवर्धन रेड्डी, टीपीसीसी उपाध्यक्ष वज्रेश यादव, राज्य युवा कांग्रेस प्रभारी सैयद खालिद, राष्ट्रीय युवा कांग्रेस सचिव श्रवण राव और नितेश कुमार सहित अन्य नेता भी शामिल हुए।

तृतीया फाइन ज्वैलरी के निदेशक के खिलाफ शिकायत

निवेशकों से धोखाधड़ी करने का आरोप

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तृतीया फाइन ज्वैलरी के निदेशक कांथी दत्त थोनांगी (25) के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई गई है, जिसमें आरोप लगाया गया है कि उन्होंने निवेशकों से कई लाख रुपये की धोखाधड़ी की है। जानकारी के अनुसार, कांथी दत्त ने बंजारा हिल्स रोड नंबर 14 पर स्थित अपने उद्यम नाओमी पेटिसरी एंड बिस्ट्रो में कथित तौर पर अच्छे रिटर्न का वादा किया था और 2024 में लगभग 60 लाख रुपये की रकम एकत्र की थी। हालांकि, उद्यम शुरू करने के छह महीने के भीतर ही उन्होंने इसे अचानक बंद कर दिया। शिकायत के आधार पर बंजारा हिल्स पुलिस जांच कर रही है।

इससे पहले, दिसंबर 2024 में, जुबली हिल्स पुलिस ने कांथी दत्त को निवेशकों को उनके निवेश पर भारी मुनाफे का वादा करके धोखा देने के आरोप में गिरफ्तार किया था। हालांकि, जैसे ही पैसा आया, उसने धन का दुरूपयोग किया। अधिकारियों ने कहा कि उसने निदेशकों को उनके पदों से हटाने, उनके शेयरों को स्थानांतरित करने और अंततः वित्तीय घाटे का हवाला देते हुए कंपनी को भंग करने के लिए कथित तौर पर जाली दस्तावेज भी बनाए। इसके अलावा, साइबराबाद और हैदराबाद पुलिस आयुक्तालयों में कांथी दत्त, जो दक्षिण कथा हॉस्पिटैलिटी और नाओमी पेटिसरी एंड बिस्ट्रो के निदेशक भी हैं, के खिलाफ चार मामले दर्ज किए गए हैं, जिनमें एक हिट-एंड-रन मामला भी शामिल है, जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई थी।

बीएनएस के तहत आज तक 1,37,644 मामले दर्ज किए गए : डॉ. जितेंद्र

डीजीपी ने नए आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन पर समीक्षा बैठक की

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। पुलिस महानिदेशक, डॉ.जितेंद्र ने तेलंगाना राज्य में नए आपराधिक कानूनों (एनसीएल) के कार्यान्वयन पर एक समीक्षा बैठक की। 1 जुलाई, 2024 को तेलंगाना में नए आपराधिक कानून लागू किए गए और सुचारू रोलआउट सुनिश्चित करने के लिए एक उचित राज्य संक्रमण प्रबंधन योजना शुरू की गई। उसी के हिस्से के रूप में रोलआउट के समय ही कार्य किए गए। 47 मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) से युक्त एक डाइजेस्ट प्रकाशित, राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) / अन्य राज्यों के सभी प्रमुख प्रकाशनों का संग्रह एक मंच पर उपलब्ध कराया गया, सीआईडी-रेडी रेकनर, बीएनएसएस के तहत वीडियो रिकॉर्डिंग- सभी अधिकारियों को वीडियो एसओपी दिया गया।

पुलिस अधिकारियों की सहायता के लिए जांच सहायता प्रकोष्ठ को उन्नत किया गया तथा क्लाउड टेलीफोनी और एफएक्यू रिपोजिटरी को लागू किया गया। डीजीपी ने बीएनएस में कानून की नई/बड़े पैमाने पर संशोधित धाराओं के तहत दर्ज कुल मामलों (कुल 607) की समीक्षा की जैसे कि भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता को खतरे में डालना (बीएनएस 152), आतंकवाद (बीएनएस 113), मॉब लिंचिंग (बीएनएस 103 (2), संगठित अपराध (बीएनएस 111), स्थायी विकलांगता और लगातार वनस्पति अवस्था को कवर करने वाली गंभीर चोट - [बीएनएस 117 (3), स्नैचिंग (बीएनएस 304), शादी करने का वादा (बीएनएस 69), लिंग तटस्थता, सामुदायिक सेवा, फर्जी खबर, अनिवार्य न्यूनतम सजा और सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने पर श्रेणीबद्ध जुर्माना है। तेलंगाना पुलिस ने 22 मई 2025 तक बीएनएस के तहत 1,37,644 मामले दर्ज किए हैं। साथ ही 1251 जीरो एफआईआर दर्ज की गईं। उन्होंने सभी अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने को कहा 60 और 90 दिनों के भीतर आरोप पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया की निरंतर निगरानी की जानी चाहिए, जिसमें बीएनएसएस समयसीमा का सख्ती से पालन किया जाना चाहिए।

उन्होंने अभियोजन टीम के साथ बातचीत की और उन्हें दोषसिद्धि दर बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत करने को कहा। डीजी, सीआईडी, शिखा गोयल, आईपीएस, जो एनसीएल कार्यान्वयन समिति की संयोजक हैं, ने तेलंगाना के कार्यान्वयन की स्थिति के बारे में एक प्रस्तुति दी।

उन्होंने नए आपराधिक कानूनों के कार्यान्वयन के हिस्से के रूप में किए जा रहे विभिन्न अन्य गतिविधियों और कार्यों को भी गिनाया। समीक्षा बैठक में महेश एम भागवत, एडीजी एल एंड ओ, वी.वी. श्रीनिवास राव, एडीजी, प्रशिक्षण, डॉ. अनिलकुमार, एडीजी, कार्मिक, एस.चंद्र शेखर रेड्डी, आईजीपी मल्टीजोन-I, एम.रमेश, आईजीपी, पी एंड एल, सुश्री रेमा राजेश्वरी, डीआईजी, महिला सुरक्षा विंग और संयुक्त कार्य समूह (जेडब्ल्यूजी) की सदस्य शिखा गोयल आदि उपस्थित रहे।

किसान ने कीटनाशक पीकर की आत्महत्या

जनगांव, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। जिले के रघुनाथपल्ली मंडल के वेलडी गांव में एक किसान ने कथित तौर पर आत्महत्या कर ली। मृतक एन यादगिरी (52) ने अपनी दो एकड़ जमीन पर कपास और मिर्च की खेती की थी और इसके अलावा उन्होंने ढाई एकड़ जमीन लीज पर ली थी। बताया जाता है कि उन्होंने फसल की लागत के लिए 8 लाख रुपये उधार लिए थे लेकिन उसे अपेक्षित उपज नहीं मिल पाई और इस तरह उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ा। कथित तौर पर कर्ज चुकाने से परेशान होकर उसने कीटनाशक पी लिया और शुक्रवार को उसकी मौत हो गई। स्थानीय पुलिस ने घटना के संबंध में मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

बेमौसम बारिश से आदिलाबाद में भरा पानी

किसानों की फसलें तबाह

आदिलाबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। पूर्ववर्ती आदिलाबाद जिले के कुछ हिस्सों में गुरुवार को लगातार दूसरी रात हल्की से मध्यम बारिश हुई, जिससे खरीद केंद्रों में संग्रहीत ज्वार और धान को काफी नुकसान पहुंचा और किसानों की आजीविका प्रभावित हुई। तेलंगाना विकास योजना सोसाइटी की मौसम रिपोर्ट के अनुसार, आदिलाबाद जिले में औसतन 25.8 मिमी बारिश दर्ज की गई। नारनूर मंडल में सबसे ज़्यादा 125.6 मिमी बारिश हुई, उसके बाद तलमदुगु मंडल में 57.3 मिमी बारिश हुई। आदिलाबाद ग्रामीण और तमसी मंडलों में 50 मिमी से ज़्यादा बारिश हुई, जबकि इंदरवेल्ली, गुडीहाथनूर और आदिलाबाद शहरी मंडलों में 20 मिमी से ज़्यादा बारिश दर्ज की गई।

कुमराम भीम जिले में औसतन 23.9 मिमी बारिश दर्ज की गई। वानकीडी मंडल में सबसे ज़्यादा 53.1 मिमी बारिश हुई, उसके बाद कोउटाला और बेज्जुर मंडल में क्रमशः 46.7 मिमी और 43 मिमी बारिश हुई। जैनूर, सिरपुर (यू), केरमेरी, सिरपुर (टी) और चिंतालमनेपल्ली मंडल में 20 मिमी से 30 मिमी बारिश हुई। मंचेरियल जिले में औसतन 17.6 मिमी बारिश दर्ज की गई, जिसमें कासिपेट मंडल में सबसे अधिक 43.9 मिमी बारिश हुई। दांडेपल्ली, लक्सेटीपेट, हाजीपुर, बेल्लमपल्ली और जयपुर मंडलों में 20 मिमी से अधिक बारिश दर्ज की गई। निर्मल जिले में औसतन 9.4 मिमी बारिश दर्ज की गई, जबकि मुधोले मंडल में सबसे अधिक 19.4 मिमी बारिश दर्ज की गई।

बेमौसम बारिश ने आदिलाबाद और कुमराम भीम आसिफाबाद जिलों में खरीद केंद्रों पर रखे ज्वार और धान के दानों को नुकसान पहुंचाया, जिससे किसानों को काफी नुकसान हुआ। प्रभावित किसानों ने अधिकारियों से बिना किसी शर्त के अनाज खरीदने का आग्रह किया, क्योंकि अप्रत्याशित बारिश ने उनके मुनाफे की उम्मीदों को चकनाचूर कर दिया।

फर्जी वाहन फाइनेंस एजेंटों ने एक व्यक्ति पर हमला कर उसे लूटा

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। एक व्यक्ति ने अत्तापुर पुलिस से संपर्क कर आरोप लगाया कि वाहन वित्त एजेंट के रूप में पेश आए दो अज्ञात व्यक्तियों ने उसके साथ मारपीट की और लूटपाट की। मोइनाबाद के एक एसी तकनीशियन मोहम्मद अब्दुल बशीर ने अपनी शिकायत में आरोप लगाया कि 20 मई की रात को, जब वह अपने चाचा की बाइक पर मेहदीपट्टनम से आरामघर की ओर जा रहे थे, तो हमलावरों ने उन्हें काला हनुमान मंदिर के पास रोका और कहा कि बाइक पर फाइनेंस का भुगतान लंबित है।

उन्होंने बाइक की चाबी छीनने की कोशिश की, जिसका अब्दुल बशीर ने विरोध किया। इस पर उनके बीच बहस हुई और दोनों ने गाली-गलौज करते हुए उससे 2,500 रुपये छीन लिए। वे बाइक छोड़कर मौके से भाग गए। गुरुवार को शिकायत के आधार पर अत्तापुर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और जांच कर रही है।

पूर्व तट रेलवे

निविदा सूचना सं. WAT-TRD-98-24-25, दिनांक : 19.05.2025

स्थान सहित कार्य का नाम : वाल्टियर मण्डल फेज-I के KK लाइन में कोडल लाइफ (Codal Life) पूर्ण इंसुलेटर का प्रतिस्थापन।

निविदा मूल्य (रुपये में) : ₹ 72,99,000/-, EMD (रुपये में) : ₹ 1,46,000/-, पूरा होने की अवधि : 11 महीने।

निविदा बंद होने की तिथि एवं समय : दिनांक : 10.06.2025 को 1500 बजे।

संपूर्ण विस्तृत विवरण वेबसाइट www.ireps.gov.in में उपलब्ध है।

वरिष्ठ मण्डल विद्युत अभियन्ता (TRD), वाल्टियर

PR-156/Q/25-26

हाफिज सईद के इशारों पर 'मायावी' रूप धर रहा इकबाल

यूपी में पकड़े गए आईएसआई एजेंट से पूछताछ में खुलासा

शामली, 23 मई (एजेंसियां)। मूल रूप से कैराना निवासी आईएसआई का गुर्गा इकबाल काना पाकिस्तान में बैठकर आईएसआई के लिए युवाओं की फौज तैयार कर रहा है। 1996 में फरार इकबाल अब भारत आने की फिराक में है। आरोपी ने इकबाल सिद्दीकी के नाम से पाकिस्तानी आईडी बनवाई है। इससे जुड़ा एक पाकिस्तानी दस्तावेज नोमान के पास से बरामद हुआ, जिसके जरिये उसका पासपोर्ट बनवाने की तैयारी थी। बता दें कि ऑपरेशन सिंदूर के बाद कैराना निवासी नोमान को पानीपत से पाकिस्तान के लिए जासूसी करते हुए पकड़ा गया था। कैराना निवासी इकबाल 1985 में पंजाब के रास्ते पाकिस्तान से गठरी उद्योग से जुड़ा और जल्द अमीर बनने के लालच में नकली नोट, हथियार और सोने की तस्करी करने लगा। कई बार उसकी गिरफ्तारी हुई। पुलिस पीछे लगी तो वह पाकिस्तान भाग गया। वहां उसने पाकिस्तानी जासूसी एजेंसी आईएसआई से प्रशिक्षण लिया और कुछ ही साल में आईएसआई का अहम गुर्गा बन गया। हथियार और नकली नोट की तस्करी में वांछित होने के कारण भारत नहीं लौटा। वह कैराना, शामली के साथ ही हरियाणा और दिल्ली में कई लोगों के संपर्क में है। यही कारण है कि आईएसआई, आतंकी संगठन जैश-ए-मोहम्मद के साथ ही आतंकी सरगना हाफिज सईद के कहने पर उसने भारत में आईएसआई के लिए लोग तलाशने शुरू किए। दो साल में शामली से दो और पानीपत से कैराना निवासी नोमान की गिरफ्तारी हुई,

24 साल की कानूनी लड़ाई को मिला मुकाम

मुकदमा लड़ते-लड़ते पति की मौत, पत्नी को मिलेगी पेंशन की एकमुश्त रकम

प्रयागराज, 23 मई (एजेंसियां)। इलाहाबाद हाई कोर्ट में पेंशन के लिए 24 साल लड़ी गई कानूनी लड़ाई मुकाम पा गई है। पति 12 वर्ष ने लड़ाई लड़ी और लगभग इतने ही बरस पत्नी ने। न्यायमूर्ति सौरभ श्याम शमशेरी की एकलपीठ ने मेरठ निवासी याची माया को एकमुश्त 7.50 लाख रुपये का भुगतान करने का निर्देश विभाग को दिया है। कोर्ट ने कहा, पेंशन पाने के अधिकार के बावजूद याची के पति को गलत शासनादेश के आधार पर इससे इनकार कर दिया गया। वह चार दिसंबर 1982 के शासनादेश से पेंशन का हकदार था, इस तथ्य की उपेक्षा की गई।

उसे 1973 के शासनादेश के आधार पर पेंशन पाने का अपात्र घोषित कर दिया गया, जबकि उक्त शासनादेश उसके मामले में लागू नहीं होता था। कोर्ट ने पेंशन के लिए न्यूनतम योग्यता न होने के आधार पर पेंशन का हकदार नहीं मानने संबंधी पांच मार्च 2008 का विभागीय आदेश रद कर दिया। कहा कि पेंशन या नोशनल (सांकेतिक) पेंशन दी जा सकती है, लेकिन अब मामला पारिवारिक पेंशन का है। इतने अंतराल के बाद गणना कठिन है, इसलिए याची को विशेष स्थिति के कारण सात लाख 50 हजार रुपये की एकमुश्त राशि का भुगतान किया जाए।

मुकदमे से जुड़े तथ्यों के अनुसार याची के पति सालगराम की नियुक्ति करमालीपुर गढ़ी, बागपत मेरठ स्थित प्राइमरी स्कूल में 19 नवंबर 1963 को बतौर अप्रशिक्षित अध्यापक हुई। वह 30 जून 1991 को सेवानिवृत्त हुए। याची का दावा था कि उनकी सेवा पहली अक्टूबर 1957 से शुरू हुई। कुल 34 साल की सेवा की, किंतु पेंशन नहीं मिली। 1999 में याचिका दायर की गई तो हाई कोर्ट ने 25 जनवरी 2000 को बीएसए को प्रकरण तय करने का आदेश दिया। बीएसए ने कहा, याची को प्रशिक्षण से छूट नहीं थी। 1973 के शासनादेश के आधार पर पेंशन के लिए 15 साल की सेवा जरूरी है और याची की सेवा नौ साल आठ माह छह दिन है। इसे चुनौती दी गई। वर्ष 2000 में दायर रिट पर जनवरी 2008 को निर्णय हुआ। पांच मार्च 2008 को बीएसए ने फिर अपने आदेश में याची को पेंशन का हकदार नहीं माना।

इस पर अवमानना याचिका दायर की गई, लेकिन निर्णय से पहले ही 19 अप्रैल 2011 को सालगराम का निधन हो गया। वर्ष 2013 में माया ने पति को पेंशन व उसे पारिवारिक पेंशन का भुगतान करने की मांग में याचिका दायर की और कहा कि 1982 के शासनादेश से पेंशन के लिए 10 साल की सेवा पर्याप्त मानी गई है। बीएसए ने गलत शासनादेश को आधार बना पेंशन देने से इनकार किया है, यह आदेश रद किया जाए।

रीयल लाइफ हीरो की कहानी: अयोध्या के लाल लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी की

जिन्होंने जान देकर बचाई दोस्त की जिंदगी सिक्किम में हुए शहीद

अयोध्या, 23 मई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के अयोध्या निवासी होनहार और जांबाज लेफ्टिनेंट शशांक तिवारी सिक्किम में शहीद हो गए। ऑपरेशनल गश्त के दौरान उनका एक साथी जवान नदी में गिर गया। पानी का बहाव तेज था, जवान बहने लगा। यह देख 23 साल के लेफ्टिनेंट शशांक नदी में कूद गए। साथी को तो मौत के मुंह से खींचकर बाहर निकाल लाए, लेकिन खुद जान गंवा बैठे। आज उनका शव अयोध्या पहुंचेगा। शशांक के पिता मर्चेंट नेवी में अफसर हैं, जो आज देर रात भारत पहुंचेंगे। इसलिए कल यानि शनिवार को राजकीय सम्मान के साथ शशांक का जमथरा घाट पर अंतिम संस्कार होगा। शशांक घर के इकलौते बेटे थे। उनकी एक बहन है, जो दुबई में रहती है। 2019 में उनका सिलेक्शन एनडीए में हुआ था। पिछले साल उन्हें कमीशन मिला और पहली पोस्टिंग सिक्किम में हुई। शशांक अयोध्या के थाना कैंट क्षेत्र के मझवां गद्दोपुर के रहने वाले थे। उनके पिता जंग बहादुर तिवारी मर्चेंट नेवी में हैं और वर्तमान में अमेरिका में तैनात हैं। मां नीता तिवारी की तबीयत अक्सर खराब रहती है। वह कौशलपुरी कॉलोनी स्थित आवास में परिवार के साथ रहती हैं। शशांक तिवारी बचपन से ही बेहद पढ़ाई में होनहार थे। उन्होंने पहले ही प्रयास में एनडीए क्वालिफाई किया था। 17 दिसंबर 2024 को उन्होंने सेना में ज्वाइनिंग दी थी। देशसेवा उनकी रग-रग में समाई थी। शशांक का एकमात्र सपना था- वर्दी पहनकर मातृभूमि की रक्षा करना।

यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा पर भड़के बीजेपी नेता दिलीप जायसवाल

'ऐसे गद्दार को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए'

पटना, 23 मई (एजेंसियां)। यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा पर देश के खिलाफ जासूसी का आरोप है। खुफिया एजेंसियों का मानना है कि ज्योति मल्होत्रा पाकिस्तान दूतावास के अधिकारियों और आईएसआई के संपर्क में थीं। ज्योति मल्होत्रा को लेकर अब बिहार बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल की प्रतिक्रिया आई है। शुक्रवार को दिलीप जायसवाल ने कहा कि ज्योति मल्होत्रा जैसे यूट्यूबर ने देश के साथ गद्दारी करने का काम किया है। बीजेपी नेता ने कहा कि ऐसे गद्दार को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। इस तरह की हरकत करने वाले इंसान को भगवान भी सजा दें कि फिर कोई इस तरह देश के साथ गद्दारी करे। बता दें कि बिहार के और अन्य नेताओं ने भी ज्योति मल्होत्रा के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। फांसी देने तक की मांग की जा चुकी है।

'ऑपरेशन सिंदूर को याद रखेगी पूरी दुनिया'

दिलीप जायसवाल ने आगे कहा कि देश की जनता ऑपरेशन सिंदूर में आतंकी ठिकानों को नेस्तनाबूद किए जाने पर खुश है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत मजबूत है। भारत एक नए भारत के रूप में दुनिया में पेश हो रहा है। ऑपरेशन सिंदूर जो हुआ है आने वाले समय में पूरी दुनिया याद रखेगी। एक सवाल के जवाब में बीजेपी नेता ने कहा, नेहरू परिवार को गुलामी के शासन में रहने की आदत हो गई है। दूसरे देश का ज्यादा समर्थक बन जाता है, पाकिस्तान का, चीन का, अभी देश ऐसे नेताओं को बेनकाब करेगा जो खाते हैं भारत का और पाकिस्तान-चीन का गुणगान करते हैं। ऐसे नेताओं की पहचान यहां की जनता करेगी और देश से बहिष्कृत करने का काम करेगी।

विपक्ष की ओर से लॉ एंड ऑर्डर को लेकर उठाए जा रहे सवाल पर उन्होंने लालू और तेजस्वी यादव पर हमला किया। कहा कि पहले बिहारी कहना बदनामी की बात होती थी। दूसरे प्रदेश में हम लोग जाकर बिहारी कहते थे तो लोग गलत निगाह से देखते थे। ये लालू यादव के परिवार ने बिहारी का अपमान किया है। पूरे बिहार के अंदर जितने भी अपराध हो रहे हैं उन्हीं की देन है कि उन्होंने इस संस्कार को बिहार में पैदा किया है।

कार की डिग्गी में मांस मिलने से हड़कंप, ग्रामीणों ने दौड़ाकर तीन को पकड़ा

आनंदनगर, 23 मई (एजेंसियां)। फरेंदा थाना क्षेत्र के बाजारडीह में शुक्रवार की भोर में ग्रामीणों ने कार की डिक्की से पशु मांस के साथ तीन युवकों को पकड़ लिया। ग्रामीणों ने तीनों युवकों को पुलिस को सौंप दिया है। पुलिस मांस की जांच करने के साथ ही आरोपितों से पूछताछ में जुटी है। बाजारडीह गांव के सुंदर सिंह, विवेक सिंह, मोहित सिंह, गौरव सिंह, प्रियांशु, उत्कर्ष सहित अन्य लोग टहलने निकले थे। लोगों ने देखा कि सड़क पर सफेद रंग की कार खड़ी है। संदिग्ध दिखने पर लोगों ने चालक से वहां खड़े होने का कारण पूछा। तभी तीनों कार छोड़कर भागने का प्रयास करने लगे। ग्रामीण उन्होंने पकड़ लिया। कार की डिक्की से बोरे में रखा संदिग्ध मांस बरामद हुआ। ग्रामीणों ने इसकी सूचना 112 नंबर पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों युवकों को हिरासत में ले लिया।

यूपी के 65 जिलों में मौसम का कहर, आंधी-बारिश से 50 लोगों की गई जान; झांसी में 100 तोतों की मौत

लखनऊ, 23 मई (एजेंसियां)। उत्तर प्रदेश के लखनऊ में 21 मई की रात और 22 मई की सुबह के बीच पूरे राज्य में आंधी-बारिश ने भयंकर तबाही मचाई। तेज आंधी से पेड़ और दीवार गिरने से हुए हादसों में 51 लोगों की मौत हो गई। बिजली के पोल टूटने से आपूर्ति बाधित हुई। बुलंदशहर में 89 किमी प्रति घंटे तो मेरठ में 80 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तूफानी हवाएं चलीं। आगरा, अलीगढ़ क्षेत्र के साथ प्रदेश के अन्य पूर्वी इलाकों में भी 50 से 80 किमी प्रति घंटे तक की रफ्तार से हवाएं चलीं। इससे कई इलाकों में टिन की छत और छप्पर उड़ गए। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र लखनऊ के वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह ने बताया कि शुक्रवार को 65 से ज्यादा जिलों में तेज रफ्तार की हवाएं चलने और बारिश के आसार हैं। कहीं-कहीं बिजली भी गिर सकती है। अरब सागर में बने कम दबाव क्षेत्र के उत्तर की ओर बढ़ने से शनिवार से प्रदेश में बारिश की तीव्रता और क्षेत्रफल में बढ़ोतरी होगी। इस बूंदाबांदी के साथ ओले गिरने की भी संभावना है और मौसम में भी नमी आएगी।

झांसी में 100 तोतों की मौत

आंधी और बारिश से झांसी की गुरसहाय तहसील के सिंगार में करीब 100 तोतों और मैना की मौत हो गई। साथ ही 30 तोते घायल भी हो गए। वहीं मैनपुरी में 400 बिजली के पोल, मथुरा में भी बिजली के पोल और पेड़ गिरे। कासगंज के लहर गांव में भीषण अग्नि कांड के साथ-साथ झोपड़ियां जलकर राख हो गईं। अलीगढ़ के बरौला माल गोदाम पर 20000 मी चावल भी बिक गया।

12 जिलों में आंधी-बारिश

लखनऊ के साथ अवध के 12 जिलों में बुधवार देर रात आंधी के साथ तेज बारिश हुई। बिजली गिरने से अंबेडकरनगर के कुसुमखोर के 48 वर्षीय अजय सिंह की मौत हो गई। दीवार गिरने से अमेठी के मैंझार में सीतापति,अयोध्या के रुदौली की सर्दकला ने दम तोड़ दिया। ब्रज में 17 लोगों की जान चली गई। इनमें आगरा में तीन, कासगंज में चार महिलाओं समेत 6 लोगों की मौत हो गई। वहीं एटा में पांच, फिरोजाबाद में दो महिलाओं, टंडला में एक बच्चे की मौत हो गई। बदायूं के बिल्सी में गिरी दीवार से मलबे में दबकर एक महिला की मौत हो गई।

कानपुर और बुंदेलखंड में 22 मौत

मुरादाबाद में आंधी के चलते छत से गिरने की वजह से महिला की मौत हो गई। कानपुर और बुंदेलखंड के जिलों में 22 लोगों की मौत हो गई। इनमें फतेहपुर में पांच, औरैया में चार, कानपुर और कन्नौज में तीन-तीन, इटावा और कानपुर देहात में दो-दो और बुंदेलखंड के झांसी में दो, चित्रकूट में एक मौत हुई। आजमगढ़ के अतरौलिया में बिजली गिरने से एक युवक की मौत हो गई। हाथरस में एक युवक, अलीगढ़ में एक वृद्धा की मौत हो गई। हरदुआगंज तापीय विद्युत परियोजना बंद हो गई। मेरठ में दो बागपत में दो लोगों की मौत हो गई।

राहुल गांधी का बिहार दौरा टला

राजगीर में सभा के लिए हॉल खाली नहीं

नालंदा, 23 मई (एजेंसियां)। लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष व कांग्रेस सांसद राहुल गांधी का बिहार दौरा टल गया है। वो 27 मई को बिहार दौरे पर आने वाले थे। नालंदा के राजगीर में संविधान सुरक्षा सम्मेलन में शिरकत करने वाले थे। इस दौरान पिछड़े वर्ग के छात्रों को उन्हें संबोधित करना था, लेकिन अब यह कार्यक्रम 27 मई को नहीं होगा। इसके पीछे का कारण यह है कि सभा करने के लिए राजगीर में उन्हें हॉल खाली नहीं मिला। इसके कारण इस कार्यक्रम के डेट को आगे जून माह के लिए बढ़ा दिया गया है। अब राहुल गांधी का कार्यक्रम जून महीने में होगा। सभा के लिए अब पहले हॉल की बुकिंग होगी, उसके बाद ही डेट एलाउंसमेंट किया जाएगा।

अब पहले होगी हॉल की बुकिंग

संविधान सुरक्षा सम्मेलन आयोजन समिति के सदस्य मंजीत आनंद साहू ने बताया कि मई महीने में राजगीर में कन्वेंशन हॉल खाली नहीं है। हॉल खाली नहीं रहने के कारण अब मई में राहुल गांधी का कार्यक्रम होने की उम्मीद नहीं दिख रही है। अब राहुल गांधी का जून के दूसरे सप्ताह में बिहार दौरा होने की संभावना है। हालांकि अभी उनके बिहार दौरे की तारीख तय नहीं हो पाई है। उन्होंने कहा कि इस बार पहले हॉल की बुकिंग कर लेते हैं फिर तारीख का एलान करेंगे। उम्मीद है कि जल्द ही इसकी घोषणा की जाएगी।

नेहा सिंह राठौर पर वाराणसी में एक और एफआईआर

बोलीं- सरकार के पास मेरे सवालों का जवाब नहीं; 4 लाख एफआईआर करवा दीजिए, आपसे नहीं डरूंगी

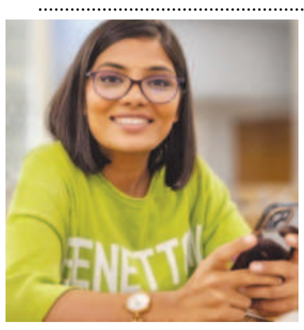

वाराणसी, 23 मई (एजेंसियां)। वाराणसी में भोजपुरी सिंगर नेहा सिंह राठौर पर एक और मुकदमा दर्ज हुआ है। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पीएम मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी के मामले में वाराणसी में यह दूसरी एफआईआर है। इससे पहले 27 अप्रैल को लखनऊ के हजरतगंज थाने में नेहा पर एफआईआर दर्ज हुई थी। 12 मई को नेहा के गाने चौकीदरवा कायर बा।।। बेटिया किसानन खातिर बनल जनरल डायर बा।।। पर विवाद छिड़ा। आरोप लगा कि पीएम को जनरल डायर कहा है। हिंदू संगठनों और भाजपा कार्यकर्ताओं ने 20 मई को नेहा सिंह राठौर के खिलाफ कमिश्नरेट के तीन जोन के 15 थानों में 500 से ज्यादा शिकायतें दीं। अकेले लंका थाने में ही 318 तहरीर पड़ी। नेहा ने कहा- इस वक्त मेरे साथ क्या और क्यों हो रहा है। मैं इस सरकार से सवाल पूछ रही हूं। लेकिन, सरकार के पास मेरे सवालों का कोई जवाब नहीं है। बदले में मुझे गालियां दिलवाई जा रही हैं। 400 शिकायतें नहीं 4 लाख एफआईआर करवा दीजिए, आपसे नहीं डरूंगी। इसी बीच 21 मई को एक और गाना जारी कर कहा- औरत पे जोर दिखावे, ई कैसा मर्दाना।।। साहब छोड़ दो ना बेटी बहुओं को धमकाना।।। बात-बात पे ये एफआईआर करवाना।

सौरभ मौर्य बोले- हमारे सांसद का अपमान हुआ

नेहा ने 12 मई को सोशल मीडिया पर एक गाना पोस्ट किया था। साधना फाउंडेशन के सौरभ मौर्य ने सिगरा थाने में तहरीर देकर 22 मई की रात केस दर्ज कराया। पुलिस को दी तहरीर में सौरभ ने बताया- नेहा ने गाने में पीएम को जनरल डायर कहा था। जनरल डायर एक अंग्रेज अफसर था, जिसने 13 अप्रैल 1919 में अमृतसर के जलियांवाला बाग में लोगों पर गोली चलवा दी थी। हजारों लोग मारे गए थे। सौरभ ने कहा कि नेहा सिंह राठौर लगातार वाराणसी के सांसद और भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर अपमानजनक वीडियो बना रही हैं। इसको देश से लेकर पाकिस्तान में वायरल कर रही है, जिससे हमारे सांसद का अपमान हुआ है। कुछ देशद्रोही मानसिकता के लोग भी नेहा सिंह राठौर को आर्थिक मदद देकर उसके वीडियो को लगातार वायरल कर रहे हैं। एसीपी चेतगंज गौरव कुमार ने बताया कि नेहा सिंह राठौर के खिलाफ सिगरा थाने में केस दर्ज किया गया है। उनके वीडियोज के आधार पर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

सरकारी नौकरी वाले से शादी करना चाहती थी प्रेमिका, प्रेमी ने हत्या कर नहर में फेंका शव

मुरादाबाद, 23 मई (एजेंसियां)। जिले में एक प्रेमी ने शादी से मना करने पर अपनी प्रेमिका की गला घोंटकर हत्या कर दी। इतना ही नहीं आरोपी प्रेमी ने प्रेमिका के शव को प्लास्टिक के बैग में भरकर नहर में फेक दिया। बताया जा रहा है कि दोनों काफी समय से एक-दूसरे से प्यार करते थे। प्रेमिका रुचिका ने जब शिवम को शादी से मना कर दिया तो प्रेमी ने अपने मां-बाप के साथ मिलकर इस हत्याकांड को अंजाम दिया था। फिलहाल पुलिस ने आरोपी प्रेमी शिवम और प्रेमी के माता-पिता को गिरफ्तार कर लिया है। जानकारी के मुताबिक शिवम कुछ दिन पहले रुचिका को बहला-फुसलाकर अपने साथ ले गया था। शिवम ने रुचिका से शादी की बात कही थी,

इमरान मसूद और आशु मलिक में अदावत बढ़ी

कांग्रेस सांसद बोले- 'मुगालता न रखें, मैं किसी बैसाखी पर नहीं'

लखनऊ, 23 मई (एजेंसियां)। पश्चिमी यूपी में कांग्रेस सांसद इमरान मसूद और समाजवादी पार्टी के विधायक आशु मलिक के बीच की अदावत कम होने का नाम नहीं ले रही है। सहारनपुर से सांसद इमरान मसूद ने एक बार फिर से आशु मलिक का नाम लिए बिना निशाना साधा और कहा कि वो किसी की बैसाखी पर सांसद नहीं बने हुए हैं। बल्कि वो राहुल गांधी और प्रियंका गांधी की वजह से चुनाव जीते हैं। उन्होंने दावा किया कि इस बार सहारनपुर की सातों सीटें कांग्रेस के पास होंगी। इमरान मसूद ने ये बयान सहारनपुर में पार्टी दफ़्तर में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान दिया। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि हर बूथ पर पार्टी का कार्यकर्ता खड़ा होना चाहिए, अब तो आपके (कांग्रेस) पास ताकत है। बहुत दिन से कांग्रेस सूखे में थी

लेकिन, अब तो गीले में खड़े हो तुम।।, एक के साथ एक विधायक फ्री लेकर घूम रहा हूं मै।।। अबकी बार यहां की सातों की सातों सीटें कांग्रेस की होंगी।

कांग्रेस सांसद ने सपा विधायक का नाम लिए बिना कहा कि इस बार 80-17 का फॉर्मूला नहीं चलेगा। कम से कम सहारनपुर में नहीं चलेगा। इमरान मसूद प्रियंका गांधी की वजह से जीता है किसी को मुगालता हो तो उसे दूर कर ले।। इमरान मसूद प्रियंका गांधी का प्रोडक्ट है।। राहुल गांधी के नाम पर जीता है।। प्रियंका आईं थी तब जीता हूं चुनाव।। तो ये मुगालता किसी को नहीं रखना चाहिए कि मैं किसी की बैसाखी पर हूं। मैं किसी की बैसाखी पर नहीं हूं। हमारे बिना किसी का भी काम नहीं चलेगा। पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह भरते हुए इमरान मसूद ने कहा कि आपकी हर चीज राहुल गांधी देख रहे हैं। आपकी एक-एक मिनट राहुल गांधी देख रहे हैं। आप लोगों को हर जगह पर खड़ा होना पड़ेगा, जहां आपको बुलाया जा रहा है वहां रहना होगा। बता दें कि पश्चिमी यूपी में कांग्रेस और सपा नेताओं के बीच खुलकर जुबानी जंग देखने को मिल रही है और दोनों नेता एक दूसरे को चुनौती देते हुए नजर आ रहा है। बीते दिनों आशु मलिक ने कांग्रेस सांसद को कहा कि अगर वो इतने ही बड़े नेता हो रहे है तो एक बार अपने पद से इस्तीफा दे दीजिए फिर देखते हैं

पप्पू यादव की बात से बढ़ सकती है तेजस्वी यादव की टेंशन

पूर्णिया, 23 मई (एजेंसियां)। पूर्णिया के निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव की एक बात से तेजस्वी यादव की टेंशन बढ़ सकती है। उन्होंने साफ लहजे में कहा कि कांग्रेस के बिना एनडीए को नहीं हराया जा सकता।

बिहार का चुनाव राहुल गांधी के नेतृत्व में लड़ने की जरूरत है, तभी हम सफल हो सकते हैं। वे पटना में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। दूसरी ओर मुकेश सहनी यह दावा कर रहे हैं कि महागठबंधन की सरकार बनने पर वे उपमुख्यमंत्री होंगे इस पर निर्दलीय सांसद ने कहा, यह उनकी अपनी व्यक्तिगत राय है। वे नेता हैं और उनको अधिकार है अपनी मांग रखने का, मैं कांग्रेस का कार्यकर्ता हूं और मैं इतना ही कह सकता हूं कि कांग्रेस के बगैर एनडीए को नहीं हराया जा सकता है।

सभी जाति, धर्म, वर्ग का कांग्रेस नेता राहुल गांधी के प्रति सम्मान है। पप्पू यादव ने आगे कहा कि बिहार का चुनाव हमें राहुल गांधी के नेतृत्व में लड़ने की जरूरत है, तभी हमें सफलता मिलेगी। आज राष्ट्र के सवाल पर या स्वाभिमान के सवाल पर, युवाओं के मुद्दों पर सभी की उम्मीद राहुल गांधी बन गए हैं। बिहार में स्वास्थ्य सुविधाओं को लेकर स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय और पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव में वार-पलटवार पर पप्पू ने कहा कि 15 साल आरजेडी की सरकार और 20 साल एनडीए की सरकार रही, दोनों ने मिलकर बिहार को बर्बाद किया। आज बिहार में सबसे बुरी स्थिति स्वास्थ्य विभाग की है।

जासूस तुफैल पाकिस्तानी अफसर की पत्नी से बात करता था

ज्ञानवापी-नमो घाट की जानकारी दी, बाबरी से जुड़े लोगों से मिला

वाराणसी, 23 मई (एजेंसियां)। यूपी एटीएस ने वाराणसी के हनुमान फाटक से मोहम्मद तुफैल को अरेस्ट किया है। तुफैल पाकिस्तान के लिए जासूसी कर रहा था। एक साल में उसने 600 पाकिस्तानियों से संपर्क बनाए थे। वह पाकिस्तानी अधिकारी की पत्नी से घंटों वॉट्सऐप पर बात करता था। तुफैल ने उसे दिल्ली के राजघाट, रेलवे स्टेशन, जामा मस्जिद, लाल किला, निजामुद्दीन औलिया के वीडियो भेजे। इसके अलावा काशी के नमोघाट और ज्ञानवापी से जुड़ा कंटेंट भी शेयर किए। पूछताछ में सामने आया कि तुफैल धार्मिक यात्राओं के बहाने देशभर में पाकिस्तानी उलेमाओं की मजलिस में शामिल होता और उनकी तकरीरें सुनता था। वह मुस्लिम कम्युनिटी के लोगों को वॉट्सऐप पर मैसेज भेजकर खुद को गजवा-ए-हिंद और हदीस के लिए लड़ने वाला सिपाही बताता था। हैदराबाद में एक मजलिस में वह पाकिस्तानी उलेमाओं और मौलानाओं से मिला। तभी से उसके तार पाकिस्तान से जुड़ गए। तुफैल एक साल पहले अयोध्या में बाबरी मस्जिद से जुड़े लोगों से भी मिल चुका है। एटीएस के अफसरों से तुफैल ने कहा- ये तो पहलगाम हमला हो गया, वरना बकरीद पाकिस्तान में मनाने वाला था। एटीएस को तुफैल के घर से डायरियां, किताबें और भारतीय-विदेशी अखबारों की कटिंग मिली हैं।

3 महीने से एटीएस - एनआईए की रडार पर था जासूस

जासूस तुफैल एटीएस ही नहीं, एनआईए के रडार पर भी था। तीन महीने से एजेंसियां उस पर निगरानी रखे थीं। उसके करीबियों के नंबर भी सर्विलांस पर थे। गुरुवार को गिरफ्तार करने के बाद एटीएस ने तुफैल से पूछताछ शुरू की तो वह गुमराह करने लगा। एटीएस ने उसके मोबाइल में मिली तकरीरें और वॉट्सऐप चैट्स दिखाकर सख्ती से पूछताछ की। तब जाकर उसने पाकिस्तानियों से रिश्ते स्वीकार किए।

नकली पुलिस बनकर व्यापारियों से लूट, चालान का नाटक कर बदमाशों ने छीने एक लाख रुपये

केंद्रपाड़ा, 23 मई (एजेंसियां)। ओडिशा के गंजाम जिले से एक चौंकाने वाली घटना सामने आई है। यहां दो युवकों ने खुद को पुलिसकर्मी बताकर दो व्यापारियों से 1 लाख रुपये लूट लिए। यह घटना दिगपहांडी इलाके के हनुमान चक चेक गेट के पास हुई, जब व्यापारी अपनी मोटरसाइकिल से बरहामपुर जा रहे थे। गजपति जिले के आर। उदयगिरी क्षेत्र के रहने वाले व्यापारी ऐमोष पानी और उनके साले दिलराज चिन्चानी थोक व्यापारी को पैसे देने जा रहे थे। तभी दो युवक उनके पास आए और खुद को पुलिस बताया। उन्होंने कहा कि मोटरसाइकिल तेज चलाने के कारण 3,200 रुपये का चालान लगेगा। जब व्यापारियों ने पैसे देने से मना किया तो उन्होंने 1,000 रुपये की मांग की और धमकी दी कि नहीं देने पर कानूनी कार्रवाई होगी। व्यापारियों ने फिर भी पैसे देने से मना किया, तो आरोपियों ने उनसे मारपीट कर बैग छीन लिया। बैग में 1 लाख रुपये नकद रखे हुए थे। इसके बाद आरोपी बैग छीनकर मौके से फरार हो गए। पीड़ितों ने उनका पीछा किया, लेकिन वे भागने में सफल रहे। इसके बाद उन्होंने दिगपहांडी थाने में शिकायत दर्ज कराई। पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए आरोपियों का पीछा किया और उन्हें केंद्रापड़ा जिले के राजकनिका क्षेत्र से गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों की पहचान महेश्वर दलाइ उर्फ जगन (32) और गणेश जेना (35) के रूप में हुई है। ये दोनों आरोपी तारस गांव के रहने वाले हैं।

मध्य प्रदेश की राजनीति में सनसनी, एक नेता का अश्लील वीडियो वायरल ?

मंदसौर, 23 मई (एजेंसियां)। मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के एक नेता का एक महिला के साथ आपत्तिजनक अवस्था में कथित वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आया है। वीडियो में उसे सत्तारूढ़ दल भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) का नेता बताया जा रहा है। हालांकि, बीजेपी का कहना है कि वीडियो में दिख रहा शख्स पार्टी का प्राथमिक सदस्य नहीं है। रिपोर्ट के अनुसार, वीडियो में दिख रहे नेता का नाम मनोहरलाल धाकड़ है और वह उज्जैन में रजिस्टर्ड धाकड़ महासभा का राष्ट्रीय मंत्री भी है। वायरल वीडियो की खबरों के बीच महासभा ने एक बयान में कहा कि धाकड़ को पद से हटा दिया है। धाकड़ की पत्नी बीजेपी समर्थित जिला पंचायत सदस्य हैं और वर्तमान में मंदसौर जिला पंचायत के वार्ड क्रमांक 8 से निर्वाचित हैं। कथित वीडियो दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे का बताया जा रहा है। वीडियो में मनोहरलाल धाकड़ एक महिला के साथ कार से उतरने के बाद आपत्तिजनक अवस्था में नजर आ रहे हैं। यह वीडियो 13 मई का बताया जा रहा है। वीडियो में एक सफेद रंग की कार दिख रही है। परिवहन विभाग के रिकॉर्ड के अनुसार इस गाड़ी का रजिस्ट्रेशन मनोहरलाल धाकड़ के नाम पर दर्ज है। 'पीटीआई-भाषा' ने धाकड़ से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन उनसे बात नहीं हो पाई।

सोशल मीडिया पर मनोहरलाल धाकड़ को बीजेपी के नेता के रूप में पेश किए जाने पर राज्य की सत्तारूढ़ पार्टी के मंदसौर जिलाध्यक्ष राजेश दीक्षित ने कहा, ''धाकड़ बीजेपी का प्राथमिक सदस्य नहीं है।''राजेश दीक्षित ने कहा, ''धाकड़ की पत्नी सोहन बाई जिला पंचायत की सदस्य हैं। धाकड़ अगर ऑनलाइन माध्यम से पार्टी का सदस्य बन गया हो तो मालूम नहीं है।''

'1991 का समझौता शांतिकाल के लिए था'

निशिकांत दुबे के आरोपों पर कांग्रेस का पलटवार

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के आरोपों पर कांग्रेस ने पलटवार किया है। कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि निशिकांत दुबे जिस 1991 के समझौते की बात कर रहे हैं, वह शांतिकाल के लिए था, लेकिन जब विदेश मंत्री एस जयशंकर ने पाकिस्तान को हमले की सूचना दी, उस वक्त संघर्ष के हालात थे। राहुल गांधी ने आरोप लगाया था कि विदेश मंत्री जयशंकर ने भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बारे में पाकिस्तान को पहले ही जानकारी दी थी। इस पर भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने आरोप लगाया कि विदेश मंत्री ने 1991 के समझौते के तहत पाकिस्तान को सूचना दी और वह समझौता कांग्रेस सरकार में हुआ था। अब कांग्रेस नेता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा कि 'पहली बात, निशिकांत दुबे बार-बार अपनी बेवकूफी का प्रदर्शन कर रहे हैं। पूर्व पीएम राजीव गांधी ने 6 मार्च 1991 को चंद्रशेखर सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया था, जबकि 1991 का समझौता अप्रैल 1991 में हुआ था। साथ ही यह समझौता शांतिकाल के लिए था, जिसका मकसद ये सुनिश्चित करना था कि दोनों देशों की सेनाओं के बीच शांतिकाल के दौरान कोई असमंजस की स्थिति न रहे। अब हम पर आतंकी हमला हुआ था और हमने उसका आक्रामकता से जवाब दिया था। पहली बात कि भाजपा और निशिकांत दुबे ये स्वीकार कर रहे हैं कि विदेश मंत्री जयशंकर ने सूचना दी और जो राहुल गांधी कह रहे हैं, वह सच है। दूसरा समझौता शांतिकाल के लिए था, लेकिन जब जयशंकर ने सूचना दी, उस वक्त युद्ध जैसे हालात थे।' एक अन्य कांग्रेस नेता मधु गौड़ यसखी ने कहा है कि 'राहुल गांधी ने विदेश मंत्री डॉ। जयशंकर से सवाल किया था कि क्या भारत ने पाकिस्तान को हमले के बारे में सूचना दी थी। यह साफ दर्शाता है कि भाजपा सांसद निशिकांत दुबे का ट्वीट इस बात का सबूत है कि राहुल गांधी जो बोल रहे हैं, वह सच है। यह भारत सरकार की सबसे बड़ी नाकामी है कि हमने पाकिस्तान को बताया कि हम कहां हमला करने जा रहे हैं।'

निशिकांत दुबे ने क्या कहा

भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में लिखा कि 'कांग्रेस ने पाकिस्तान को छूट दी, चाहे वो 1950 का नेहरू-लियाकत समझौता हो, 1960 का सिंधु जल समझौता या 1975 का शिमला समझौता।

हम संसद में भी रक्षा की रणनीति पर चर्चा नहीं करते। लेकिन 1991 में जब आप (कांग्रेस) चंद्रशेखर के नेतृत्व वाली सरकार को समर्थन दे रहे थे और 1994 में जब पीवी नरसिम्हा राव की सरकार थी, तब इसे (समझौते को) लागू किया गया और आपने लिखा कि सेना, नौसेना कहां तैनात होगी और वायु सेना कैसे काम करेगी। ये सारी बातें क्या देशद्रोह नहीं है? कांग्रेस ने क्या वोटबैंक की राजनीति के लिए धोखा नहीं किया? मुझे लगता है कि भारत सरकार को इसके खिलाफ देशद्रोह का मुकदमा चलाना चाहिए। इस देश के बाहर के तत्वों से तो लड़ाई जारी है, लेकिन देश के भीतर के ऐसे तत्वों पर भी कार्रवाई करने का समय आ गया है।'

70 साल के बुजुर्ग के गॉल ब्लैडर से निकले 8125 स्टोन, डॉक्टर्स भी हैरान, घंटों में हुई गिनती

गुरुग्राम, 23 मई (एजेंसियां)। दिल्ली से सटे साइबर सिटी गुरुग्राम के फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टिट्यूट में एक 70 वर्षीय बुजुर्ग के गॉलब्लैडर से 8,125 स्टोन निकालने का मामला सामने आया है। डॉक्टर ने इतने स्टोन पहली बार किसी एक मरीज के गोल ब्लैडर से निकाले हैं। डॉक्टर भी इतने स्टोन देखकर एक बार तो हैरान रह गए थे लेकिन मरीज की जान बचाने के लिए जैसे डॉक्टर भगवान के रूप में आए और गॉलब्लैडर से इतने स्टोन बाहर निकाल कर मरीज की जान बचा ली। गुरुग्राम के फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के सीनियर डायरेक्टर डॉ। अमित ने बताया कि 70 वर्षीय बुजुर्ग काफी दिनों से दर्द से परेशान चल रहे थे जिसके चेकअप के बाद पता चला कि उनके गॉल ब्लैडर में स्टोन है, इसी को निकालने के लिए डॉक्टरों ने टीम बनाई और बुजुर्ग का ऑपरेशन शुरू किया। काफी देर तक चले ऑपरेशन के बाद जब टीम ने गॉल ब्लैडर से निकले स्टोन को गिनना शुरू किया तो सभी हैरान रह गए। मरीज के गॉल ब्लैडर में 8,125 स्टोन निकले इनको गिनने में भी काफी समय लगा तब जाकर उनकी गिनती हो पाई। गुरुग्राम के फोर्टिस मेमोरियल रिसर्च इंस्टीट्यूट के सीनियर डायरेक्टर डॉ अमित ने बताया, "बुजुर्ग मरीज के पेट में अक्सर दर्द रहता था जिसकी वजह से मरीज कुछ भी नहीं कर पता था। इसी को लेकर मरीज ने जब अस्पताल में डॉक्टर को दिखाया तो काफी टेस्ट के बाद पता चला कि मरीज के गॉल ब्लैडर में स्टोन है। डॉक्टर की टीम ने मरीज के गॉल ब्लैडर से स्टोन को बाहर निकाल कर सफल ऑपरेशन किया। इसके बाद मरीज को 2 दिन अस्पताल में डॉक्टरों की निगरानी में रखा गया। बाद में उसे छुट्टी देकर घर भेज दिया गया है।"

दो बहनों ने रची साजिश: सहेली के घर से 40 तोले सोने के गहनों पर किया हाथ साफ

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। मोती नगर क्षेत्र में सहेली के घर से दो बहनों ने साजिश कर 40 तोले सोने के गहने उड़ा लिए। एक आरोपी ने पीड़िता को मंदिर ले जाने के बहाने अपने साथ ले गई, जबकि दूसरी बहन पीड़िता के घर आकर वारदात को अंजाम दिया। पुलिस ने छानबीन के दौरान सीसीटीवी कैमरे की मदद से आरोपी की पहचान कर दोनों बहनों को गिरफ्तार कर लिया। इनके कब्जे से सारे गहने बरामद कर लिए हैं। गिरफ्तार बहनों की पहचान रणजीत नगर निवासी करिश्मा और रोहिणी सेक्टर 18 निवासी शिप्रा के रूप में हुई है। करिश्मा तलाकशुदा है और अपने एक बच्चे के साथ रहती है। वहीं शिप्रा शादीशुदा है। पश्चिमी जिला पुलिस उपायुक्त विचित्र वीर ने बताया कि 18 मई को बसई दारापुर निवासी 45 साल की महिला ने अपने घर के अंदर एक बंद अलमारी में रखे सोने के गहने चोरी की शिकायत की। शिकायतकर्ता ने पुलिस को बताया कि यहां वह अकेली रहती है और बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती है। उसने कुछ दिन पहले अपनी बहन के पास रखे अपने हिस्से के 40 तोले सोने के गहने लेकर आई थी। उसे वह अलमारी में रख दी थी। शिकायतकर्ता के बयान पर पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया। अगली सुबह उसने अलमारी की जांच की तो उसने पाया कि उसके सोने के गहने गायब हैं। पुलिस ने शिप्रा से फोन पर बात की। उसने मंदिर जाने की बात कबूल कर ली, लेकिन उसके बाद से अपना फोन बंद कर लिया। पुलिस को उस पर शक गहरा गया। पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे की जांच की तो फुटेज में करिश्मा कैद हो गई थी।

विमल नेगी मौत मामले में हाई कोर्ट का बड़ा फैसला

सीबीआई को सौंपा जांच का जिम्मा; हिमाचल का कोई अफसर नहीं होगा शामिल

शिमला, 23 मई (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश पावर कॉरपोरेशन के चीफ इंजीनियर रहे विमल नेगी की मौत के मामले में अब जांच सीबीआई करेगी। शुक्रवार को हिमाचल प्रदेश हाईकोर्ट ने सीबीआई को जांच के आदेश दिए। बुधवार को प्रदेश हाईकोर्ट ने इस मसले पर अपना फैसला आरक्षित रखा था अब शुक्रवार को अपना फैसला सुनाते हुए अदालत ने सीबीआई को यह जांच सौंपे के आदेश दिए। इसके साथ ही कोर्ट ने हिमाचल प्रदेश सरकार की ओर से गठित एसआईटी की कार्यपद्धति की पर भी सवाल उठाए हैं और सीबीआई को भी निर्देश साफ है कि हिमाचल कैडर के किसी भी अफसर को इसमें शामिल न किया जाए ताकि जांच पूरी तरह से पारदर्शी तरीके हो सके। माननीय उच्च न्यायालय द्वारा स्व। विमल नेगी जी की पत्नी किरन नेगी की याचिका को स्वीकार करते हुए पूरे प्रकरण की जांच सीबीआई को सौंपने के फैसले का स्वागत है। अब इस मामले की निष्पक्ष जांच हो सकेगी और विमल नेगी और उनके परिवार को न्याय मिलेगा। साथ ही उनकी मृत्यु के लिए जो भी दोषी होगा, उसे भी सजा मिलेगी और उनके मृत्यु का राज भी बाहर आएगा। भारतीय जनता पार्टी स्वर्गीय विमल नेगी जी के परिवार के साथ है। पूर्व मंत्री व वरिष्ठ भाजपा नेता बिक्रम ठाकुर ने उच्च न्यायालय द्वारा स्व। विमल नेगी की पत्नी किरण नेगी की याचिका स्वीकार करते हुए इस गंभीर प्रकरण की जांच सीबीआई को सौंपने के निर्णय का जोरदार स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि आज न्यायपालिका ने न केवल एक पीड़ित परिवार को न्याय की उम्मीद दी है, बल्कि कांग्रेस सरकार की संवेदनहीनता और ढुलमुल कार्यप्रणाली की भी पोल खोल दी है।

पूर्व मंत्री हरक सिंह रावत की संपत्ति पर ईडी के कुर्की आदेश पर रहेगी रोक

नैनीताल, 23 मई (एजेंसियां)। उत्तराखंड के पूर्व मंत्री हरक सिंह रावत से संबंधित संपत्ति मामले में ईडी के कुर्की आदेश पर 21 अगस्त तक हाईकोर्ट की ओर से रोक लगी रहेगी। न्यायमूर्ति पंकज पुरोहित की एकलपीठ के समक्ष मामले की सुनवाई हुई। मामले के अनुसार उत्तराखंड उच्च न्यायालय ने पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता हरक सिंह रावत से जुड़े 101 बीघा भूमि की कुर्की करने के प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के आदेश पर रोक लगा दी थी। ईडी ने इस साल जनवरी में मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएलए) के तहत यह कार्रवाई की थी। ईडी की ओर से दावा किया गया था कि संलग्न भूमि का पंजीकृत मूल्य 6.56 करोड़ है, जबकि इसका बाजार मूल्य 70 करोड़ रुपये से अधिक अनुमानित है। दूसरा दावा यह है कि सुशीला रानी ने अन्य व्यक्तियों के साथ मिलकर बीरेंदर सिंह कंडारी और नरेंद्र कुमार वालिया के नाम पर पावर ऑफ अटॉर्नी दी थी। उसका उपयोग कर रावत के एक करीबी सहयोगी कंडारी ने हरक सिंह रावत की पत्नी दीप्ति रावत और लक्ष्मी राणा को उस क्षेत्र के लिए राजस्व अधिकारियों द्वारा निर्धारित सर्कल दरों से बहुत कम पर मामूली राशि में भूमि बेच दी थी। ईडी के अनुसार, इस भूमि के एक हिस्से का उपयोग पूर्णा देवी मेमोरियल ट्रस्ट के तहत दून इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज का निर्माण करने के लिए किया गया था। उसके प्रबंधक रावत के बेटे तुशित रावत थे। ईडी की कार्यवाही को रावत ने हाईकोर्ट में चुनौती देते हुए कहा था कि यह 2002 के अधिनियम की धारा 5 (1) (बी) के प्रावधानों के अनुरूप नहीं थी। हाईकोर्ट की एकलपीठ ने कहा था कि 2002 के अधिनियम की धारा के अनुरूप प्रारंभिक तौर पर संपत्ति को छिपाने, हस्तांतरित करने या निस्तारित किए जाने की संभावना नहीं लगती। कोर्ट ने मामले में सरकार से जवाब मांगा था। सुनवाई के दौरान सरकार की ओर से दिए गए जवाब पर प्रतिपक्षी की ओर से प्रति शपथपत्र दाखिल करने का समय मांगा गया, जिस पर कोर्ट ने अगली सुनवाई के लिए 21 अगस्त की तिथि निर्धारित की।

मिसाल: जब एक ही छत के नीचे हुई मुस्लिम और हिंदू जोड़े की शादी, ना जाति देखी-ना धर्म

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र के पुणे के वानवोरी इलाके के एक हॉल में मंगलवार शाम एक मुस्लिम जोड़े का 'वलीमा' आयोजित किया जा रहा था, तभी पास के लॉन में शादी के बंधन में बंधने जा रहे एक हिंदू जोड़े को बारिश की वजह से रस्मों में खलल पड़ने की चिंता सताने लगी, लेकिन तभी ऐसे समय में एक मुस्लिम परिवार एक हिंदू परिवार की मदद को आगे आया। दिलचस्प बात यह है कि मदद करने वाले लोग न ही जाति के थे और न ही जानने वाले थे।

लेकिन एक बेटी के पिता के दर्द को समझते हुए उन्होंने हिंदू परिवार के साथ शादी का हॉल साझा किया। अलंकरण लॉन में संस्कृति कवाडे पाटिल और नरेंद्र गलांडे पाटिल की शादी की रस्में शाम 6.56 बजे शुरू होनी थी, लेकिन अचानक बारिश होने लगी। गलांडे पाटिल परिवार के एक सदस्य ने बताया, "विवाह स्थल के आसपास अफरातफरी मची हुई थी। पास में ही एक हॉल में वलीमा समारोह का आयोजन किया जा रहा था। हमने काजी परिवार से 'सप्तपदी' की रस्म के लिए कुछ देर उस हॉल का इस्तेमाल करने की इजाजत देने का अनुरोध किया।" गलांडे पाटिल परिवार के सदस्य ने बताया कि मुस्लिम परिवार फौरन मदद के लिए तैयार हो गया और स्टेज खाली कर दिया। उसने कहा, "यहां तक कि उनके मेहमानों ने भी स्टेज पर रस्मों से जुड़ी तैयारियां करने में हमारी मदद की। रस्में एक-दूसरे की परंपराओं के लिए पूरे सम्मान के साथ अदा की गईं।" गलांडे पाटिल परिवार के सदस्य के मुताबिक, रस्में पूरी होने के बाद दोनों परिवारों और उनके मेहमानों ने साथ में भोजन का लुत्फ उठाया।

स्कूल सिलेबस में ऑपरेशन सिंदूर को शामिल करने की उठी मांग, कांग्रेस बोली- मंत्री विजय शाह के बयान भी जोड़ेंगे

देहरादून, 23 मई (एजेंसियां)। उत्तराखंड मदरसा बोर्ड के ऑपरेशन सिंदूर को पाठ्यक्रम में शामिल करने के निर्णय के बाद अब मध्य प्रदेश से भी ऑपरेशन सिंदूर को स्कूलों के सिलेबस में शामिल करने की मांग उठने लगी है। भाजपा के विधायक और सांसद के अलावा कांग्रेस के विधायक आरिफ मसूद ने भी स्कूल सिलेबस में ऑपरेशन सिंदूर को शामिल करने की बात का समर्थन किया है। भोपाल के बीजेपी सांसद आलोक शर्मा ने लोकसभा में ऑपरेशन सिंदूर को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात कही, इस पर कांग्रेस के विधायक आरिफ मसूद ने भी मांग का जायज ठहराया, पर साथ ही सरकार एक कटाक्ष रूपी सवाल किया।

भोपाल सांसद ने की मांग

भोपाल सांसद ने कहा है कि पीढ़ी परिवर्तन के समय ऑपरेशन सिंदूर को पाठ्यक्रम में शामिल करने से आगे आने वाली पीढ़ी को पता चलेगा किस प्रकार से देश की सेवा ने वीर सैनिकों ने हिंदुस्तान की रक्षा की ओर पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब दिया। एमपी आलोक शर्मा ने कहा कि हमारे भारत के सैनिकों का धन्यवाद किया जा रहा है उनके पराक्रम शौर्य से हमारे देश के सिंदूर की रक्षा हुई है और आने वाला समय देश में पीढ़ी परिवर्तन का समय है, ऐसे में देश के स्कूलों में ऑपरेशन सिंदूर को लेकर हुए लड़ाई को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए तो आगे आने वाली पीढ़ी को पता चलेगा किस प्रकार से देश की सेवा ने वीर सैनिकों ने हिंदुस्तान की रक्षा की और पाकिस्तान को मुंह तोड़ जवाब दिया। देश की जनता चाहती है मैं लोकसभा में इस मामले को उठाऊंगा। इसी बीच भोपाल के भाजपा विधायक रामेश्वर शर्मा ने भी इस मांग का समर्थन किया और कहा,हमारी सेवा ने स्वदेशी योजना से स्वदेशी हथियारों से दुश्मन की कब्र में आतंकवादियों की आखिरी कील ठोक दी है, ऑपरेशन सिंदूर ही नहीं सर्जिकल स्ट्राइक एयर स्ट्राइक को भी पाठ्यक्रम में शामिल किया जाना चाहिए, एमपी ही नहीं देशभर के स्कूलों में पाठ्यक्रम को शामिल किया जाना चाहिए। बता दें कि उत्तराखंड में ऑपरेशन सिंदूर को पाठ्यक्रम में शामिल करने की बात के बाद बिहार भाजपा के साथ नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड ने भी यही मांग की है।

फडणवीस सरकार में भुजबल को मिला ये विभाग दो दिन पहले मंत्रिमंडल में हुए थे शामिल

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (अजित गुट) के वरिष्ठ नेता छगन भुजबल को देवेंद्र फडणवीस के नेतृत्व वाली महाराष्ट्र सरकार में मंत्री बनाया गया, जिसके बाद 77 वर्षीय भुजबल की राज्य की राजनीति में एक बार फिर बड़ी एंट्री हुई। इससे कुछ ही महीने पहले दिसंबर में उन्हें मंत्रिमंडल से बाहर कर दिया गया था और उनकी लोकप्रियता लगभग खत्म हो गई थी। अब फडणवीस सरकार में खाद्य और आपूर्ति विभाग की जिम्मेदारी दी गई है। छगन भुजबल पर भरोसा जताते हुए महायुति सरकार ने खाद्य और आपूर्ति विभाग की जिम्मेदारी दी सौंपी है। पहले ये विभाग धनंजय मुंडे के पास था। उन्ही की जगह भुजबल को मंत्रिमंडल में शामिल किया गया था। शपथ लेने के बाद भुजबल कहा था कि अंत भला तो सब भला। उन्होंने कहा था, 'मैंने 1991 से कई बार मंत्री पद की शपथ ली है और कई विभागों को भी संभाला है। मैं मुख्यमंत्री और उप-मुख्यमंत्रियों द्वारा दी गई कोई भी जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार हूं।' अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के एक प्रमुख नेता भुजबल को महाराष्ट्र मंत्रिमंडल में शामिल करने का निर्णय इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह केंद्र सरकार की ओर से आगामी राष्ट्रीय जनगणना में जाति गणना को शामिल करने के निर्णय के कुछ ही सप्ताह बाद हुआ। यह फैसला सुप्रीम कोर्ट की ओर से इस वर्ष के अंत में महाराष्ट्र में 687 शहरी और ग्रामीण स्थानीय निकायों के चुनावों का रास्ता साफ करने के कुछ दिनों बाद आया।

'अब राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे तभी साथ आएंगे जब कोई ठोस प्रस्ताव आएगा सामने

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। महाराष्ट्र में ठाकरे बंधु यानी राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे के साथ आने की चर्चा एक बार फिर छिड़ गई है। इस बार राज ठाकरे गुट की ओर से बयान आया है। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के नेता का कहना है कि राज ठाकरे शिवसेना यूबीटी के साथ तभी साथ आने की सोचेंगे, जब उद्धव गुट की ओर से एक ठोस प्रस्ताव रखा जाएगा। मनसे ने इस बात पर जोर दिया कि इससे पहले साथ आने की सभी चर्चाओं में उन्हें केवल धोखा मिला। दरअसल, मनसे नेता संदीप देशपांडे ने राज ठाकरे के उस इंटरव्यू का जिक्र किया जिसमें उन्होंने शिवसेना यूबीटी के साथ आने पर सहमति जताई थी। गौरतलब है कि महाराषट्र में स्थानीय निकाय चुनाव होने वाले हैं, जिनमें मुंबई, ठाणे, नासिक, नागपुर और पुणे के चुनाव शामिल हैं। अगर शिवसेना यूबीटी को ऐसा लगता है कि मनसे के साथ गठबंधन संभव है तो उन्हें एक ठोस प्रस्ताव के साथ एक दूसरे से बात करनी पड़ेगी। मनसे नेता ने कहा कि इसके बाद ही राज ठाकरे फैसला लेंगे। देशपांडे का कहना है कि पहले राज ठाकरे की ओर से गठबंधन की बात कई बार शुरू की गई, लेकिन भाई उद्धव ठाकरे ने हमेशा उन्हें 'धोखा' दिया। उन्होंने कहा कि चाबे वो साल 2014 हो या साल 2017, हमने हमेशा उद्धव ठाकरे से बात करने की कोशिश की है। अब अगर वह हमारे साथ आना चाहते हैं तो खुद प्रस्ताव लेकर आएं और राज ठाकरे उसी के अनुसार तय करेंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राज ठाकरे ने कभी भी किसी इंटरव्यू में उद्धव ठाकरे या महाविकास अघाड़ी के साथ आने की बात फाइनल तौर पर नहीं कही थी बल्कि केवल एक संभावना व्यक्त की थी। राज ठाकरे ने हमेशा यही कहा है कि अगर उद्धव ठाकरे चाहें तो वह भी इस बात पर विचार कर सकते हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या राज ठाकरे को एकनाथ शिंदे गुट की तरफ से भी प्रस्ताव मिल रहा है, देशपांडे ने जवाब में बताया कि फिलहाल, अभी तक आधिकारिक रूप से शिवसेना से कोई बातचीत नहीं हुई है। हालांकि, एकनाथ शिंदे गुट की ओर से बातचीत की जा रही है।

दिल्ली दंगा 2020: पुलिस नहीं कर पाई अपराध साबित 7 दिन में 30 लोग बरी

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। फरवरी 2020 में नागरिकता संसोधन कानून के विरोध प्रदर्शन के दौरान दिल्ली के नोर्थ ईस्ट इलाके में हुई हिंसा और दंगों से जुड़े मामलों की सुनवाई कर रही कड़कड़डूमा की स्पेशल कोर्ट ने हाल ही में 4 अलग-अलग एफआईआर में 30 लोगों को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया। इन एफआईआर में तीन लोगों की हत्या और एक मेडिकल शॉप में लूटपाट और आगजनी शामिल थी। कड़कड़डूमा कोर्ट के एडिशनल सेशन जज पुलस्त्य प्रमाचला ने 13 मई, 14 मई, 16 मई और 17 मई को एक सप्ताह में 4 बार बरी करने के आदेश पारित किए। इनमें गोकलपुरी थाने में दर्ज एफआईआर 37/2020, 36/2020 और 114/2020 के साथ-साथ करावल नगर थाने में दर्ज एफआईआर 64/2020 में भी आरोपियों को बरी किया गया है। बरी किए गए लोगों में लोकेश कुमार सोलंकी, पंकज शर्मा, सुमित चौधरी, अंकित चौधरी, प्रिंस, पवन कुमार, ललित कुमार, ऋषभ चौधरी, जतिन शर्मा, विवेक पांचाल, हिमांशु ठाकुर, टिंकू अरोड़ा, संदीप कुमार, साहिल, मुनेश कुमार, सुमित, पप्पू, विजय अग्रवाल, सौरव कौशिक, भूपेन्द्र पंडित, शक्ति सिंह, सचिन कुमार, राहुल, योगेश शर्मा, अमन, विक्रम, राहुल शर्मा, रवि शर्मा, दिनेश शर्मा और रणजीत राणा शामिल हैं। 13 मई को जज ने दंगों के दौरान आमिर अली नामक व्यक्ति की हत्या के लिए एक एएसआई द्वारा दर्ज एफआईआर 37/2020 में 14 लोगों को बरी कर दिया। कोर्ट ने उन्हें दंगा, गैरकानूनी तरीके से इकट्ठा होने और हत्या के अपराधों से बरी कर दिया। हालांकि, इसने एक आरोपी लोकेश कुमार सोलंकी को भारतीय दंड संहिता की धारा 153ए और 505 के तहत अपराधों के लिए दोषी ठहराया। अन्य तीन मामलों में, अभियोजन पक्ष किसी भी उचित संदेह से परे उनके अपराध को साबित नहीं कर सका, इसलिए सबूतों के अभाव में आरोपियों को सभी आरोपों से बरी कर दिया गया। एफआईआर नंबर 114/2020 इमरान शेख की शिकायत पर दर्ज की गई थी, जिसमें उनकी मेडिकल दुकान में लूटपाट और आगजनी का आरोप लगाया गया था। एफआईआर संख्या 64/2020 शाहबाज नामक शख्स की हत्या से संबंधित है, जिसे दंगों के दौरान बेरहमी से पीटा गया था और जिंदा जला दिया गया था।

स्वतंत्र वार्ता

शनिवार, 24 मई - 2025

पाकिस्तानी सेना बेनकाब

आतंकवादियों की भाषा बोलकर पाकिस्तानी सेना ने अपनी मौत को दावत दे दिया है। भारत ने तो साफ संकेत दे दिया है कि अगर ऑपरेशन सिंदूर पर लगे अस्थायी ब्रेक से खिलवाड किया तो दुश्मन मुल्क को फिर तबाही से कोई रोक नहीं सकता। पहलगाम आतंकी हमले के जवाब में भारत ने पाकिस्तान और पीओके में जो ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया, उसका मकसद साफ था, सिर्फ आतंकवादियों और उनके सरगनाओं समेत दहशती कैंपों को नेस्तनाबूद किया जाएगा। भारत ने तो अब खुलकर कह दिया है कि आतंकवादी गतिविधियों में पाकिस्तानी सरकार और उसकी सेना इसमें पूरी तरह संलिप्त है। बीते हफ्ते विदेश मंत्री एस जयशंकर ने नीदरलैंड दौरे पर एक डच अखबार से जो कहा उससे पाकिस्तान को लेकर दुनिया की आंखों पर बंधी पट्टी खुल सकती है। उनसे 2022 के दिसंबर में पाकिस्तान को 'आतंकवाद का केंद्र'बताने वाली उनकी टिप्पणी पर सवाल किया गया था। इसपर जयशंकर बोले, 'मैं सुझाव नहीं दे रहा... मैं यह बता रहा हूं।' जयशंकर ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की लिस्ट में शामिल सबसे खतरनाक आतंकी पाकिस्तान में खुलेआम घूमते हैं, सबको उनका ठिकाना और उनकी गतिविधियां पता हैं। इसलिए, यह दिखावा करना ठीक नहीं है कि पाकिस्तान इसमें शामिल नहीं है। सच तो यह है कि पाकिस्तानी सरकार और सेना इसमें शामिल है। जयशंकर ने नीदरलैंड में जो कुछ कहा, उसकी पुष्टि खुद पाकिस्तानी सेना ने ही कर दी है। पाकिस्तानी फौज के प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने एक कार्यक्रम में कहा है कि तुम हमारा पानी बंद कर दोगे, हम तुम्हारी सांस बंद कर देंगे। पाकिस्तानी सेना की यह तिलमिलाहट सिंधु जल संधि पर ब्रेक लगाए जाने को लेकर है। इसमें सबसे ज्यादा खतरनाक बात ये है कि इस तरह की जुबान में बात तो पाकिस्तानी फौज के बड़े अधिकारी कर रहे हैं, लेकिन उसके शब्द लश्कर-ए-तैयबा के चीफ और मुंबई हमलों के मास्टरमाइंड हाफिज सईद ने गढ़े हैं। हाफिज सईद पहले ही इस तरह की गीदड़भभकी दे चुका है, जिसमें उसने कहा था, 'तुम अगर हमारा पानी बंद करोगे तो, तुम्हारी हम सांस बंद करेंगे। दरिया में खून बहेगा। 10 मई को भारत ऑपरेशन सिंदूर पर अस्थाई ब्रेक लगाने पर सहमत हुआ तो अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक बयान से बहुत ही भ्रम फैलाने की कोशिशें की। गुरुवार को राजस्थान के बीकानेर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का वह बयान सामने आया, जो मात्र पाकिस्तानी सरकार और उसकी फौज के लिए सीधा संदेश नहीं है, बल्कि जो उनके आका बनने की कोशिश करते हैं, उन्हें भी ठीक से समझा दिया गया है। भारत, पाकिस्तान-प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ अपनी नीति को लागू करने से पीछे नहीं हटेगा। पीएम मोदी ने कहा, 'यह भारत का संकल्प है, इसे कोई भी शक्ति इसे हिला नहीं सकती।' उन्होंने पड़ोसी मुल्क की सेना को सीधी चेतावनी देते हुए कहा कि भारत परमाणु बम के इस्तेमाल के डर से नहीं डरेगा। उन्होंने साफ शब्दों में कहा कि भारत आतंकवाद के मुद्दे पर किसी भी दबाव में नहीं आएगा। भारत अपनी सुरक्षा और हितों की रक्षा के लिए हर संभव कदम उठाएगा। भारत की यह नीति स्पष्ट है और इसमें कोई बदलाव नहीं होगा। जयशंकर इस बात को आगे बढ़ाया कि ऑपरेशन इसलिए जारी है, क्योंकि इसके माध्यम से एक स्पष्ट संदेश है कि अगर 22 अप्रैल जैसा हमला होता है, तो जवाब दिया जाएगा और हम आतंकवादियों को नेस्तनाबूत करेंगे।' आतंकवादी अगर पाकिस्तान में हैं, तो उन्हें वहीं मारेंगे।

किस करवट बैठेगी बिहार की सियासत

राधा रमण

आर्थिक तौर पर पिछड़ा माना जानेवाला बिहार राजनीतिक रूप से काफी जागरूक प्रदेश रहा है। 90 के दशक तक बिहार की सियासत कांग्रेस समर्थन और कांग्रेस विरोध पर टिकी थी। लेकिन 1990 की 10 मार्च को लालू प्रसाद यादव के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद से अब तक बिहार की राजनीति लालू समर्थन और लालू विरोध पर केंद्रित हो गई है। बहुचर्चित चारा घोटाले में मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने और जेल जाने से लेकर सजायाफ्ता होने के बावजूद लगभग 35 वर्षों से बिहार की सियासत में लालू एक बड़ा मुद्दा हैं। यहां तक कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी पिछले 20 वर्षों से लालू समर्थन और लालू विरोध की लहर पर सवार होकर ही सत्ता सुख भोग रहे हैं। भले ही चुनाव आयोग ने अभी तक बिहार में विधानसभा चुनाव की घोषणा नहीं की है, लेकिन नवंबर-दिसंबर में वहां विधानसभा के चुनाव प्रस्तावित हैं। बात राजनीतिक सरगर्मी की करें तो पिछले एक साल से सियासी दलों ने अपनी सक्रियता बढ़ा दी है। पिछले करीब 16 वर्षों से बिहार की सत्ता में छोटे भाई की भूमिका का निर्वहन कर रही भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) इस बार येन केन प्रकारेण बिहार की सत्ता पर काबिज होने के लिए कमर कस चुकी है। बीते एक साल में शायद ही कोई हफ्ता होगा जब कोई केंद्रीय मंत्री बिहार में नहीं रहा होगा। हर हफ्ते राज्य में केंद्रीय मंत्रियों का दौरा लगा ही रहता है। इसके अलावा पहली बार राज्य सरकार में भाजपा के मंत्रियों की संख्या जनता दल (यूनाइटेड) के मंत्रियों की संख्या से ज्यादा है। यही नहीं, बीते एक साल में पांच बार प्रधानमंत्री बिहार का दौरा कर चुके हैं। प्रधानमंत्री जब भी बिहार आते हैं हजारों करोड़ रुपये की परियोजनाओं की सौगात दे जाते हैं। हालांकि विपक्षी पार्टियां राष्ट्रीय जनता दल (राजद) और कांग्रेस प्रधानमंत्री की घोषणाओं को ढपोरशंखी बताते हुए कहते हैं कि उन्होंने साल 2015 के विधानसभा चुनाव के दौरान आरा में सवा लाख करोड़ की आर्थिक सहायता देने की बात कही थी, आज तक नहीं दिया। बात बीते विधानसभा चुनाव की करें तो 2020 के चुनाव में 243 सदस्यीय बिहार विधानसभा में राष्ट्रीय जनता दल को सबसे अधिक 75 सीटें मिली थीं। दूसरे स्थान पर भारतीय जनता पार्टी रही जिसे 74 सीटों पर विजय मिली थी। बीते 20 वर्षों में सत्ता के लिए सबसे मुफीद रहे नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल (यूनाइटेड) को महज 43 सीटों पर संतोष करना पड़ा। इसी तरह कांग्रेस को 19, वाम दलों में भाकपा-2, माकपा-2 और भाकपा माले को 11, असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन को 6, जीतनराम मांझी की हिन्दुस्तान अवाम मोर्चा को 4, बहुजन समाज पार्टी को 1, अपने को 'मोदी का हनुमान' बतानेवाले चिराग पासवान की पार्टी लोक जनशक्ति पार्टी को 1, निर्दलीय सुमित कुमार सिंह को 1 और शेष 4 सीटें अन्य क्षेत्रीय दलों को मिली थी। लेकिन समय के साथ ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन के पांच और बसपा के 1 विधायक के पाला बदल लेने के कारण फिलहाल बिहार में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। फिलहाल उसके 80, राजद के 77 और जनता दल (यू) के 45 विधायक हैं। इनमें राजद के 4 विधायक तो तकनीकी रूप से ही राजद में बने हुए हैं। हकीकत में वे सरकार के साथ हो लिये हैं। इसी तरह कांग्रेस के 2 विधायक भी अंदरखाने पाला बदल चुके हैं। नीतीश कुमार नौवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री बने हैं। वह वर्ष 2000 में पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। हालांकि महज सात दिनों के लिए। इतनी बार और इतने लंबे समय तक मुख्यमंत्री बननेवाले वह बिहार के पहले राजनेता हैं। वैसे तो नीतीश की राजनीति लालू विरोध की रही है लेकिन इस दौर में दो बार 2013 और 2022 में वह राजद के समर्थन से भी मुख्यमंत्री बने हैं। इसीलिए तेजस्वी यादव उन्हें पलटू चाचा भी कहते हैं। चूंकि नीतीश के समर्थन के बिना बिहार में न तो भाजपा सत्ता की सीढ़ी तक पहुंचती है न ही राजद। इसलिए नीतीश दोनों दलों की मजबूरी हैं। कभी वह राजद के साथ मिलकर भाजपा को ढपोरशंखी और साम्प्रदायिक पार्टी बताते हैं तो कभी भाजपा से गलबहियां करके लालू के राज को जंगलराज बताकर लोगों से समर्थन मांग लेते हैं। सुविधा की सियासत के नीतीश माहिर खिलाड़ी हैं। बिहार की सियासत पर बारीक नजर रखनेवाले लोग बताते हैं कि नीतीश इस बार कठिन राजनीतिक चुनौती में फंस गए हैं। विधायकों की संख्या अधिक होने के कारण भाजपा इस बार स्वाभाविक तौर पर अधिक सीटों पर चुनाव लड़ना चाहेगी। दूसरे, इस चुनाव में नीतीश को भरे मन से चिराग की पार्टी के लिए भी प्रचार करना पड़ेगा। ज्ञात रहे कि 2020 के विधानसभा चुनाव में चिराग की लोजपा की वजह से ही नीतीश की जदयू को 78 से 43 सीटों पर सिमट जाना पड़ा था। नीतीश के लिए इस बार बड़ी चुनौती जनसुराज के संस्थापक और चुनाव लड़ाने-जिताने में माहिर प्रशांत किशोर बनेंगे। प्रशांत किशोर (पीके) कभी जदयू के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष थे। कई मौकों पर नीतीश कुमार ने यह खुलासा किया था कि केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के कहने पर उन्होंने प्रशांत किशोर को पार्टी का उपाध्यक्ष बनाया था। अब पीके ने घोषणा की है कि उनकी पार्टी 'जनसुराज' राज्य की सभी 243 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। पीके अपनी सभाओं में नीतीश और तेजस्वी पर ही निशाना साधते रहे हैं। इस बीच प्रशांत ने अपनी पार्टी 'जनसुराज' में पूर्व केंद्रीय मंत्री और जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष रह चुके रामचन्द्र प्रसाद सिंह (आरसीपी सिंह) की पार्टी 'आप सबकी आवाज' का विलय कराकर बड़ा दांव चल दिया है। रामचन्द्र प्रसाद सिंह भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी रहे हैं। वह नीतीश के गृह जिले नालंदा के ही मूल निवासी हैं और जाति से कुर्मी हैं। वे राजनीति में आने से पहले कई वर्षों तक बिहार के मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव रहे हैं। उन्हें नीतीश ही राजनीति में लेकर आये थे। कुछ वर्षों तक वे परोक्ष रूप से जदयू के फंड मैनेजर भी थे। बाद में खुश होकर नीतीश ने उन्हें राज्यसभा भेज दिया और पार्टी ही सौंप दी। मोदी -2 सरकार में रामचन्द्र प्रसाद सिंह इस्पात मंत्री थे। बाद में जदयू से अलग होने पर भाजपा में चले गए। अब चुनाव से ठीक पहले रामचन्द्र प्रसाद सिंह के भाजपा छोड़कर सक्रिय होने से जाहिर है नुकसान नीतीश का ही होगा। बिहार की राजनीति के जानकार पहले से ही 'जनसुराज' को भाजपा की बी टीम बताते रहे हैं। अब प्रशांत और आरसीपी दोनों के साथ आने से सबसे ज्यादा बेचैनी जदयू और उसके हितचिंतकों को ही है। तभी तो जदयू के मुख्य प्रवक्ता और पूर्व मंत्री नीरज कुमार पीके और आरसीपी दोनों को विषैला सांप बता रहे हैं। यही नहीं केंद्रीय मंत्री जीतनराम मांझी भी दोनों को विषाणु और कीटाणु कह रहे हैं। फिलहाल कहना जल्दीबाजी होगी कि पीके और आरसीपी की सक्रियता और हाथ मिलाने से फायदा भाजपा को होगा या राजद का। लेकिन इतना तय है कि नुकसान नीतीश और जदयू का ही होगा। इसके अलावा भारतीय पुलिस सेवा से इस्तीफा देकर सियासत में हाथ आजमाने उतरे शिवदीप लांडे भी 'हिंद सेना' बनाकर राज्य की सभी 243 सीटों पर उम्मीदवार उतारने पर आमादा हैं। लांडे की छवि ईमानदार प्रशासक की रही है। हालांकि वह महाराष्ट्र के मूल निवासी हैं। बिहार की सियासत में क्या गुल खिलाते हैं, यह समय बताएगा। दिक्कत महागठबंधन में भी कम नहीं है। कांग्रेस और कन्हैया कुमार के सक्रिय होने से राजद को पसीने छूट रहे हैं। उधर, निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव दुबारा से कांग्रेस में शामिल हो गए हैं। यह लालू की अनिच्छा के बावजूद हो रहा है। राहुल गांधी भी अपने पूरे लावलश्कर के साथ गाहेबगाहे बिहार घूम रहे हैं। वह पिछले पांच माह में चार बार बिहार का दौरा कर चुके हैं।

राजनीति की चाल में मात खा रहा है राष्ट्रहित

सुरेश गांधी

फिरहाल, पाकिस्तानी मीडिया में पहले राहुल गांधी की ओर से पूछा गया सवाल ट्रेंड में रहा...जिसमें उन्होंने अपने ही विदेश मंत्री से ये पूछा कि बताइए भारत के कितने लड़ाकू विमान मार गिराए गए हैं....रही सही कसर पवन खेड़ा ने तब पूरी कर दी जब उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर को सिंदूर का सौदा करार दिया...ये एक लाइन...सिंदूर का सौदा...पाकिस्तान के लिए ऑक्सीजन का काम कर गया...पवन खेड़ा का बयान हर पाकिस्तानी मीडिया ने हाथों हाथ लिया और नया प्रोपगेंडा शुरू कर दिया...ऐसे समय में जब भारत और पाकिस्तान दोनों देशों के डेलीगेशन दुनिया भर में जाकर अपनी बात कहने वाले हैं...उससे पहले अगर अपने ही देश में सेना के शौर्य और पराक्रम पर सवाल पूछा जाएगा...सरकार की नीयत पर सवाल उठाया जाएगा...तो क्या संदेश जाएगा ये समझना मुश्किल नहीं है...एक तरफ जहां कांग्रेस गलत पिच पर बैटिंग कर रही है...तो दूसरी तरफ बीजेपी की तरफ से पोस्टर वॉर के जरिये राहुल गांधी को आसिम मुनीर से कंपेयर किया जा रहा है...असदुद्दीन ओवैसी भी खूब चर्चा में हैं...पाकिस्तान में उनके बयानों से सदमा लगा हुआ है...फर्क यही है कि ओवैसी के बयान पाकिस्तान के नैरेटिव को तोड़ते दिखते हैं...जबकि कांग्रेस के बयान प्रोपगेंडों को हवा देने में मददगार साबित हो रहे हैं....अब सवाल है कि क्या सिंदूर का सौदा दुश्मन को फायदा पहुंचाने के इरादा है...सवाल ये कि भारत ने पाकिस्तान को जब घुसकर मारा है...फिर कांग्रेस को ये सिंदूर का सौदा क्यों नजर आ रहा है...सवाल ये भी कि मोदी से नफरत के चक्कर में कुछ नेता राष्ट्रहित और राष्ट्रविरोध का फर्क भूल गए है...बता दें, 7 मई को सरकार ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकी शिविरों को निशाना बनाया, जिसके बाद पाकिस्तान ने संघर्ष को और बढ़ा दिया. इसके बाद पाकिस्तान ने भारत के कई शहरों में ड्रोन और मिसाइलों से सैन्य और रिहायशी इलाकों को निशाना बनाया है। जवाब में भारत के ऑपरेशन सिंदूर ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों की रीढ़ तोड़ दी. दोनों ओर से की गई सैन्य कार्रवाइयों पर पूरी दुनिया की नजर थी....22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाकिस्तान के रिश्ते रसातल तक पहुंचे हैं. भारत सरकार ने पाकिस्तान को सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार ठहराया है. लेकिन ऑपरेशन सिंदूर से लेकर ऑल पार्टी डेलिगेशन तक...कांग्रेस लगातार 'पॉलिटिकल सीजफायर का उल्लंघन कर रही है...सेना के पराक्रम पर सवाल उठा रही है, ऑपरेशन सिंदूर को छिटपुट घटना बात रही है। जबकि आर्मी एअर डिफेंस के महानिदेशक ले. जनरल सुमेर इवान डीकुन्हा ने जो बातें बताई, उन्हें सुनकर आप चौंक जाएंगे। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान जवाबी कार्रवाई कैसे करेगा, इसकी सटीक सूचना हमारी फौज के पास थी, इसीलिए हर ड्रोन और मिसाइल को नाकाम कर गिरा दिया गया। हमारी फौज को पता था कि पाकिस्तान कितने ड्रोन भेजेगा और कहां से भेजेगा, ये भी पता था कि पाकिस्तान की वायु सेना डर के मारे अपने फाइटर और बमवर्षक विमान नहीं उड़ाएगी। हमारी सेना को पता था कि पाकिस्तान कौन सी मिसाइल से हमला करेगा, कहां निशाना लगाएगा। 8 मई से 10 मई के बीच रोज रात नौ बजे हमारे आसमान में पाकिस्तान की तरफ से भेजे गए सैकड़ों ड्रोन्स दिखाई देते थे और फिर हम देखते थे कि कैसे टिम टिम करके उन्हें आसमान में तबाह किया गया, ये कमाल हमारे एयर डिफेंस ने किया। एक-एक पाकिस्तानी ड्रोन को चुन-चुनकर सटीक निशाना लगाकर मार गिराया। इतना ही नहीं उन्होंने स्पष्ट शब्दों में ये खुलासा किया है कि पाकिस्तानी फौज अपना मुख्यालय भले ही रावलपिंडी से पेशावर या अफगानिस्तान या ईरान की सीमा तक ले जाए, वह भारत की सेना की मिसाइल्स की रेंज से बाहर नहीं जा सकता। उन्होंने कहा कि भारतीय सेना के पास ऐसे पर्याप्त हथियार हैं जिनसे वह पाकिस्तान के किसी भी कोने तक मार कर सकती है। इसके बावजूद महाराष्ट्र कांग्रेस विधायक विजय वडेट्टीवार ऑपरेशन सिंदूर की पारदर्शिता एवं चीनी ड्रोन और भारतीय मिसाइलों के इस्तेमाल पर सवाल उठाते हुए कहते फिर रहे है कि सरकार को नुकसान की जानकारी देनी चाहिए। फिरहाल, लेफ्टिनेंट जनरल डी कुन्हा की बात सुनकर ये तो साबित हो गया कि हमारी सेना पूरे विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। आधुनिक युद्धकला में हमारी बहादुर फौज का कोई मुकाबला नहीं। हमारी सेना को प्रधानमंत्री ने फ्री हैंड दिया इसीलिए वो खुलकर प्लान कर पाए और दुश्मन को तबाह कर पाए। सबसे बड़ी बात है कि हमारी सेनाओं की इंटेलिजेंस कमाल की थी। उन्हें सब पता था, पाकिस्तान में मौजूद आतंकी ठिकानों का सही पता मालूम था। पाकिस्तान कैसे जवाबी हमले करेगा, ये भी पता था। ड्रोन कहां से आएंगे, कितने आएंगे, ये भी अच्छी तरह मालूम था। पाकिस्तान डर के मारे अपने विमान नहीं उड़ाएगा, इसकी भी सूचना थी। हमारी सेना का लक्ष्य था, पहले पाकिस्तान का एयर डिफेंस सिस्टम उड़ाना, फिर उसके एयरबेस पर हमला करना। ये भी भारतीय सेना ने पहले से प्लान कर लिया था। हमारी सेना के बड़े जनरलों को बिलकुल पता था कि पाकिस्तानी फौज के जनरल्स का दिमाग कैसे काम करता है। इसीलिए भारतीय सेना का हर हमला सटीक और नियंत्रित था। एयर डिफेंस सिस्टम ऐसा था कि पाकिस्तान के एक-एक ड्रोन, एक-एक मिसाइल को नष्ट कर दिया। पुराने और नए सिस्टम के सम्मिश्रण से हमारी सेना ने साबित कर दिया कि रणनीति बनाने में उससे बेहतर कोई नहीं। आज पूरे देश को विश्वास है कि आने वाले किसी भी खतरे का मुकाबला करने के लिए भारतीय सेना पूरी तरह तैयार है, सक्षम है, तत्पर है. जब देश की बात हो...जब सीमा पर जवान सीना ताने खड़ा हो...जब आतंकी ठिकाने राख हो जाएं...... जब जवान खून बहा रहे हों...तब कोई कहे दृ "सबूत दो!" जब देश आतंक पर विजय पा रहा हो...तब कोई बोले "ये तो बस छिटपुट था!" क्या यही है राष्ट्रहित? तो फिर क्यों होती है सियासी तकरार? जबकि राष्ट्रहित कहता है सेना के साथ खड़े हो। आज देश पूछ रहा है, जब बात भारत की हो...जब सवाल सीमा की सुरक्षा का हो...तो क्या नेता राष्ट्र से ऊपर अपनी पार्टी देखेंगे? "राजनीति कल भी होगी, आज भी है, कल भी रहेगी... पर अगर राष्ट्र न रहा तो ये सियासत किसके लिए?" इस बात को समझना जरूरी है कि जब सीमा पर हमारे जवान अपने प्राणों को दांव पर लगाकर राष्ट्र की सुरक्षा सुनिश्चित कर रहे हों, तब देश के भीतर से सेना की कार्रवाई पर सवाल उठाना केवल सेना का ही नहीं, राष्ट्रीय एकता और आत्मबल का भी अपमान है। सबसे चिंताजनक बात यह रही कि कांग्रेस के बयान और पाकिस्तान सरकार की प्रतिक्रिया लगभग एक जैसी थी। पाकिस्तान के सूचना तंत्र ने कहा कि भारत की कार्रवाई में कोई खास नुकसान नहीं हुआ, और इधर कांग्रेस कह रही थी कि "ये तो बस छोटी सी कार्रवाई थी, प्रमाण दो।

जल, ज़मीन और मानव के लिए घातक होती ज़हरीली हरियाली

हरीश शिवनानी

मानसून ने देश में दस्तक दे दी है और पूरे भारत में पर्यावरण संरक्षण और हरियाली के नाम पर पौधरोपण का दौर भी शुरू हो गए हैं। हर वर्ष की तरह 'ग्रीन इंडिया', 'ग्रीन फलां स्टेट' के नाम पर निश्चित रूप से सैकड़ों करोड़ रुपए भी खर्च होंगे। हमारे देश में एक महत्वपूर्ण समस्या यह है कि पहले लापरवाही से पर्यावरण का अंधाधुंध दोहन करने और बाद में अति उत्साह में पर्यावरण संरक्षण के नाम पर ऐसी योजनाएं, परियोजनाएं बना दी जाती हैं जो कुछ समय बाद घातक साबित होने लगती हैं। ऐसे ही देश में वानिकी के नाम पर ऐसे विदेशी पेड़-पौधे रोपे दिए गए हैं जो भारत की जलवायु और यहाँ के पर्यावरण के बिलकुल अनुकूल नहीं है। भारत में ये विदेशी पेड़-पौधे घातक साबित होने लगे हैं। पिछले कुछ बरसों में अनेक राज्यों में अनियोजित तरीके से कोनोकार्पस के हजारों पेड़-पौधे लगा दिए गए हैं, जो हर तरह से जल, ज़मीन, जीव-जंतुओं के अलावा मानव स्वास्थ्य के लिए गंभीर हो गए हैं। राजधानी दिल्ली के अलावा अहमदाबाद में साबरमती रिवरफ्रंट, राजकोट में राम वन और वडोदरा में 'मिशन मिलियन ट्रीज़' के तहत वृक्षारोपण अभियान में 24,000 कोनोकार्पस पेड़ लगाए गए। भोपाल को खूबसूरत श्यामला हिल्स पर बने स्मार्ट सिटी पार्क के अलावा राजस्थान के डूंगरपुर और राजसमंद, जोधपुर, तमिलनाडु के चैन्नई, कोयंबटूर, आंध्रप्रदेश के काकीनाडा सहित अनेक शहरों में करोड़ों रुपए खर्च करके दक्षिण अफ्रीका की इस प्रजाति के पेड़ लगाए गए। कोनोकार्पस के पेड़ गहरे हरे रंग की चमकदार पत्तियों वाली एक सदाबहार वनस्पति प्रजाति है। कुछ वर्षों से इस पौधे को सरकारों के साथ-साथ निजी संस्थाओं द्वारा भी पसंद किया जा रहा है, क्योंकि यह तुरंत बढ़ता है, उच्च तापमान को सहन कर सकता है। यह एक ऐसा पौधा है जो भारत की शुष्क और तेज गर्मी को भी आसानी से झेल सकता है। इसे बढ़ने के लिए ताजे पानी की भी आवश्यकता नहीं होती है और यह फूल भी देता है। इसकी चमकदार हरे रंग की छायादार पत्तियां इसकी खूबसूरती है। कोनोकार्पस को चुने जाने का एक अन्य कारण यह भी रहा कि यह वृक्ष नालियों और सीवरेज के पानी से भी विकसित हो जाता है और कुछ महीनों में 20 मीटर की ऊंचाई तक बढ़ जाता है फिर कई तनों के माध्यम से फैल जाता है। रखरखाव भी आसान है तो इसकी लागत भी काफी कम है, जिससे यह बागवानी करने वालों और शहरी डिज़ाइनरों का पसंदीदा बन गया है। बावजूद इतनी विशेषताओं के, भारत के अनेक राज्यों में इस पर प्रतिबंध लगाने का तैयारी है क्योंकि ये पेड़ पर्यावरण और स्वास्थ्य के लिए गंभीर हानिकारक साबित हुए हैं। दरअसल इस प्रजाति के पेड़-पौधे लाभ की बजाए नुकसान बहुत पहुंचाते हैं। पानी की बहुत अधिक खपत करने वाली आक्रामक प्रजाति है और भूजल स्तर को भी प्रभावित करती है। परिणामस्वरूप भूजल भंडार पानी की कमी हो जाती है। इसकी जड़ें मिट्टी के नीचे गहराई तक जाती हैं जो जल निकासी पाइपों को भी अवरुद्ध कर देती हैं। यह पौधा सर्दियों में खूब फलता है और वर्ष में दो बार पराग करता है लेकिन इसके परागकण मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। इससे आसपास रहने वाली जनसंख्या में खांसी, जुकाम, अस्थमा, एलर्जी और सांस संबंधी संबंधी बीमारियां बढ़ने लगती हैं। इस पौधे पर किसी तरह का कोई फल नहीं लगता। सबसे बड़ी बात है कि ये चौबीसों घंटे कार्बन डाईऑक्साइड छोड़ते हैं जो मानव सहित जीव-जंतुओं और पर्यावरण के लिए बेहद हानिकारक है। पर्यावरणविदों की राय में यह पौधा सौंदर्यीकरण के अलावा पारिस्थितिकी तंत्र के लिए किसी भी तरह से उपयोगी नहीं है। इसमें कोई पक्षी घोंसला नहीं बनाते हैं। पशु भी इसे नहीं खा सकते। यह किसी भी तरह से जैव विविधता को समृद्ध करने में योगदान नहीं देता है। इस लिहाज से यह पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है। इसलिए इसके विरोध में स्वर मुखर होने लगे हैं। इसी वजह से कोनोकार्पस पौधा प्रकृति के लिए अभिशाप माना गया है। तेजी से बढ़ते ये पेड़ सीसीटीवी कैमरों, बिलबोर्ड, साइनेज, होर्डिंग्स, स्ट्रीट लाइट और बिजली के तारों को बाधित कर रहे थे। इस वजह से उन्हें बार-बार काटने की जरूरत पड़ती है। इससे होने वाले विनाशकारी प्रभावों को देखते हुए सबसे पहले तेलंगाना और फिर गुजरात और आंध्रप्रदेश ने कोनोकार्पस पर प्रतिबंध लगा दिया है। कोनोकार्पस के दुष्परिणामों को देख कर कई शहरों में इसे अब काटा जा रहा है। वर्ष 2023 में वडोदरा में 35,000 कोनोकार्पस पेड़ लगाए गए थे। अब उनको उन सभी को काटा जा रहा है। आंध्र प्रदेश की काकीनाडा स्मार्ट सिटी में लगाए गए 4,602 कोनोकार्पस पेड़ों को काटने का निर्णय किया गया। राजस्थान के डूंगरपुर में नगर परिषद ने ऐसे 5000 पौधों को कटवा दिया, जिन्हें उसने खुद लगवाया था।

गाँव-शहर के बच्चों को एक मंच पर लाने की ज़रूरत

प्रो. आरके जैन

अक्सर हम सोचते हैं कि शिक्षा सिर्फ किताबी ज्ञान तक सीमित है, पर क्या आपने कभी गौर किया है कि शिक्षा की सबसे बड़ी ताकत उसमें छिपी होती है कि वह हमें एक-दूसरे से जोड़ती है, अलग-अलग पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चों को साथ लाती है। पर आज का यथार्थ कुछ और ही कहता है। गाँव के बच्चे और शहर के बच्चे, दोनों की दुनिया अलग हो चुकी है। एक तरफ जहां शहर के बच्चे तकनीकी और आधुनिक सुविधाओं से लैस होते हैं, वहीं गांव के बच्चे अक्सर संसाधनों की कमी और अवसरों की अभाव में घिरे रहते हैं। क्या हम यही चाहते हैं? क्या हम नहीं चाहते कि शिक्षा सिर्फ पढ़ाई की किताबें ही नहीं, बल्कि जीवन के अनुभवों और संस्कृतियों का संगम भी हो? इसलिए 'साझा पाठशालाएँ' एक अति आवश्यक विचार है, जो इस असमानता की खाई को पाटने का सशक्त माध्यम बन सकता है। जब एक गाँव का बच्चा अपनी मिट्टी की सौंधी खुशबू लिए अपनी कहानियाँ सुनाता है और शहर का बच्चा अपनी चकाचौंध भरी दुनिया का अनुभव साझा करता है, तो यह पल सिर्फ दो बच्चों का मिलन नहीं, बल्कि दो अलग-अलग दुनियाओं का संगम होता है। यह संगम केवल शिक्षा को नहीं, बल्कि हमारे समाज को भी समृद्ध करता है। गांव और शहर के बच्चों के बीच की दीवारें केवल भौगोलिक नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक भी हैं। शहर के बच्चे अक्सर निजी स्कूलों, डिजिटल लाइब्रेरी, कोचिंग सेंटर और सांस्कृतिक गतिविधियों से लैस होते हैं। उनके पास इंटरनेट, लैपटॉप और वैश्विक मंचों तक पहुँच होती है। दूसरी ओर, गाँव के बच्चे सरकारी स्कूलों में टूटी बेंचों पर बैठकर, कई बार बिना शिक्षक के, या बिना बिजली के पढ़ाई करते हैं। यह असमानता केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहती; यह उनके सपनों, आत्मविश्वास और भविष्य को भी प्रभावित करती है। साझा पाठशालाओं इस खाई को पाटने का एक मौका देती हैं। यदि गाँव और शहर के बच्चे एक ही कक्षा में बैठकर एक-दूसरे से सीखें, तो न केवल उनकी शिक्षा का स्तर सुधरेगा, बल्कि वे एक-दूसरे की जिंदगी, चुनौतियों और सपनों को भी समझेंगे। एक शहर का बच्चा गाँव के बच्चे से खेती, प्रकृति और परंपराओं के बारे में सीख सकता है, जबकि गाँव का बच्चा तकनीक और वैश्विक दृष्टिकोण से परिचित हो सकता है। यह आदान-प्रदान दोनों को समृद्ध करता है और उनके बीच की दूरी को कम करता है। साझा पाठशालाएं केवल एक स्कूल भवन में बच्चों को एकत्र करने की बात नहीं हैं; यह एक सामाजिक क्रांति का विचार है। यह वह मंच है जहाँ बच्चे अपनी विभिन्नताओं को सेलिब्रेट करना सीखते हैं। जब एक गाँव का बच्चा अपनी लोककथा सुनाता है और शहर का बच्चा अपनी बनाई डिजिटल कहानी साझा करता है, तो वे एक-दूसरे की दुनिया में झाँकते हैं।

यह प्रक्रिया उनके पूर्वाग्रहों को तोड़ती है और उन्हें सहानुभूति, सहयोग और सम्मान की भावना सिखाती है। भारत जैसे देश में, जहाँ हर कुछ किलोमीटर पर भाषा, संस्कृति और परंपराएं बदल जाती हैं, साझा पाठशालाएं एकता की मिसाल बन सकती हैं। यहाँ का बच्चा न केवल अपनी किताबों से सीखता है, बल्कि अपने सहपाठी की जिंदगी से भी सीखता है।

नेता की मूंछ और सोच

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा

हर साल 26 जनवरी आती है और जाती है। झंडा ऊपर जाता है, नेता नीचे बैठते हैं, और जनता वहीं खड़ी रहती है-जहाँ पिछले साल खड़ी थी। सरकारी स्कूल का बच्चा ठिठुरता हुआ कविता पढ़ता है-"जन-गण-मन अधिनायक जय हे..." और पीछे से मास्टर साहब उसकी ऊँची आवाज पर गौरवान्वित होकर मोबाइल पर व्यस्त रहते हैं-"हाँ जी, हमने झंडा फहरवा दिया।" मोहल्ले का छुटभैया नेता बड़बड़ाता है-"फोटो में मैं कम दिखा, वो ज्यादा... अगली बार झंडे की डोरी मैं पकड़ूंगा।" झंडे की डोरी पकड़ना, जैसे देश की सत्ता पकड़ना हो। और जो झंडे को झुकाता है, वो खुद झुकने का आदी होता है। गली के नुक्कड़ पर टेढ़े माइक से बजता है-"भारत महान है।" पास ही पानवाला कहता है-"बिल्कुल! तभी तो हमारा देश हर साल से भी पिछड़ा महान बनता जा रहा है।" एक बच्चा पूछता है-"पापा, भारत कब सुपरपावर बनेगा?" बापू आँखें चुराकर कहते हैं-"जब नेता अंग्रेजी बोलना छोड़ देंगे और जनता हिन्दी समझना शुरू कर देगी।" नेताओं के भाषणों में 'विकास' इतना आता है जैसे हर मुहावरे में 'कबाड़ा' आ जाए। विकास शब्द का इतना विकास हुआ है कि अब वह नालियों में भी घुस गया है, और बाहर आने का नाम नहीं लेता। सरकारी अस्पताल में डॉक्टर साहब की कुर्सी खाली है, पर उनकी कुर्सी पर प्लास्टिक का फूल गुलदस्ते में सजा है। मरीज कराहता है-"डॉक्टर को बुलाओ।" नर्स कहती है-"वो दिल्ली गए हैं-रैली में, जनसेवा के लिए।" मरीज की हँसी छूट जाती है-"मुझे मार दो बहनजी, मगर ये मत कहो कि वो सेवा कर रहे हैं।" पास में बैठा मरीज कहता है-"सेवा अब स्लोगन है, इलाज तो अब ईश्वर भरोसे ही चलता है।" अस्पताल के बाहर लगे बोर्ड पर लिखा है-"जनकल्याण योजना के तहत मुफ्त इलाज।" अंदर मरीज की जेब में दवाई की पर्ची और जेब में सिर्फ खामोशी होती है। एक गाँव में पुलिया टूटी है। बच्चे पानी में कूदकर स्कूल जाते हैं, और अफसर साहब कहते हैं-"जल यात्रा से बच्चों में तैराक बनने का हुनर पैदा होगा।" गाँव वाले तालियाँ बजाते हैं, क्योंकि ये टेंडर पास करवाने की कला का सजीव प्रदर्शन है। प्रधानजी कहते हैं-"हमने प्रस्ताव भेजा है...पिछली बार भी भेजा था, पर रद्दी में चला गया।" एक पत्रकार सवाल करता है-"आप जनता की सेवा कब शुरू करेंगे?" प्रधान जी मुस्कराते हैं-"जनता के वोटों की सेवा तो हमने चुनाव में ही कर दी थी।" किसान आत्महत्या करता है। उसकी जेब से सुसाइड नोट नहीं, बैंक नोट का फार्म निकलता है। सरकार कहती है-"हम दुखी हैं।" फिर अगली सुबह अखबार में विज्ञापन छपता है-"हम किसानों के साथ हैं।"

महाभारत: हिमालय की चढ़ाई करते हुए द्रौपदी की मौत सबसे पहले क्यों हुई

जब पांडव द्रौपदी के साथ हिमालय की चढ़ाई करने लगे कि अब इसी रास्ते स्वर्ग तक पहुंचना है तो रास्ते में ही उनकी मृत्यु होती गई। हालांकि उन सभी ने ये सोचा था कि वो सशरीर वहां तक पहुंचेंगे। रास्ते में सबसे पहले द्रौपदी गिरीं और उनके प्राण पखेरू उड़ गए। तब पता लगा कि उन्होंने तीन बड़े पाप किए थे, इसलिए स्वर्ग के रास्ते में ही वह मृत्यु को प्राप्त हुईं। ये तीन बड़े पाप क्या थे।

दरअसल हस्तिनापुर में राजपाट करते हुए ये संकेत मिलने लगे थे कि अब युधिष्ठिर और बाकी पांडवों को राजपाट छोड़कर आध्यात्म के रास्ते पर जाने का समय आ गया है। कृष्ण के निधन ने पांडवों और द्रौपदी को झकझोर दिया था। लिहाजा उन्होंन तय कर लिया कि अब वो हिमालय की ओर जाएंगे और वहां स्वर्ग के रास्ते पर चढ़ाई करेंगे।

द्रौपदी लड़खड़ाई और गिर गई

इस रास्ते पर जब उन्होंने चढ़ाई शुरू की तो एक के बाद एक परेशानी आनी शुरू हो गई। ये रास्ता कतई आसान नहीं था। हिमालय के आगे के रास्ते पर सबसे पहले द्रौपदी लड़खड़ाईं। फिर गिरीं। पता लगा कि उनकी सांस जा चुकी है। अब वह सशरीर स्वर्ग नहीं पहुंचेंगी। तो ऐसा क्या हुआ था।

चूंकि युधिष्ठिर ही उनमें सबसे ज्यादा जानकार थे। धर्म को सबसे ज्यादा जानते थे। कर्म को जानते थे तो उन्हें पता लग गया कि ऐसा क्यों हुआ है। उन्होंने ही अपने भाइयों से बताया कि द्रौपदी अपने तीन बड़े पापों के कारण सबसे पहले उन लोगों का साथ छोड़ गईं। तो वो तीन पाप क्या थे। युधिष्ठिर इनके बारे में भी जानते थे। बेशक वो जीवन भर चुप रहे। इस बारे में कभी एक शब्द भी नहीं बोला लेकिन उस दिन उन्होंने पहली बार ये बताया कि आखिर उन सभी की पत्नी द्रौपदी ने कौन से तीन पाप कर डाले।

पहला पाप

द्रौपदी ने अर्जुन को अपने अन्य पतियों की तुलना में अधिक प्रेम और महत्व दिया था, जो धर्म के अनुसार अनुचित था। एक पत्नी का कर्तव्य सभी पतियों के प्रति समान भाव रखना था, लेकिन द्रौपदी ऐसा नहीं कर पाई। ये उनका सबसे बड़ा पाप था। वो अर्जुन को लेकर सबसे ज्यादा फिक्र करती थीं। किसी भी पति के साथ रहने पर भी उन्हें अर्जुन का ही खयाल रहता था। जब अर्जुन ने दूसरी शादियां कीं तो द्रौपदी सबसे ज्यादा विचलित और नाराज हुईं। ऐसा उन्होंने किसी और पांडवों की शादी पर नहीं किया।

दूसरा पाप

द्रौपदी को अपने रूप पर बहुत अहंकार था। वह हमेशा अपनी बुद्धिमत्ता और सौंदर्य पर गर्व करती थीं। ये उनका एक पाप था। इसे लेकर उन्होंने अपने स्वयंवर में कर्ण समेत कई राजाओं का अपमान किया।

द्रौपदी का सौंदर्य-गर्व उनकी पहचान का अंग था। वह जानती थीं कि वह अपूर्व सुंदर हैं। इसका उपयोग उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव के लिए भी किया। हालांकि महाभारत सीख देता है कि शारीरिक या बौद्धिक गुणों पर अत्यधिक गर्व मोक्ष के मार्ग में रुकावट बन सकता है। उनका अहंकार भी महाभारत में कई मौकों पर झलकता रहा।

द्रौपदी के स्वयंवर में शर्त थी कि कोई धनुर्विद्या में निपुण योद्धा मछली की आँख को निशाना लगाए। जब कर्ण (जो सूतपुत्र माने जाते थे) उठे, तो द्रौपदी ने स्पष्ट रूप से कहा, "मैं एक सूतपुत्र को वरमाला नहीं पहनाऊंगी।" ये उनके अहंकार का पहलू था, यहां द्रौपदी ने अपने राजकुलीन अभिमान और जातिगत दंभ को प्रकट किया।

तीसरा पाप

उन्होंने दुर्योधन का जिस तरह अपमान किया, वो वाकई गलत था और गलत तरीके से किया गया। द्रौपदी ने दुर्योधन का "अंधे का पुत्र अंधा" कहकर अपमान किया था, जिसके पाप का प्रभाव भी उसके जीवन में रहा। पांडवों के जीवन में इसके बाद ही कष्ट आने शुरू हुए। इसी वजह से उन्हें वनवास हुआ और इसकी परिणति महाभारत जैसे युद्ध के रूप में भी हुई।

एक राजकुमारी होने के नाते उसे इतना कठोर अपमान नहीं करना चाहिए था। इसी घटना ने दुर्योधन के मन में द्रौपदी और पांडवों के प्रति घृणा भर दी, जो चीरहरण और महाभारत युद्ध का एक कारण बना।

क्या द्रौपदी के पाप क्या बहुत ज्यादा थे

द्रौपदी के पाप (दोष) अन्य पांडवों की तुलना में अधिक थे, लेकिन उसकी मृत्यु सबसे पहले इसलिए हुई क्योंकि उसमें आसक्ति, पक्षपात और कुछ अहंकार जैसे दोष मौजूद थे, जो मोक्ष प्राप्ति में बाधक थे। हालांकि, यह नहीं कहा जा सकता कि उसके पाप "बहुत ज्यादा" थे।

सहदेव के पाप के बारे में युधिष्ठिर ने क्या बताया

इसके बाद रास्ते में सहदेव गिरे। तब भीम ने युधिष्ठिर से पूछा, माद्रीपुत्र सहदेव के अंदर तो ना किसी तरह का घमंड और ना उसने कभी हम लोगों की सेवा में कोई कोताही की तो फिर वो गिर गया। युधिष्ठिर ने जवाब दिया कि सहदेव का पाप ये था कि वो सोचते थे कि उनसे अधिक बुद्धिमान और कोई नहीं।

फिर नकुल का नंबर आया

उसके बाद नकुल गिरे। भीम ने फिर सवाल किया कि हमारा ये भाई तो कभी धर्म से अलग नहीं हुआ। हमेशा हमारी आज्ञा का पालन किया, फिर वो क्यों गिरे। अब युधिष्ठिर ने जवाब दिया, नकुल सोचते थे कि उन जैसा रूपवान कोई नहीं। इसी वजह से नकुल को अपने कर्मों का फल मिला है।

अर्जुन ने भी प्राण छोड़ा

सभी बचे पांडव शोकाकुल थे। सभी को लग रहा था कि पता नहीं कब किसका नंबर आ जाए। अब तो केवल युधिष्ठिर, अर्जुन और भीम ही बचे थे। कुछ देर जाने पर अर्जुन गिरे और प्राण छोड़ दिया। अब दुखी भीम ने पूछा – भाई युधिष्ठिर अब ऐसा क्यों हो गया। अर्जुन ने तो कभी झूठ नहीं बोला, फिर ये दशा क्यों हुई। युधिष्ठिर बोले, अर्जुन हमेशा घमंड किया करते थे कि एक ही दिन में सभी शत्रुओं का नाश कर देंगे, परंतु कभी ऐसा कर नहीं सके। घमंड ही उनका पाप था। इसके साथ साथ वह दूसरे धनुर्धरों का अनादर भी करते थे। ऐसा कहकर युधिष्ठिर आगे बढ़ गए।

आखिर में भीम गिरे

अब भीम भी जमीन पर गिर पड़े। गिरते गिरते बड़े भाई से पूछा, महाराज मैं भी गर पड़ा हूं। मैं हमेशा आपका प्रिय रहा। आखिर मेरी ये हालत क्यों हो गई। युधिष्ठिर बोले, तुम बहुत अधिक भोजन किया करते थे। हमेशा अपनी ताकत पर कुछ ज्यादा ही घमंड करते थे। अब युधिष्ठिर के साथ उनका कुत्ता ही बचा रह गया।

इंद्र रथ लेकर युधिष्ठिर को स्वर्ग ले जाने पहुंचे

तभी इंद्र वहां स्वर्ग से रथ के साथ पहुंचे। युधिष्ठिर से बोले, तुम मेरे रथ पर आ जाओ और सशरीर स्वर्ग पर चलो। तब दुखी युधिष्ठिर ने कहा, इंद्र मेरे सारे भाई और पत्नी मरकर यहां पड़े हुए हैं। मैं इनको छोड़कर कैसे जा सकता हूं। तब इंद्र ने कहा, ये लोग देह छोड़कर पहले ही स्वर्ग पहुंच चुके हैं। इसलिए धर्मराज आप मेरे साथ चलिए।

क्यों युधिष्ठिर इंद्र की शर्त पर अड़ गए

तब भी वह तैयार नहीं हुए। उन्होंने कहा, युधिष्ठिर बोले, यह कुत्ता मेरा भक्त है। मैं इसे भी अपने साथ ले जाना चाहता हूं, नहीं तो ये मेरी निर्दयता होगी।

तब इंद्र को युधिष्ठिर की बात माननी पड़ी

इंद्र ने फिर युधिष्ठिर को समझाने की कोशिश की कि कुत्ते को छोड़ दें लेकिन युधिष्ठिर नहीं माने। तब आखिरकार इंद्र को मानना पड़ा। और तभी कुत्ते की जगह भगवान धर्म प्रगट हो गए और युधिष्ठिर की तारीफ करते हुए बोले तुमने जिस तरह भक्त कुत्ते के लिए दया दिखाई। उससे तुमने साबित कर दिया कि तुम हर तरह से श्रेष्ठ हो और सशरीर स्वर्ग में पहुंचोगे। तब इंद्र उन्हें अपने रथ पर बिठाकर स्वर्ग ले गए। जहां पांडव पहले से मौजूद थे।

शू रैक की सही दिशा से बदल सकती है आपकी किस्मत!

घर में हर चीज़ का एक सही स्थान होता है। खासकर जब बात हो घर के मुख्य दरवाज़े के पास जूते-चप्पल रखने की, तो यह न सिर्फ सफाई से जुड़ा होता है, बल्कि ऊर्जा के प्रवाह पर भी असर डालता है। आजकल ज़्यादातर घर अपार्टमेंट में होते हैं, जहां मुख्य दरवाज़े के बाहर ही शू रैक रखने की व्यवस्था होती है। ऐसे में सवाल यह उठता है कि शू रैक कहां रखें ताकि घर में सकारात्मकता बनी रहे और किसी तरह की रुकावट न आए।

सबसे पहले यह समझना ज़रूरी है कि जूते-चप्पल हमारे लिए सिर्फ पहनने की चीज़ नहीं हैं, ये हमारे जीवन की दिशा और गति को भी दर्शाते हैं। हम इन्हें पहनकर कहीं जाते हैं, काम पर जाते हैं, दोस्तों से मिलने जाते हैं, मतलब ये हमारे चलने के साधन हैं। ऐसे में इनका वास्तु से जुड़ाव भी काफी मायने रखता है।

अगर आपने शू रैक को घर के दक्षिण दिशा में रखा है, खासकर मुख्य दरवाज़े के ठीक सामने, तो इससे रुकावटें आ सकती हैं। कहा जाता है कि दक्षिण दिशा स्थिरता और ठहराव की दिशा होती है। अगर यहीं पर आपके जूते-चप्पल जमा होंगे तो वह आपके जीवन की गति को रोक सकते हैं। आपको ऐसा लगेगा जैसे कुछ भी आगे नहीं बढ़ रहा, जैसे आपकी ज़िंदगी एक जगह अटक गई है।

सबसे अच्छी दिशा

वास्तु के अनुसार शू रैक रखने की सबसे अच्छी दिशा उत्तर या पूर्व है। इन दिशाओं में रखी गई चीज़ें हमारे नियंत्रण में रहती हैं। जब आप अपने जूते इन दिशाओं में रखते हैं तो न सिर्फ आपकी दिनचर्या में आसानी रहती है, बल्कि आप मानसिक रूप से भी हल्का महसूस करते हैं। आपको ऐसा लगेगा कि चीज़ें आपकी मर्ज़ी के हिसाब से हो रही हैं और आप बिना किसी अड़चन के आगे बढ़ पा रहे हैं।

हमेशा साफ हो शू रैक

शू रैक हमेशा साफ-सुथरा और व्यवस्थित होना चाहिए। उसमें पुराने, टूटे या फटे हुए जूते जमा न करें। कई बार हम नए जूते ले आते हैं, लेकिन पुराने वहीं पड़े रहते हैं। इससे नकारात्मक ऊर्जा बढ़ती है। कोशिश करें कि शू रैक को समय-समय पर साफ करें और बेकार चीज़ों को बाहर निकाल दें।

मुख्य दरवाजे पर जूते

मुख्य दरवाज़े के सामने जूते बिखरे हुए हों, तो यह न सिर्फ देखने में खराब लगता है, बल्कि घर में आने वाली ऊर्जा को भी प्रभावित करता है। दरवाज़ा केवल आने-जाने का रास्ता नहीं है, यह आपके जीवन में अवसरों का प्रवेश द्वार भी होता है। ऐसे में इसका साफ और व्यवस्थित रहना बहुत ज़रूरी है।

इस ज्येष्ठ अमावस्या पर करें राशि अनुसार दान, खुलेगा आपके बंद किस्मत का खुशहाली ताला!

हिंदू धर्म में ज्येष्ठ अमावस्या का दिन पितरों को समर्पित होता है। इस तिथि को आत्मिक शांति और दिव्य ऊर्जा से भरपूर माना जाता है। मान्यता है कि इस व्रत के पालन से सौभाग्य और सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है।इस बार ज्येष्ठ अमावस्या 26 मई को मनाई जाएगी। इस दिन तर्पण और पिंडदान करने से पूर्वजों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। अगर कोई व्यक्ति किसी कारणवश यह कर्म न कर पाए, तो कुछ राशि अनुसार दान के माध्यम से भी पितरों का आशीर्वाद पाया जा सकता है।

मेष – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन पानी, शरबत, ठंडी तासीर की चीजों का दान दिन दुखियो को करना चाहिए।

वृषभ – इस राशि के जातक को सोमवती (ज्येष्ठ) अमावस्या के दिन जरुरतमंद लोगों को यथा शक्ति अनुसार धन और अन्न का दान करना चाहिए।

मिथुन – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन गन्ने का रस और शीतल जल का दान करना चाहिए। इससे पितृ देवता प्रसन्न होते है।

कर्क – इस राशि के जातक को सोमवती (ज्येष्ठ) अमावस्या के दिन जरुरतमंद लोगों को सफेद खाद्य पदार्थों और यथासंभव धन का दान करना बेहद शुभ होता है।

सिंह – ज्येष्ठ माह कई अमावस्या के दिन इस राशि वाले जातक को ग्रिभो मे गुड़, चना, शहद का दान करना बहुत शुभ होता है। इस दान से पितृ का आर्शीवाद बना रहता है।

कन्या – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन घी में बने हरे भोज्य पदार्थ का दान करना काफ़ी शुभ रहता है।

तुला – इस राशि के जातक को सोमवती (ज्येष्ठ) अमावस्या के दिन ब्रह्माणों को भोजन कराएं और जरूरतमंदों को सफेद वस्तुओं का दान करना शुभ रहेगा।

वृश्चिक – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन पानी, गुड़, लाल कपड़े आदि का दान करने से पितृ को शांति मिलती है।

धनु – इस राशि के जातक को सोमवती (ज्येष्ठ) अमावस्या के दिन मिठाई, केला और पीले वस्त्रों का दान करना चाहिए। ऐसा करने से पितृ शुभ दृस्टि बनाते है।

मकर – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन पितृ को प्रसन्न करने के लिए काली उड़द, तिल आदि का दान करनस बेहद शुभ होता है।

कुंभ – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन धन और जूते-चप्पलों का दान करना बेहद शुभ होता है।

मीन – इस राशि के जातक को ज्येष्ठ अमावस्या के दिन शीतल जल, और पीले खाद्य पदार्थों का दान करना शुभ होता है।

कई साल से कर रहे हैं सरकारी नौकरी की तैयारी?

सरकारी नौकरी का मुख्य कारक कौन?

ज्योतिष के अनुसार सरकारी नौकरी दिलाने में सबसे प्रमुख भूमिका निभाता है शनि ग्रह। इसके अलावा राहु, केतु, सूर्य और मंगल भी अगर मजबूत स्थिति में हों, तो व्यक्ति को नौकरी में सफलता मिलती है। छठा भाव (रोज़गार, प्रतियोगिता) और ग्यारहवां भाव (लाभ, सफलता) नौकरी से जुड़े होते हैं। अगर इन भावों के स्वामी शुभ ग्रह हों और अच्छी दृष्टि प्राप्त हो, तो सरकारी नौकरी के योग बनते हैं।

कौन सी राशियां देती हैं नौकरी का सहारा?

अग्नि तत्व की राशियां: मेष, सिंह, धनु

पृथ्वी तत्व की राशियां: वृषभ, कन्या, मकर

ये 6 राशियां जब कुंडली में प्रभावशाली हो जाती हैं तो यह नौकरी दिलवाने में बड़ी सहायता करती हैं। अगर इनका संबंध नौकरी के भावों से हो, तो सरकारी नौकरी की संभावना बढ़ जाती है।

सरकारी नौकरी के खास योग कौन से हैं?

सूर्य या चंद्रमा में से कोई एक ग्रह अगर मजबूत स्थिति में हो और करियर भाव को प्रभावित कर रहा हो।

कुंडली में पंच महापुरुष योग में से कोई एक मौजूद हो सरकारी नौकरी मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

शनि की साढ़ेसाती या ढैय्या के दौरान अगर अन्य ग्रहों की स्थिति शुभ हो तो सरकारी नौकरी मिल सकती है।

अगर बृहस्पति बहुत अधिक मजबूत हो तो व्यक्ति स्वतंत्र कार्य करना पसंद करता है और नौकरी की इच्छा कम हो जाती है।

ग्रहण योग, गुरु चांडाल योग (गुरु-राहु, सूर्य-राहु, चंद्र-राहु) जैसे योग सरकारी नौकरी में रुकावट डाल सकते हैं।

जब कुंडली में शनि की स्थिति अनुकूल न हो तो भी नौकरी मिलने में परेशानी आती है।

सरकारी नौकरी पाने के उपाय क्या करें?

ध्यान रखें: उपाय तभी कारगर होंगे जब आपकी कुंडली में सरकारी नौकरी के योग मौजूद हों।

उपयोगी उपाय

रोज सुबह माता-पिता के चरण स्पर्श करें।

उगते हुए सूर्य को जल चढ़ाएं, खासतौर पर जब सूर्य लाल या नारंगी दिखाई दे।

सुबह और शाम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें, अगर ये कठिन लगे तो 27 बार सुबह और 27 बार शाम करें।

किसी अच्छे ज्योतिषी से सलाह लेकर नीलम या माणिक्य रत्न धारण करें।

हल्के लाल रंग के कपड़ों का अधिक प्रयोग करें।

ग्रीन प्लांट्स का वास्तु कनेक्शन: सही दिशा में रखें, बढ़ेगा धन और पॉजिटिव एनर्जी

आजकल लोग अपने घरों को सजाने के लिए तरह-तरह के ग्रीन प्लांट्स का इस्तेमाल करते हैं, ये न सिर्फ दिखने में सुंदर लगते हैं, बल्कि घर के वातावरण को भी ताज़ा और शांत बनाते हैं। पर क्या आपने कभी सोचा है कि इन्हें कहां रखा जाए, ताकि इनका असर सिर्फ सजावट तक सीमित न रहे? वास्तु शास्त्र के अनुसार, पौधों की दिशा भी आपके जीवन पर असर डाल सकती है खासकर आपकी कमाई और पैसे के प्रवाह पर।

कई लोग अपने घर में प्लांट्स को किसी भी कोने में रख देते हैं। अक्सर ये देखा गया है कि गमले साउथ यानी दक्षिण दिशा में रखे होते हैं, क्योंकि वहां धूप अच्छी मिलती है। लेकिन वास्तु के जानकार मानते हैं कि अगर ग्रीन प्लांट्स को गलत दिशा में रखा जाए, तो इसका असर आपके आर्थिक जीवन पर भी पड़ सकता है।

दक्षिण दिशा को ऊर्जा का प्रवेश द्वार कहा जाता है। इस दिशा से जुड़ी ऊर्जा अगर बाधित होती है, तो उसका असर धन के आगमन पर पड़ता है। जब कोई व्यक्ति अपने घर में दक्षिण दिशा में गमले रखता है, तो वह अनजाने में उस रास्ते को बंद कर रहा होता है जिससे सकारात्मक ऊर्जा और पैसा घर में प्रवेश करते हैं।

अब सवाल यह उठता है कि फिर प्लांट्स को कहां रखें? वास्तु के अनुसार, पूर्व दिशा यानी ईस्ट सबसे अच्छी मानी जाती है। इस दिशा में सूर्य की पहली किरणें आती हैं, जो न सिर्फ ऊर्जा देती हैं बल्कि सकारात्मकता भी लाती हैं। जब आप अपने पौधों को पूर्व दिशा में रखते हैं, तो ये न केवल अच्छे से बढ़ते हैं, बल्कि घर में ताजगी, शांति और समृद्धि भी लाते हैं।

बहुत से लोगों ने यह अनुभव किया है कि जब उन्होंने अपने ग्रीन प्लांट्स को दक्षिण दिशा से हटाकर पूर्व दिशा में रखा, तो कुछ ही समय में उनके जीवन में पैसे की स्थिति बेहतर होने लगी। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि ऊर्जा का बहाव खुल जाता है और घर में रुकावटें कम हो जाती हैं।

हालांकि यह बात पूरी तरह से वैज्ञानिक रूप से साबित नहीं की गई है, लेकिन वर्षों से लोग वास्तु के इन नियमों का पालन करते आ रहे हैं और इसका सकारात्मक असर महसूस भी करते हैं। तो अगर आपके घर में भी पौधे लगे हुए हैं और वे दक्षिण दिशा में हैं, तो उन्हें पूर्व दिशा में शिफ्ट कर दें। हो सकता है कि यही छोटा-सा बदलाव आपके जीवन में बड़ा फर्क लाए।

फिर स्क्रीन पर ताबड़तोड़ वापसी करने को तैयार सपना चौधरी

डांसर और अभिनेत्री के तौर पर पहचानी जाने वाली सपना चौधरी ने अपने फैंस को बहुत बड़ी खुशखबरी दी है। डांसर का एक नया गाना 'शीशा' जल्द रिलीज होने वाला है, जिसकी जानकारी सपना ने अपने सोशल मीडिया पर दी है। इसे सुन यूजर्स प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। आइए जानते हैं।

गाने के बारे में दी जानकारी

सपना चौधरी ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट शेयर किया है। इस पोस्ट में अभिनेत्री ने अपने नए एल्बम 'शीशा' का एलान किया है, जो जल्द रिलीज होने वाला है। इसमें सपना व्हाइट ड्रेस संग सिर पर क्राउन पहने दिख रही हैं, जिसमें वो परी जैसी लग रही हैं। इस गाने को राहुल भारद्वाज द्वारा गाया गया है और एल्बम का निर्देशन साहिल संधू ने किया है। इस एल्बम को देसी गीत बैनर के तले तैयार किया गया है।

यूजर्स ने दिए रिएक्शन

डांसर और अभिनेत्री सपना चौधरी के इस पोस्ट को देख इंस्टग्राम यूजर्स शानदार प्रतिक्रियाएं दे रहे हैं। एक यूजर ने कमेंट सेक्शन में लिखा, 'नए गाने की बधाई सपना। दूसरे यूजर ने सपना के लुक पर कहा कि वो बहुत खूबसूरत लग रही हैं। इसके अलावा एक अन्य यूजर ने लिखा कि सपना की झलक सबसे अलग।

सपना चौधरी के बारे में

सपना चौधरी टीवी रियलटी शो 'बिग बॉस 11' में प्रतिभागी रह चुकी हैं। इसके साथ ही वो अपने कई हरियाणवी गानों से दर्शकों के बीच काफी मशहूर हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध गानों में 'तेरी आंखों का काजल', 'चटक मटक' शामिल है। इसके अलावा वह भोजपुरी और पंजाबी इंडस्ट्री में भी काम कर चुकी हैं।

क्या अमिताभ बच्चन की जगह सलमान खान करेंगे 'केबीसी' होस्ट ?

केबीसी शो अपने अलग अंदाज और अमिताभ बच्चन की बेहतरीन होस्टिंग के लिए जाना जाता है। कई लोग यहां लाखों रुपये जीतने के मकसद से आते हैं और आखिरकार अमिताभ अपनी मेजबानी से उनका दिल जीत लेते हैं, लेकिन हाल ही में यह जानकारी सामने आई है कि केबीसी के सीजन से सलमान अमिताभ को रिप्लेस कर देंगे।

सलमान करेंगे केबीसी होस्ट ?

एक खबर के मुताबिक, सलमान खान प्रसिद्ध क्विज शो कौन बनेगा करोड़पति के नए होस्ट बन सकते हैं। सूत्रों के मुताबिक, सलमान चैनल के साथ बातचीत कर रहे हैं और डील लगभग पक्की हो चुकी है। हालांकि, अभी इसकी आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। पहले शाहरुख खान भी इस शो को होस्ट कर चुके हैं। अगर सब कुछ ठीक रहा, तो सलमान जल्द ही केबीसी में नजर आ सकते हैं।

सलमान खान का वर्कफ्रंट

सलमान खान आखिरी बार फिल्म 'सिकंदर' में नजर आए थे। इस फिल्म में उनके साथ पहली बार रश्मिका मंदाना नजर आईं। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस पर ठीक-ठाक चली। बहरहाल, कथित तौर पर अब सलमान 'टाइगर वर्सेज पठान' में नजर आ सकते हैं।

सलमान के घर के आस-पास मंडराना भी होगा मुश्किल, मुंबई पुलिस उठाने जा रही ये कदम

बीते दिनों बॉलीवुड एक्टर सलमान खान के घर में घुसने का प्रयास करने की हुईं दो अलग-अलग घटनाओं के बाद अब मुंबई पुलिस इस मामले में बड़ा एक्शन लेने की प्लानिंग कर रही है। मुंबई पुलिस के अधिकारी के मुताबिक, अब पुलिस सलमान के घर आने वालों की आते और जाते समय चेकिंग करने और मेहमानों पर कड़ी निगरानी रखने की तैयारी कर रही है। यही नहीं अब एक्टर

के घर के आस-पास भी नजर आने वालों पर पुलिस सख्त नजर रखेगी।

बिल्डिंग में रहने वालों से करानी होगी पहचान

पुलिस अधिकारी ने बताया कि हाल ही में हुई इन घटनाओं के बाद अब सलमान के बांद्रा स्थिति गैलेक्सी अपार्टमेंट में आने वालों की आते-जाते समय चेकिंग की जाएगी। साथ ही एक्टर की सुरक्षा भी बढ़ाए जाने की योजना बनाई जा रही है। अधिकारी ने कहा कि चूंकि यह एक निजी इमारत है, इसलिए हर आने वाले की जांच करना एक चुनौती हो सकती है। जानकारी ये भी आ रही है कि अब नए गेस्ट्स को बिल्डिंग में एंट्री करने के लिए बिल्डिंग के निवासियों से अपनी पहचान करानी होगी।

दो दिनों में दो घटनाओं के बाद सतर्क हुई पुलिस

जाहिर है कि बीते दिनों दो दिनों के अंदर दो बार सलमान खान के घर में घुसने का अंजान लोगों ने प्रयास किया। हालांकि, बिल्डिंग के सिक्योरिटी गार्ड ने उन्हें पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। इन घटनाओं के सामने आने के बाद ही पुलिस एक्टिव हुई है और सलमान की सुरक्षा को और भी पुख्ता करने की तैयारी में लगी है।

सलमान को मिली है Y+ कैटेगरी की सिक्योरिटी

पिछले साल अप्रैल में बिश्नोई गिरोह के सदस्यों द्वारा कथित तौर पर गैलेक्सी अपार्टमेंट के बाहर कई राउंड फायरिंग की गई थी। जिसके बाद ही सलमान को प्रदेश सरकार द्वारा Y+ कैटेगरी की सिक्योरिटी मिली हुई है। इसके बावजूद हुई इन घटनाओं ने सुरक्षा पर सवाल उठा दिए हैं।

एक-दूजे को पंच करते नजर आए ऋतिक रोशन-वेदांग रैना, क्या है पूरा माजरा

अभिनेता वेदांग रैना ने 6 साल बाद ऋतिक रोशन के साथ इतिहास दोहराया है। अभिनेता ने हाल ही में एक फिटनेस ब्रांड के लिए ऋतिक रोशन के साथ शूटिंग की थी और इंस्टाग्राम पर शूट की कुछ झलकियां साझा करते हुए, वेदांग ने याद किया कि कैसे उनका पहला मॉडलिंग असाइनमेंट भी 'कृष' अभिनेता के साथ ही था।

वेदांग का पोस्ट

वेदांग ने ऋतिक के साथ इंस्टाग्राम पर कुछ खास तस्वीरें शेयर कीं और कैप्शन में लिखा, 'असली फुल सर्कल पल। मेरा पहला मॉडलिंग गिग (और पहला पेचेक)। मैं कभी नहीं भूलूंगा कि मैं इसे लेकर कितना उत्साहित था। 6 साल बाद और शूटिंग के साथ @hrithikroshanसर फिर से। पहले भी फैनबॉय था और अब भी फैनबॉय है।'

सेलेब्स और फैंस के कमेंट्स

ओरी ने कमेंट में लिखा, '15 से 25 तक', वीर पहाड़िया ने कमेंट में इमोजी पोस्ट किया। एक्टर अक्षय शर्मा ने लाल दिल वाले इमोजी बनाए। वहीं एक फैन ने लिखा, 'आशा और प्रार्थना है कि आप दोनों को एक साथ किसी फिल्म में देखूं', एक और फैन ने लिखा, 'एक फ्रेम में दो खूबसूरत पुरुष।'

ऋतिक का वर्कफ्रंट

ऋतिक रोशन इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'वॉर 2' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। हाल ही में वार 2 का पोस्टर और टीजर रिलीज हुआ था, जो दर्शकों को बेहद पसंद आया। 'वॉर 2' के टीजर में ऋतिक के अलावा जूनियर एनटीआर का एक्शन और कियारा आडवाणी का बिकिनी लुक काफी चर्चा में रहा। यह फिल्म 14 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

कैसे हुई उर्फी की बटरफ्लाई ड्रेस तैयार, फिर से जीता फैंस का दिल, बोले- कान ने आपको मिस किया होगा

सोशल मीडिया सेंसेशन उर्फी जावेद ने आज अपना बटरफ्लाई ड्रेस लुक शेयर किया है, जो उनके प्रशंसकों को बेहद पसंद आ रहा है। उर्फी के इस लुक को देखने के बाद उनके फैंस का कहना है कि कान ने उन्हें जरूर मिस किया होगा।

उर्फी का नया लुक

उर्फी ने आज इंस्टाग्राम पर अपना लेटेस्ट लुक शेयर कर फैंस का दिल जीत लिया है। इस बार उर्फी ब्लैक रंग की वन साइड ऑफ शोल्डर ड्रेस के ऊपर ब्लू रंग की तितलियां उड़ती नजर आईं। हर बार उनका अनोखा लुक देख कर फैंस सरप्राइज हो जाते हैं। इस लुक के साथ उर्फी ने कैप्शन में लिखा, 'पोशाक के साथ कंपन नहीं है!'

फैंस के दिलचस्प कमेंट्स

उर्फी के इस लुक को उनके फैंस बेहद पसंद कर रहे हैं और लगातार अपनी राय शेयर कर रहे हैं। उर्फी

के एक फैन ने लिखा, 'बहुत सुंदर', एक और फैन ने लिखा, 'उफ्फ बहुत प्यारी ड्रेस', एक और फैन ने लिखा, 'वाह क्या ड्रेस है', एक और फैन ने लिखा, 'सुपर से ऊपर', एक और फैन ने लिखा, 'कान ने निश्चित रूप से आपको याद किया', एक और फैन ने लिखा, 'ड्रेस चाहे कैसी भी हो, लेकिन खूबसूरत दिल वाला खूबसूरत इंसान हर ड्रेस में अच्छा लगेगा।', एक और फैन ने लिखा, 'यह बहुत अच्छा है मैडम।'

कान में नहीं जा पाईं उर्फी

उर्फी ने हाल ही में बताया था कि उनका वीजा रिजेक्ट हो गया था, जिस वजह से वह कान में शामिल नहीं हो पाईं। जिस ड्रेस को उर्फी कान में पहनने वाली थीं, उसके साथ उन्होंने एक पोस्ट शेयर किया और लिखा, 'यह कान रेड कार्पेट आउटफिट होना चाहिए था। यह अभी भी पूरा नहीं हुआ है, थोड़े जल्दी जल्दी में बनाया था, लेकिन अच्छा लग रहा है। टीम को धन्यवाद इस संगठन के लिए दिन-रात काम करने के लिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत करने के लिए कि सब कुछ सुचारू था।'

कास्टिंग काउच पर बोलीं सोफी चौधरी, उस वक्त नहीं समझ पाती थी उनकी बातें और इरादे

बॉलीवुड इंडस्ट्री की कई ऐसी सच्चाईयां हैं जिन पर बात नहीं होती है। ऐसी ही बॉलीवुड की एक सच्चाई है कास्टिंग काउच की। कई कलाकारों ने गाहे बगाहे इस पर बात की है।

अब एक्ट्रेस और गायिका सोफी चौधरी ने इस पर बात की है। उन्होंने इंडस्ट्री में अपने शुरुआती दिनों के बारे में बात की है। उन्होंने बताया है कि लोग कैसे उनसे समझौता करने के लिए कह रहे थे।

उस वक्त समझ नहीं आती थी बात

सोफी ने बताया कि उन्होंने एक संगीत करियर के लिए बॉलीवुड में प्रवेश किया। वह अभिनय भी करना चाहती थीं। वह अपनी मां के साथ लोगों के साथ मिलने जातीं थीं, लेकिन उन्हें ऐसी चीजें सुनने को मिलीं कि जिन्होंने उन्हें असहज कर दिया। सोफी के मुताबिक कुछ लोग बहुत अच्छे थे लेकिन कुछ लोगों ने ऐसी बातें कहीं जो उन्हें उस वक्त समझ में नहीं आईं।

लोग कहते थे समझौता करना होगा

सोफी ने बताया 'उनकी मां इस बात को लेकर अब मजाक उड़ाती हैं। वह कहती हैं कि कैसे लोग उनसे कहते थे कि समझौता करना होगा। उस समय, हमें नहीं पता था कि इसका क्या मतलब है। समय के साथ उन शब्दों के पीछे छिपे असली इरादों का पता चला। इन्हीं मांगों की वजह से हमें कई अहम मौकों से दूर रहना पड़ा।'

लोग फायदा उठाना चाहते हैं

सोफी ने साफ लफ्जों में इंडस्ट्री के कुछ लोगों को बारे में बताया 'अचानक वे आपसे अक्सर मिलना चाहते हैं। वह कहते हैं कि मैं अपनी नायिका को जानना चाहता हूं। वे गहरे रिश्ते के बारे में बात करेंगे और बताएंगे कि उन्हें आपकी कंपनी पसंद है। लेकिन जल्द ही, आपको एहसास होगा कि कोई फिल्म नहीं है। वे बस आपका समय बर्बाद कर रहे हैं।'

दोस्ती से दरवाजे नहीं खुलते

स्क्रीन से बात करते हुए सोफी ने कहा 'करण जौहर, वरुण धवन और मनीष मल्होत्रा जैसे जाने-माने दोस्त होने के बावजूद वे रिश्ते कभी भी पेशेवर में तब्दील नहीं हुए। लोग मानते हैं कि मैं उन्हें जानती हूं, इसलिए उन्होंने मेरी मदद की है। लेकिन ऐसा कभी किसी ने नहीं किया। दोस्ती से इस इंडस्ट्री में अपने आप दरवाजे नहीं खुलते। यह एक मिथक है'।

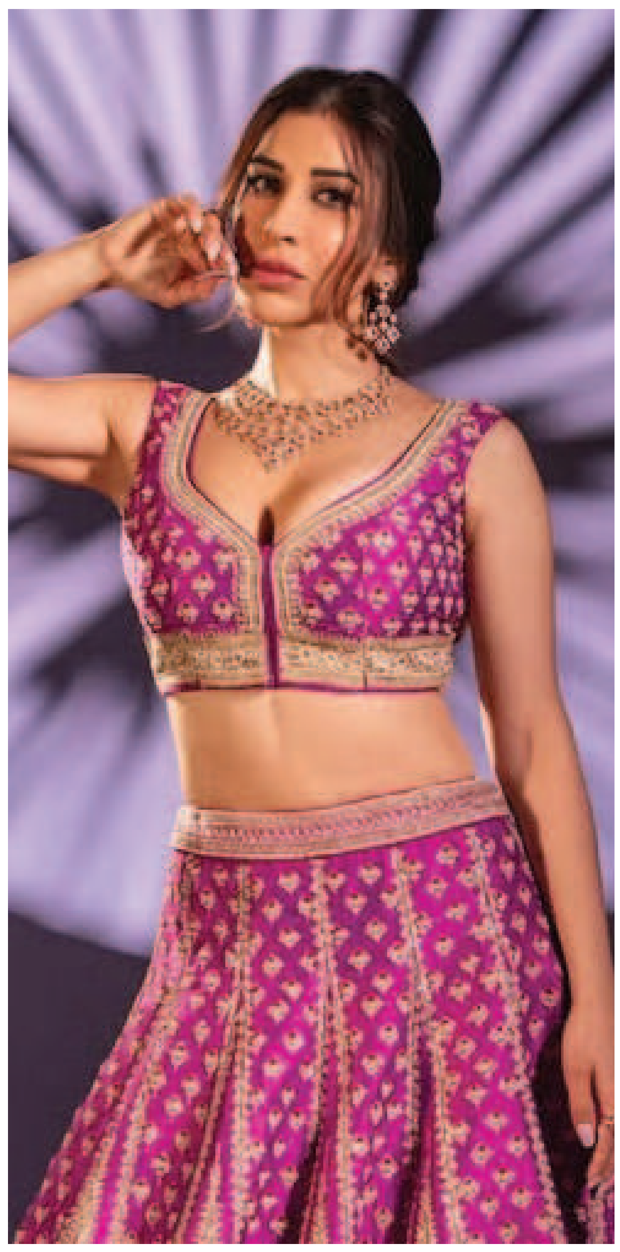

सॉसर हैट में स्टाइलिश नजर आईं जान्हवी कपूर ऐश्वर्या राय बच्चन को मिला बेटी आराध्या का साथ

रिया कपूर ने आज अपने सोशल मीडिया हैंडल पर जान्हवी कपूर का लेटेस्ट लुक शेयर किया है, जिसमें वह 1987 के ड्रेस में नजर आईं। वहीं ऐश्वर्या राय बच्चन का लेटेस्ट लुक भी हर बार की तरह स्टाइलिश दिखा। इस दौरान ऐश्वर्या को उनकी बेटी आराध्या का साथ मिला।

रिया का इंस्टाग्राम पोस्ट

जान्हवी कपूर इन दिनों फ्रांस में कान्स में शिरकत कर रही हैं। वहां से उनके लगातार कई लुक दर्शकों का दिल जीत चुके हैं। वहीं आज उनका एक और कान लुक सामने आया है, जो आपको साल 1987 और 1991 के फैशन स्टाइल के बीच लेकर जाएगा। रिया ने इंस्टाग्राम पर जान्हवी का लेटेस्ट लुक शेयर किया 1987 से एक मूर्तिकला सॉसर टोपी और 1989 से एक मखमल जैकेट की विशेषता वाले एक पहनावे में यवेस सेंट लॉरेंट के मेरे पसंदीदा वर्षों को श्रद्धांजलि अर्पित करना।

किस साल का है जान्हवी का यह खास लुक

रिया ने इस पोस्ट के जरिए यह भी बताया कि जान्हवी का यह लुक किस साल के बीच का है। रिया ने इंस्टाग्राम पर आगे लिखा, 'हमने इसे 1987 और 1991 के बीच यवेस के काव्य युग से प्रेरित एक पारदर्शी रेशम शिफॉन स्कर्ट के साथ जोड़ा है - जिसे अनामिका खन्ना ने कस्टम बनाया है - और चोपार्ड के सबसे उत्तम पीले हीरे के साथ लुक को पूरा किया है।' जान्हवी कपूर के इस लेटेस्ट लुक को सेलेब्स और फैंस बेहद पसंद कर रहे हैं। भूमि पेडनेकर ने लिखा, 'लव इट', महीप कपूर ने लिखा, 'स्टनिंग'। वहीं जान्हवी के कई फैंस ने फायर और दिल वाले इमोजी बरसाए हैं।

जीनत अमान के स्टारडम करियर से बेटे जहान ने लिया सबक, एक्टिंग से हटकर चुना करियर

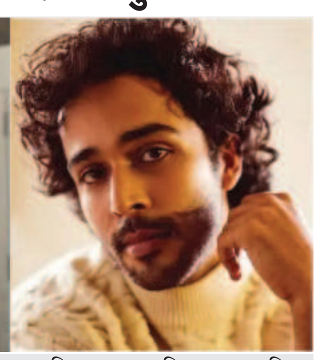

जीनत अमान 70-80 के दशक में चर्चित अभिनेत्रियों में शुमार थीं। अब एक्ट्रेस जीनत अमान और मजहर खान के बेटे जहान खान ने बताया कि वह लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करते हैं। आइए जानते हैं उन्होंने क्या कहा।

16 की उम्र से संगीत में रुचि

हाल ही में वोग को दिए इंटरव्यू में अभिनेत्री जीनत अमान के बेटे जहान खान ने स्टारकिड होने के अनुभवों को साझा किया है। जहान ने बताया कि उन्होंने स्टारडम और लाइमलाइट से कोसों दूर जाकर अपने करियर का चुनाव किया। उन्होंने कहा, 'मैंने सोलह साल की उम्र में खुद को गिटार बजाना सिखाया और उसमें माहिर बनाया। लेकिन मेरे अंदर कुछ अलग ही जुनून उठा, तो मैं गानों को कवर करने के बजाय उसके मूल धुन बनाने में दिलचस्पी लेने लगा।' साल 2019 से उन्होंने अपना म्यूजिक का करियर शुरू किया और आज वो एक संगीतकार और शेफ के रूप में जाने जाते हैं।

जब जहान को अपनी मां के प्रभाव के बारे में पता चला

आगे बातचीत में जहान खान ने बताया कि जब वो छोटे थे, तो उनकी मां जहां कहीं भी जाती थी उन्हें खूब अटेंशन मिलता था। ये बातें पहले जहान को सामान्य लगती थीं, लेकिन बड़े होकर उन्हें पता चला कि ये सामान्य बात नहीं थी। आगे बातचीत में जहान ने बताया कि वो 20 साल की उम्र से ही अपनी मां के साथ यात्रा करने लगे थे, फिर उन्हें एहसास हुआ कि स्टार होना आसान नहीं है।

मां की जिंदगी से लिया सबक

लाइमलाइट से सराबोर अपनी मां जीनत अमान की जिंदगी देख जहान खान ने इन सबसे अपने आप को दूर रखा और उन्होंने अभिनय से हटकर अपना रास्ता बनाने पर काम किया।

विराट-रोहित की अनुपस्थिति कठिन होगी, लेकिन...; गंभीर ने उनके बिना सीरीज खेलने पर दिया बयान

भारतीय टीम के मुख्य कोच गौतम गंभीर ने इस बात की स्वीकार किया है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा की अनुपस्थिति टीम के लिए चुनौतीपूर्ण होगी, लेकिन इन दोनों खिलाड़ियों के टेस्ट से संन्यास ने अन्य लोगों के लिए दरवाजे खोल दिए हैं। कोहली और रोहित ने इस महीने एक सप्ताह के अंत लाल गेंद के प्रारूप को अलविदा कह दिया था। इन दोनों ने उस वक्त यह फैसला लिया जब भारत को अगले महीने पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए इंग्लैंड का दौरा करना है।

माना जा रहा है कि इंग्लैंड दौरे के लिए शनिवार को मुंबई में टीम की घोषणा की जाएगी। गंभीर ने कहा, मुझे लगता है कि आपको कब करियर शुरू करना है और कब इसे समाप्त करना है, यह किसी का भी व्यक्तिगत फैसला है। इसमें दखल देने का किसी का भी अधिकार नहीं है, चाहे वो कोच हो या चयनकर्ता या देश में किसी को भी किसी खिलाड़ी से यह कहने का अधिकार नहीं है उसे कब संन्यास लेना है और नहीं लेना है।

'अन्य लोगों को मिलेंगे मौके'

रोहित के संन्यास लेने से अब भारत को नए टेस्ट कप्तान की तलाश है। साथ ही टीम में दो अनुभवी बल्लेबाज नहीं होंगे और गंभीर ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि इस कमी को पूरा करना आसान नहीं होगा। गंभीर ने कहा, हां, हम दो ऐसे सीनियर खिलाड़ियों के बिना उतरेंगे जिन्हें काफी अनुभव है और कई बार मुझे लगता है कि यह अन्य लोगों के लिए अवसर है जो जिम्मेदारी लेना चाहते हैं। हां, यह दौरा कठिन होगा, लेकिन कई लोग हैं जो जिम्मेदारी उठा सकते हैं। ऐसा ही सवाल मुझसे चैंपियंस ट्रॉफी से पहले भी पूछा गया था।

गंभीर ने कहा, जब बुमराह चैंपियंस ट्रॉफी में नहीं थे और तब भी मैंने यही चीज कही थी कि किसी खिलाड़ी के बाहर होने से अन्य खिलाड़ी के लिए अवसर खुल सकते हैं जो अपने देश के लिए विशेष करना चाहता है। उम्मीद है कि कई अन्य खिलाड़ी भी होंगे जो अवसर मिलने का इंतजार कर रहे हैं।

वनडे विश्व कप में रोहित-कोहली के खेलने पर क्या बोले गंभीर?

कोहली और रोहित ने टेस्ट और टी20 अंतरराष्ट्रीय से संन्यास ले लिया है, लेकिन वे भारत के लिए वनडे में खेलते रहेंगे। यह पूछे जाने पर कि क्या रोहित और कोहली 2027 वनडे विश्व कप के लिए टीम में जगह बना पाएंगे? इस पर कोच ने कहा, देखिए इसमें अभी काफी समय है। वनडे विश्व कप से पहले हमारे सामने टी20 विश्व कप की चुनौती है और यह एक बड़ा टूर्नामेंट होगा जिसे भारत में फरवरी-मार्च में होना है। फिलहाल हमारा सारा ध्यान इसी पर है और इंग्लैंड दौरे के बाद टी20 विश्व कप पर ध्यान रहेगा। नवंबर-दिसंबर 2027 में अभी भी ढाई साल देरी है। सबसे अहम बात यह है कि मैंने हमेशा कहा है कि अगर आप प्रदर्शन कर रहे हैं, तो उम्र महज एक नंबर है।

गिल टेस्ट कप्तान बनने की रेस में सबसे आगे बुमराह फिटनेस की वजह से पिछड़ सकते हैं

दाएं हाथ के बल्लेबाज शुभमन गिल को टेस्ट में भारतीय टीम का कप्तान बनाया जा सकता है। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने 7 मई और विराट कोहली ने 12 मई को टेस्ट से संन्यास ले लिया था। उनके रिटायरमेंट से टीम में लीडरशिप को लेकर कयास लगाए जा रहे हैं।

गिल कप्तान बनने की रेस में सबसे आगे हैं। उनके अलावा, जसप्रीत बुमराह, केएल राहुल और ऋषभ पंत भी कप्तानी की रेस में बने हुए हैं। पंत अगर कप्तान नहीं बनते हैं तो उन्हें उप कप्तान बनाया जा सकता है। सिलेक्शन कमेटी शनिवार, 24 मई को इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टेस्ट टीम का ऐलान कर सकती है। यह दौरा 20 जून से शुरू होगा। भारत को वहां 5 टेस्ट की सीरीज खेली जाएगी।

शुभमन कप्तानी की रेस में सबसे आगे

शुभमन कप्तानी की रेस में बुमराह से आगे चल रहे हैं। वे वनडे और टी-20 में टीम की कप्तानी कर चुके हैं। युवा बैटर्स में यशस्वी, पंत और शुभमन ही फिलहाल परमानेंट नजर आते हैं। शुभमन 25 साल के हैं और लगभग इसी उम्र में विराट ने भी कप्तानी संभाली थी। अगर शुभमन अभी कप्तान नहीं भी बने तो टीम उन्हें उप कप्तान बनाकर आगे के लिए तैयार कर सकती है। पिछले 5 सालों में दुनियाभर की पिचें बैटिंग के लिए मुश्किल रहीं। इसके बावजूद शुभमन ने बेहतरीन बैटिंग करते हुए 5 शतक लगाए हैं।

बुमराह बड़े दावेदार, फिटनेस परेशानी

जसप्रीत बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर 2 टेस्ट में कप्तानी की। पर्थ में टीम को जीत मिली, लेकिन सिडनी टेस्ट ऑस्ट्रेलिया ने जीत लिया। मुकाबले की पहली पारी में ही बुमराह इंजर्ड हो गए, उन्हें बैक स्पास्म की शिकायत हुई। जिसके बाद वह मैच में दोबारा बॉलिंग नहीं कर सके, इस कारण भारत दूसरी पारी में दबाव भी नहीं बना सका।

बुमराह अक्सर फिटनेस से जूझते नजर आए हैं, 2022 में आखिरी बार इंजर्ड होने के बाद वह करीब 15 महीने तक क्रिकेट से दूर रहे थे। उन्हें लंबी टेस्ट सीरीज के दौरान 1-2 मैच का रेस्ट देना भी जरूरी होता है। भारत में तो जीतने के लिए बुमराह का सभी मैच खेलना जरूरी भी नहीं। इसलिए उनका परमानेंट कप्तान बनना मुश्किल है।

फिर भी अगर बुमराह कप्तान बने तो टीम को 1 या 2 उप कप्तान बनाने होंगे, जो बुमराह की गैर मौजूदगी में जिम्मेदारी संभालते रहें। हालांकि, मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, बुमराह ने फिटनेस का हवाला देते हुए कप्तानी करने से मना कर दिया है। उनका इंग्लैंड में सभी मैच खेलना भी मुश्किल है।

अभी सिर्फ आईपीएल पर ध्यान लगा रहे हैं साई सुदर्शन इंग्लैंड दौरे के लिए चयन पर फोकस नहीं

आईपीएल 2025 में गुजरात टाइटंस की टीम का शानदार प्रदर्शन जारी है। टीम फिलहाल अंक तालिका में शीर्ष पर है। इस टीम के लिए एक और खुशखबरी यह है कि कप्तान शुभमन गिल को टेस्ट प्रारूप में भारतीय टीम का कप्तान बनाया जा सकता है। इसके अलावा साई सुदर्शन को भी इंग्लैंड दौरे के लिए टीम में चुना जा सकता है। सुदर्शन को इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय-ए टीम में भी शामिल किया गया है।

सुदर्शन इंग्लैंड दौरे के लिये भारत ए टीम में चयन से खुश हैं, लेकिन फिलहाल उनका पूरा फोकस आईपीएल क्वालिफायर और फाइनल पर टिका है। सर्रे के लिए खेलकर एक शतक जमा चुके 23 वर्ष के सुदर्शन हाल फिलहाल में शानदार फॉर्म में रहे हैं और खूब रन बना रहे हैं। उन्होंने गुरुवार को मीडिया से कहा, 'मानसिक तौर पर पहले हमें आईपीएल पर फोकस करना है। एक बार वह खत्म हो जाए फिर भारत ए दौरे के बारे में सोचेंगे, लेकिन मुझे खुशी है कि यह मौका मिला और मुझे यकीन है कि प्रदर्शन अच्छा रहेगा।'

अभी तक 13 मैचों में 638 रन बनाकर आरेंज कैप की दौड़ में शीर्ष पर काबिज सुदर्शन ने कहा, 'इस समय सबसे अहम शीर्ष दो में रहना है ताकि हमें अतिरिक्त मौका (दूसरा क्वालीफायर खेलने का) मिल सके।' उन्होंने कहा, 'फोकस उसी पर है। इन 13 मैचों में काफी कुछ सीखा है और कमियों पर मेहनत करने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। हम प्लेऑफ के लिए पूरी तरह से तैयार हैं।'

सुदर्शन इस सीजन गजब का प्रदर्शन किया है और 600 से ज्यादा रन बना चुके हैं। उन्होंने 2022 में आईपीएल डेब्यू किया था और तब से चार सीजन में दो बार 500 से ज्यादा रन बना चुके हैं। विराट कोहली मौजूदा समय में भारत और आईपीएल के सबसे दिग्गज बल्लेबाज माने जाते हैं।

हालांकि, कोहली को भी दो बार आईपीएल में 500+ का आंकड़ा पार करने में छह साल लग गए थे। इस सीजन अब तक वह 13 मैचों में 53 की औसत और 156 के स्ट्राइक रेट से 638 रन बना चुके हैं। इसमें एक शतक और पांच अर्धशतक शामिल है। अभी यह सीजन खत्म नहीं हुआ है और गुजरात की टीम प्लेऑफ में पहुंच चुकी है। ऐसे में सुदर्शन के पास इस आंकड़े को और आगे ले जाने का मौका है।

डब्ल्यूटीसी फाइनल में एक्शन में होंगे 2 भारतीय ऑस्ट्रेलिया-द. अफ्रीका के क्रिकेटरों पर होगी पैनी नजर

टीम इंडिया भले ही विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल में नहीं पहुंच पाई हो, लेकिन पूर्व तेज गेंदबाज जवागल श्रीनाथ मैच रैफरी की भूमिका में भारत की मौजूदगी दर्ज कराएंगे। उनके अलावा नितिन मेनन चौथे अंपायर के तौर पर मैच में दिखेंगे। इन दोनों की नजरें फाइनल में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका के खिलाड़ियों पर होंगी और गलती करने पर इनसे बचना आसान नहीं होगा। आईसीसी ने शुक्रवार को इसकी घोषणा की। फाइनल 11 जून से ऐतिहासिक लॉर्ड्स के मैदान पर खेला जाएगा।

आईसीसी इंग्लैंड के रिचर्ड इलिंगवर्थ और न्यूजीलैंड के क्रिस गाफाने लार्ड्स पर होने

वाले डब्ल्यूटीसी फाइनल में मैदानी अंपायर होंगे। ऑस्ट्रेलिया गत चैंपियन भी है, जबकि दक्षिण अफ्रीका की टीम पहली बार फाइनल में पहुंची है। आईसीसी के कई महत्वपूर्ण टूर्नामेंट के फाइनल में अंपायरिंग कर चुके इंग्लैंड के रिचर्ड केटलबोरो को टीवी अंपायर नियुक्त किया गया। वह डब्ल्यूटीसी 2021 फाइनल में भी इसी भूमिका में थे।

मेनन 2021 में आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप फाइनल में टीवी अंपायर थे, उन्हें इस मुकाबले के लिए चौथा अंपायर बनाया गया है। इलिंगवर्थ तीनों डब्ल्यूटीसी फाइनल में मैदानी अंपायर के तौर पर इतिहास रचेंगे। भारतीय टीम पहले दो डब्ल्यूटीसी चक्र के फाइनल में पहुंची थी लेकिन दोनों दफा क्रमशः न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया की चुनौती पार नहीं कर सकी।

आईसीसी चेयरमैन जय शाह ने नियुक्त अधिकारियों के अनुभव और योग्यता की सराहना की और उनके प्रदर्शन पर भरोसा व्यक्त किया। आईसीसी की विज्ञप्ति में शाह ने कहा, 'हमें लॉर्ड्स में आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल के लिए मैच अधिकारियों की एक अनुभवी टीम की घोषणा करते हुए खुशी हो रही है जो दुनिया भर में खेले जाने वाले टेस्ट मैचों के प्रतिस्पर्धी दो साल के चक्र का समापन है।'

सिर स्थिर नहीं, बायां कंधा बहुत खुल रहा, योगराज सिंह ने कहा- पांच मिनट में ऋषभ पंत की खामियां दूर कर दूंगा

ऋषभ पंत के लिए आईपीएल 2025 कुछ खास नहीं रहा। उन्हें लखनऊ सुपर जाएंट्स ने बहुत उम्मीदों के साथ 27 करोड़ रुपये में खरीदा था, लेकिन न तो उनका बल्ला चला और अंजाम यह हुआ कि टीम प्लेऑफ की दौड़ से बाहर हो गई। पंत ने इस सीजन अब तक 11 पारियों में 12.27 की औसत और 100 के स्ट्राइक रेट से 135 रन बनाए हैं। इसमें सिर्फ एक अर्धशतक शामिल है। बाकी की 10 पारियों में उनका उच्चतम स्कोर 21 रन रहा है। भारत के पूर्व क्रिकेटर और युवराज सिंह के पिता योगराज सिंह ने पंत की तकनीक में कुछ खामियां देखी हैं और उन्होंने कहा कि पांच मिनट में वह उन खामियों को दूर कर देंगे।

योगराज का कहना है कि उन मुद्दों को हल करने में केवल पांच मिनट लगेंगे और लखनऊ सुपर जाएंट्स के कप्तान को ट्रैक पर वापस लाएंगे और फिर से वह बड़ी पारियां खेल सकेंगे। अपने बेटे युवराज सिंह के अलावा शुभमन गिल, अभिषेक शर्मा जैसे मौजूदा खिलाड़ियों को कोचिंग दे चुके 67 साल के इस पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि सुधार पर ध्यान देने से पंत जल्द ही अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में लौट आएंगे।

योगराज ने एक इंटरव्यू में कहा, 'ऋषभ पंत की समस्या को सिर्फ पांच मिनट में ठीक किया जा सकता है। उसका सिर स्थिर नहीं है और उसका बायां कंधा बहुत अधिक खुल रहा है। थोड़े से सुधार के साथ वह कुछ ही समय में अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन पर वापस आ जाएंगे।' सनराइजर्स के खिलाफ सोमवार को अहम मुकाबले में वह छह गेंदों में सात रन बनाकर आउट हो गए थे। पंत ने इस सीजन- 0, 15, 2, 2, 21, 63, 3, 0, 4, 18 और 7 रन की पारियां खेली हैं। उनके पहले आईपीएल सीजन यानी 2016 को छोड़ दिया जाए तो पंत ने कभी किसी सीजन में 300 से कम रन नहीं बनाए हैं। यह सिर्फ उनका दूसरा सीजन है जब उन्होंने 200 से कम रन बनाए हैं। 2016 में पंत ने 10 मैचों में 198 रन बनाए थे। इनमें एक अर्धशतक शामिल है।

कप्तान शुभमन ने की आशीष नेहरा की तारीफ, जिगरी दोस्त अभिषेक से लड़ाई पर भी गिल ने पहली बार दिया बयान

आईपीएल 2025 में गुरुवार को गुजरात टाइटंस को लखनऊ सुपर जाएंट्स के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। हालांकि, इससे अंक तालिका पर कोई फर्क नहीं पड़ा और गुजरात की टीम अभी भी शीर्ष पर है। गुजरात के कप्तान शुभमन गिल ने मौजूदा आईपीएल में टीम के शानदार प्रदर्शन का श्रेय मुख्य कोच आशीष नेहरा के खिलाड़ियों के साथ शानदार संवाद को दिया और कहा कि पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज को पता था कि टीम को कैसे तैयार करना है।

'गेंदबाजी को सशक्त बनाने का श्रेय नेहरा को'

गिल ने टीम की पहचान बनाने और गेंदबाजी इकाई को सशक्त बनाने का श्रेय पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज नेहरा को दिया। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि जब गुजरात टाइटंस पहले साल में

खेल रही थी तब आशीष नेहरा के पास एक स्पष्ट दृष्टिकोण था> वह जानते थे कि वह टीम को कैसे तैयार करना चाहते हैं और खिलाड़ियों की भूमिकाएं कैसे परिभाषित करना चाहते हैं। मैदान पर और मैदान के बाहर दोनों जगह खिलाड़ियों के साथ उनका संवाद बेहतरीन रहा है।'

'खिलाड़ियों पर व्यक्तिगत रूप से काम करते हैं नेहरा'

उन्होंने कहा, 'हमेशा ऐसे विभाग होते हैं जिनमें सुधार किया जा सकता है। और जिस तरह से वह खिलाड़ियों के साथ व्यक्तिगत रूप से काम करते हैं, खासतौर पर गेंदबाजों के साथ, यह सबसे अलग है। कई लोगों का मानना है कि आईपीएल बल्लेबाजों के दम पर जीता जाता है लेकिन हमारी विचारधारा अलग है। अगर आप स्कोर का बचाव नहीं कर सकते तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप कितने रन बनाते हैं। जिस तरह से वह गेंदबाजी इकाई का मार्गदर्शन करते हैं वह हमारे लिए एक बड़ी ताकत रही है।'

अभिषेक के साथ लड़ाई पर शुभमन गिल का बयान

गिल ने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने आईपीएल के दौरान सनराइजर्स हैदराबाद के सलामी बल्लेबाज और अच्छे दोस्त अभिषेक शर्मा के साथ बल्ले को लेकर लड़ाई की थी। उन्होंने कहा, 'असल में यह हमारे अंडर-16 के दिनों में शुरू हुआ था। अभिषेक ने मेरे बल्ले से खेलना शुरू किया और इसके पीछे एक कहानी है। वह मेरे मैच के बल्ले का इस्तेमाल करके 80 या 90 रन पर बल्लेबाजी कर रहा था और मैं नहीं चाहता था कि वह टूट जाए इसलिए मैंने उससे इसे वापस करने के लिए कहा। हमारे बीच इस बात को लेकर थोड़ी लड़ाई हुई। लेकिन जब भी उसने मेरा बल्ला मांगा मैंने हमेशा उसे दे दिया और उसने उससे बहुत सारे रन बनाए।'

गिल ने बताया सुदर्शन के साथ उनकी साझेदारी प्रभावी क्यों?

गिल ने बताया कि साथी सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन के साथ उनकी साझेदारी इतनी प्रभावी क्यों है। इस आईपीएल में सलामी जोड़ी के तौर पर सुदर्शन और गिल ने 76.27 के औसत से 839 रन बनाए हैं जिसमें तीन शतकीय साझेदारियां और चार 50 रन से अधिक की साझेदारी शामिल हैं। गिल ने कहा, 'मुझे लगता है कि जिस तरह से हम बल्लेबाजी करते हैं वह बिल्कुल भी समान नहीं है, लेकिन बाएं-दाएं संयोजन से मदद मिलती है। हम दोनों विकेटों के बीच बहुत अच्छी तरह से दौड़ते हैं और हम ऐसे खिलाड़ी हैं जो गेंदबाजों सहित प्रतिद्वंद्वी को मात देना पसंद करते हैं।'

ट्रंप के टैरिफ वॉर का असर, जीएसटी कानून बदलने पर है सरकार की नजर

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। माल एवं सेवाकर की व्यवस्था को अब करीब 8 साल का वक्त बीत चुका है। इस बीच भारत से लेकर दुनिया की इकोनॉमी में बहुत कुछ बदल चुका है। अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप की सरकार फिर लौट आई है और उनके 'टैरिफ वॉर' ने वर्ल्ड मार्केट की लंका लगाई हुई है। ऐसे में अब देश की जीएसटी व्यवस्था में बड़े बदलाव होने की संभावना है। इस समय सरकार ने जीएसटी सिस्टम में नए सिरे बदलाव करने के लिए नई बातचीत का दौर शुरू किया है। इसमें सभी राज्यों को भागीदार बनाया गया है। उम्मीद की जा रही है कि जीएसटी टैक्स सिस्टम को सिंपलीफाई किया जा सकता है और सरकार जीएसटी की टैक्स स्लैब को दोबारा से बदलने पर फोकस कर सकती है।

ट्रंप टैरिफ वॉर का असर

दरअसल बीते कुछ महीनों में ट्रंप टैरिफ वॉर की वजह से वर्ल्ड ट्रेड पर नए सिरे से काम हो रहा है। कई देश आपस में मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) करने पर फोकस कर रहे हैं या अपने देश में टैरिफ नियमों को आसान बनाने का काम कर रहे हैं। भारत ने हाल में ब्रिटेन के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पूरा किया है। जबकि यूरोपीय यूनियन के साथ एफटीए को लेकर बातचीत काफी अग्रिम चरण में है। दूसरी तरफ भारत और अमेरिका भी आपस में एक ट्रेड डील पर हस्ताक्षर कर सकते हैं, जो ट्रंप टैरिफ वॉर को खत्म करने का काम करेगी।

क्यों जीएसटी बदलने पर है सरकार की नजर?

सरकार नहीं चाहती कि अमेरिका और ब्रिटेन या यूरोपीय संघ के साथ होने वाली किसी ट्रेड डील के चलते घरेलू बाजार पर उसका असर पड़े। इसलिए सरकार का फोकस जीएसटी में नए सिरे से बदलाव करने पर है।

इतना ही नहीं सरकार जीएसटी कानून को भी आसान बनाने पर ध्यान दे रही है। कानून को छोटा, ज्यादा एफिशिएंट और सरल बनाने को लेकर सरकार के भीतर विचार विमर्श चल रहा है। हाल में सरकार ने इनकम टैक्स कानून को सरल बनाने वाला संशोधन विधेयक भी संसद में पेश किया था।

दूर होगा जीएसटी से जुड़ा दुख दर्द

अधिकारियों के हवाले से कहा गया है कि जीएसटी को संशोधित करते वक्त इससे जुड़े आम लोगों के दुख-दर्द को दूर करने पर फोकस है। इसमें जीएसटी के स्ट्रक्चर, टैक्स स्लैब से लेकर उसके कंप्लायंस तक की दिक्कत को दूर किया जाएगा।

जीएसटी से होने वाला टैक्स कलेक्शन अब स्टेबल हो चुका है। ऐसे में सरकार इसमें लगने वाले मुआवजा उपकर (कंपनसेशन सेस) को खत्म कर सकती है। जीएसटी काउंसिल ने इसके लिए एक मंत्री समूह पहले से बनाया हुआ है।

पीयूष गोयल वाशिंगटन में अमेरिकी वाणिज्य सचिव से मिले, व्यापार समझौते पर की गई चर्चा

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। वाणिज्य व उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को वाशिंगटन में अमेरिकी वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड ल्यूटनिक के साथ दूसरी बैठक की। इस दौरान दोनों देशों के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर चर्चा की। 20 मई को भी गोयल ने व्यापार समझौते के पहले चरण पर वार्ता में तेजी लाने के लिए ल्यूटनिक के साथ बैठक की थी। गोयल ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा, पारस्परिक रूप से लाभकारी व्यापार समझौते के लिए सचिव हॉवर्ड ल्यूटनिक के साथ रचनात्मक बैठक हुई। हम हमारे व्यवसायों और लोगों के लिए अवसरों को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह बैठक इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि दोनों देश 8 जुलाई तक अंतरिम व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने पर विचार कर रहे हैं। मुख्य वार्ताकारों के बीच चार दिवसीय चर्चा भी 22 मई को वाशिंगटन में समाप्त हो गई। अंतरिम व्यापार समझौते में, नई दिल्ली भारतीय वस्तुओं पर 26 प्रतिशत पारस्परिक टैरिफ से पूर्ण छूट के लिए दबाव डाल रही है। अमेरिका ने 2 अप्रैल को भारतीय

वस्तुओं पर अतिरिक्त 26 प्रतिशत पारस्परिक टैरिफ लगाया था, लेकिन इसे 90 दिनों के लिए 9 जुलाई तक के लिए निलंबित कर दिया था। हालांकि, अमेरिका द्वारा लगाया गया 10 प्रतिशत का बेसलाइन टैरिफ अभी भी लागू है। 26 प्रतिशत अतिरिक्त आयात शुल्क के 90 दिनों के निलंबन के कारण, भारतीय निर्यातक वर्तमान में केवल 10 प्रतिशत आधारभूत शुल्क का भुगतान कर रहे हैं, जबकि पहले यह 26 प्रतिशत प्रस्तावित था। वर्तमान में, ट्रम्प प्रशासन को टैरिफ को एमएफएन (सबसे पसंदीदा राष्ट्र) दरों से नीचे लाने के लिए अमेरिकी कांग्रेस से मंजूरी की आवश्यकता होती है। लेकिन प्रशासन के पास भारत सहित कई देशों पर लगाए गए पारस्परिक टैरिफ को हटाने का अधिकार है।

सोने का दाम 300 रुपए बढ़कर 95,516 पर पहुंचा

चांदी 1,135 रुपए महंगी हुई; इस साल सोना 26% और चांदी 14% बढ़ी

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। सोने-चांदी के दाम में आज यानी शुक्रवार, 23 मई को तेजी है। इंडिया बुलियन एंड ज्वेलर्स एसोसिएशन के अनुसार 10 ग्राम 24 कैरेट सोने का दाम 299 रुपए बढ़कर 95,516 रुपए पर पहुंच गया है। कल यह 95,516 रुपए प्रति 10 ग्राम था। वहीं, चांदी की कीमत भी आज 1,135 रुपए बढ़कर 97,654 रुपए पर पहुंच गई है। कल चांदी 96,519 रुपए किलो थी। इससे पहले सोने ने 21 अप्रैल को 99,100 और 28 मार्च को चांदी ने 1,00,934 का ऑल टाइम हाई बनाया था।

महानगरों में सोने की कीमत

दिल्ली : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 89,550 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 97,680 रुपए है।

मुंबई : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 89,400 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 97,530 रुपए है।

कोलकाता : 10 ग्राम 22 कैरेट गोल्ड की कीमत 89,400 रुपए और 24 कैरेट 10 ग्राम सोने की कीमत 97,530 रुपए है।

चेन्नई : 10 ग्राम 22 कैरेट सोने की कीमत 89,400 रुपए और 10 ग्राम 24 कैरेट सोने की कीमत 97,530 रुपए है।

हैदराबाद : सोने की दर 24 कैरट के लिए रुपए 89400 / 10 ग्राम और 22 कैरट के लिए रुपए 97530/10 ग्राम।

बीएसई शेयर कुछ एप्स पर 65% की गिरावट दिखा रहा

हर 1 शेयर पर 2 बोनस शेयर दे रही कंपनी, एक साल में 177% बढ़ा शेयर

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) के शेयर में कुछ ट्रेडिंग एप्स पर 65% की गिरावट दिखाई है। शुक्रवार को शेयर प्राइज तीन गुना गिरकर 2,450 रुपए पर पहुंच गया है। लेकिन यह गिरावट कंपनी के पेर्फोमेंस की वजह से नहीं, बल्कि शेयर होल्डर्स को बोनस शेयर मिलने के बाद की कीमत में हुए ऐडजस्टमेंट के कारण है। दरअसल, बीएसई ने शेयर होल्डर्स को हर 1 शेयर पर 2 बोनस शेयर देने का एलान किया था। जब किसी कंपनी के शेयर पर बोनस शेयर दिए जाते हैं, तो उनकी कीमत उसी अनुपात में घटा दी जाती है। असल में बीएसई के शेयर में आज करीब 5% की तेजी रही।

आसान शब्दों में समझें गिरावट का कारण

मान लीजिए आपके पास बीएसई के 100 शेयर हैं, हर शेयर की कीमत 2,450 रुपए है। कंपनी ने शेयर होल्डर्स को हर 1 शेयर पर 2 बोनस शेयर देने का एलान किया। अब बोनस मिलने के बाद आपके 300 शेयर (100 पुराने + 200 नए) हो जाएंगे। लेकिन हर शेयर की कीमत भी बोनस के अनुपात में घटकर यानी करीब 816 रुपए (2450 ÷ 3) रह जाएगी।शेयर की कीमत तो घटी है, लेकिन आपके पास शेयरों की संख्या बढ़ जाएगी। कुल मिलाकर, आपकी निवेश की रकम वही रहेगी।

27 मई को मिलेंगे नए बोनस शेयर

कंपनी ने बोनस शेयर के लिए 23 मई को रिकॉर्ड डेट रखा है। यानी 22 मई तक शेयर खरीदने वाले सभी शेयर होल्डर्स बोनस के हकदार होंगे। 27 मई से ये नए शेयर शेयर होल्डर्स के डीमैट अकाउंट में पहुंचेंगे।शेयर की कीमत तो घटी है, लेकिन आपके पास शेयरों की संख्या बढ़ जाएगी। कुल मिलाकर, आपकी निवेश की रकम वही रहेगी।

5 साल में 5,200% का रिटर्न दे चुका बीएसई का शेयर

पिछले पांच साल में बीएसई के शेयरों में 5,200% से ज्यादा की वृद्धि हुई है, जबकि पिछले एक साल में स्टॉक ने 177% का रिटर्न दिया है। वहीं पिछले छह महीनों में इसमें लगभग 50% की तेजी रही है। पिछले एक महीने में शेयर 12% तक चढ़ा है। 20 मई को शेयर 7,588 रुपए पर अपने 52 वीक हाई के स्तर पर पहुंचा था।बीएसई ने वित्त वर्ष 2025 में सालाना आधार पर अपने नेट प्रॉफिट 494 करोड़ रुपए रहा था। इसमें 362% की बढ़ोतरी हुई थी।कंपनी का रेवेन्यू भी 75% की ग्रोथ के साथ 847 करोड़ रुपए पर रहा। अच्छे मुनाफे के कारण कंपनी ने तोहफे के तौर पर अपने शेयर होल्डर्स को बोनस शेयर दिए हैं।

दैनिक पंचांग

ग्रह गोचर

श्री सिद्धार्थी नामक संवत्सर-विक्रम संवत्- 2082
शक संवत् -1947,सूर्य उत्तरायणे,ऋतु- ग्रीष्म
महावीर निर्वाण संवत् -2551
कलियुग अवधि-432000
भोग्य कलि वर्ष-426874
सूर्योदय - 05-45
सूर्यास्त - 18-40
कलियुग संवत् -5126 वर्ष,
कल्पारंभ संवत् -1972949126
सृष्टि ग्रहारंभ संवत्-1955885126

ग्रह स्थिति			लग्नारंभ समय	
सूर्य-	वृष	मे	वृष---	05-12 बजे
चंद्र-	मीन	मे	मिथुन..	07-12 बजे
मंगल	कर्क	मे	कर्क--	09-25 बजे
बुध-	वृष	मे	सिंह---	11-36 बजे
गुरु-	मिथुन	मे	कन्या...	13-43 बजे
शुक्र-	मीन	मे	तुला....	15-50 बजे
शनि-	मीन	मे	वृश्चिक..	17-58 बजे
राहु-	कुंभ	मे	धनु.....	20-12 बजे
केतु-	सिंह	मे	मकर...	22-18 बजे
			कुंभ...	00-09 बजे
			मीन....	01-47 बजे
			मेष.....	03-23 बजे

दिशाशूल • पूर्व - अदरक खाकर घर से निकले
तिथि- द्वादशी 19-20 तक उपरान्त त्रयोदशी
मास • ज्येष्ठ कृष्ण , शनिवार 24 May
नक्षत्र • रेवती 13-48 तक उपरान्त अश्विनी
योग • आयुष्मान 15-00 तक उप सौभाग्य
करण- कौलव 08-58 तक उप. तैतिल
विशेष:- अपरा ११ व्रतं निम्बा
व्रत त्योहार • शनि प्रदोष व्रतं, पंचक

विशेष:- राशिफल गृहों के गोचर के आधार पर लिखा गया है।सूक्ष्म फलादेश क लिए जन्म पत्रिका की सूक्ष्म स्थिति जानने के लिए जन्म कुण्डली दिखाना चाहिए।

राहुकाल 08:58 से 10:36 तक

पं महेशचन्द्र शर्मा मो. 9247132654, 9167555710

दिन का चौघड़िया			रात का चौघड़िया		
काल	05:45 - 07:21	अशुभ	लाभ	18:40 - 20:05	शुभ
शुभ	07:21 - 08:58	शुभ	उत्पात	20:05 - 21:28	अशुभ
रोग	08:58 - 10:36	अशुभ	शुभ	21:28 - 22:50	शुभ
उत्पात	10:36 - 12:13	अशुभ	अमृत	22:50 - 00:13	शुभ
चंचल.	12:13 - 13:51	शुभ	चंचल	00:13 - 01:35	शुभ
लाभ	13:51 - 15:28	शुभ	रोग	01:35 - 02:58	अशुभ
अमृत	15:28 - 17:06	शुभ	काल	02:58 - 04:20	अशुभ
काल	17:06 - 18:40	अशुभ	लाभ	04:20 - 05:45	शुभ

आपका राशिफल

मेष (चू,चे, चो, ला, ली, लू , ले, लो, अ,) अपने बेकार हो गए प्रयासों से निराश न हो , आपको फिर से खड़े होकर प्रयास और कार्य करने की जरुरत है ! बेशक आपके द्वारा दी गयी जानकारियों से अहम मुद्दों का हल न निकला हो , लेकिन आपको इससे कुछ जटिल विवरणों की एक बेहतर जानकारी मिलेगी ।

वृष (ई, उ, ए, जो, वा, वी, वू, वे, वो,) आपके वित्तीय संसाधनो का विस्तार होगा जिसका लाभ लेने के लिए आप पूरी तरह तैयार है । आप आज अपने घर , व्यवसाय या वाहन के लिए भी ऋण के लिए आवदेन कर सकते है जो की आराम से मंजूर हो जायेगा । जिन विद्यार्थियों ने शिक्षा ऋण के लिए आवदेन किआ हुआ है उन्हें भी शुभ सन्देश की प्राप्ति होगी ।

मिथुन (का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, ह,) कार्य क्षेत्र में आपका जीवन संतुलित रहेगा । आप अपने प्रभावशाली नरम कौशल के लिए जाने जायेंगे । आप को और अधिक ज्ञान पाने के लिए कई अवसर मिलेंगे तथा आप अन्य लोगों के साथ इस ज्ञान को साझा भी कर सकते हैं । लेकिन कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियों में आपको भारी वित्तीय नुकसान हो सकता है ।

कर्क (ही, हू ,हे , हो, डा , डी, डू, डे, डो,) आप बहुत ही आराम से संवाद स्थापित कर रहे है , लेकिन कुछ लोग इसमें अड़चन डाल सकते है और उनके हस्तक्षेप की वजह से एक बहुत ही नाटकीय दृश्य आपके कार्यालय में पैदा हो सकता है। आपका दृष्टिकोण संगठन के लाभ के खिलाफ माना जाएगा , इसलिए बेहतर है की एक कदम पीछे रखे , ताकि इसका असर दुसरो पर हो ।

सिंह (मा, मी ,मू ,मे, मो, टा, टी ,टू ,टे,) आपको अपने काम से प्यार है और आप अच्छा कार्य कर रहे हैं। हालांकि, विपरीत ग्रह आपके कार्यस्थल में अस्थायी गड़बड़ी का कारण बन सकते है। इन क्षणिक भावनाओं के आधार पर किसी भी आवेगी निर्णय लेने से बचे । आप अपने कार्यस्थल पर अपने गुस्से को काबू रखे और विचलित करने वाली स्थितियों को दरकिनार करे अन्यथा आप एक ऐसी नौकरी को त्याग सकते है।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) आज कई कार्य क्षेत्र के सुनहरे अवसर आपका दरवाजा खटखटायेंगे । आज आपको पदोन्नति का सन्देश मिल सकता है या नौकरी क्षेत्र में बदलाव के भी आसार है जिसके लिए आप काफी समय से प्रयासरत थे । आपको ऐसी जगह से सहायता मिल सकती है जिस जगह से आपने कल्पना भी नहीं की थी जो की आपको प्रसन्नता से अभिभूत कर सकती है ।

तुला (रा, री, रू ,रे ,रो , ता, ती, तू ,ते,) अपने सहयोगियों के साथ तालमेल और कदम से कदम बढाकर चलने का ये एक अच्छा समय है। समीक्षा और हताशा का लम्बा समय अब समाप्त होने की और अग्रसर है इसलिए इस खुशी में आप दोस्तों और परिवार और अपने ऊपर कुछ व्यय भी कर सकते है पर कोशिश करे की ये ज्यादा से ज्यादा एक दिन के लिए हो ।

वृश्चिक (तो,ना,नी, ने,नू, नो, या, यी ,यू,) पिछले कुछ दिनों से अलग अलग दिशाओं में आपका मन भाग रहा है और निर्णायक निर्णय लेने में आप असमर्थ रहे है। बहरहाल, आज आपको दृष्टि की एक दुर्लभ स्पष्टता का अनुभव होगा और आप अपने कार्यस्थल पर मुद्दों के बारे में स्पष्ट और उचित निर्णय लेने में सक्षम होंगे । आपको किसी से अच्छी करियर सलाह मिलने की भी संभावना है।

धनु (ये, यो,भा, भी, भू धा ,फा, ढा, भे) आज आपको अपना कठोर और मजाकिया दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है, बेहतर होगा कि आप लोगों की भावनाओं से सम्बन्ध स्थापित करे और साथ ही साथ ये जानने की भी कोशिश करे कि वे क्या चाहते हैं और कौन सा रास्ता उन्होंने अपनाया है ! ध्यान देने योग्य बात ये है की आपको समझना होगा की चीज़े कैसे कार्य कर रही है।

मकर (भो, जा, जी, खो, खू, खे, खो, गा, गी) यह समय अपने कार्य क्षेत्र को दिशा या बदलाव देने का उचित समय है । कुछ समय से आप अस्थिरता को महसूस कर रहे है । नए और जोश भर देने वाले अवसर आज आपके सामने आ सकते है और आपको आशावादी रहकर उन्हें पकड़ना है । यह आपके कार्य क्षेत्र को पुनर्जीवित करने में मदद करेगा और आगे जाकर आपकी कार्य क्षेत्र संबंधित समस्याओं का निराकरण करने में मदद करेगा।

कुंभ (गू, गे ,गो, सा, सी, सू, से, सो, दा,) कुछ भ्रम की स्थिति आज आपके कार्य क्षेत्र में आने की संभावना है। आप अपने कार्य क्षेत्र में काफी अच्छे तरीके से कार्य कर रहे है , साथ ही साथ आपको एक व्यापार में शामिल होने के लिए एक प्रस्ताव मिल सकता है जो काफी भरोसेमंद है और पुरस्कार से भरपूर भी परन्तु इस तरह का प्रस्ताव आप ने पहले न देखा न सुना इसलिए आप अनिर्णय की स्थिति में रहेंगे ।

मीन (दी, दू,थ, झ, ञ, दे, दो, चा,ची) कुछ समय से अपने कार्यालय में आप काफी अच्छा काम कर रहे है और ये खूबी आज आपको अपने मालिक की नजरो में काफी ऊपर उठाएगी । पदोन्नति भी आपका इतंजार कर रही है परन्तु आपके सहकर्मियों की द्वेष एवं जलन आपका मन ख़राब कर सकती है । ये आपके लिए एक मुश्किल चुनौती की तरह है।

श्री पंचागुली ज्योतिष केन्द्र

रिलायंस पावर का शेयर आज 19% चढ़ा: 53 के डे-हाई पर पहुंचा, कंपनी को भूटान का सबसे बड़ा सोलर पावर प्रोजेक्ट मिला

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस पावर का शेयर आज (23 मई) शुक्रवार को करीब 19% चढ़ा। कंपनी का शेयर शुरुआती कारोबार में 45 रुपए पर ओपन हुआ और फिर 53.10 रुपए का डे-हाई बनाया। हालांकि, अभी कंपनी का शेयर 15% से ज्यादा की तेजी के साथ 51.33 रुपए के स्तर पर कारोबार कर रहा है। दरअसल, 4 दिन पहले रिलायंस पावर की भूटान का सबसे बड़ा सोलर पावर प्रोजेक्ट बनाने के लिए डील हुई थी। इस खबर के बाद से ही कंपनी के शेयर में ये तेजी देखने को मिल रही है। बीते 5 दिन में कंपनी का शेयर 11%, एक महीने में 18% और छह महीने में 48% चढ़ा है। वहीं एक साल में कंपनी का शेयर करीब 95% चढ़ा है। कंपनी

का मार्केट कैप 21.18 हजार करोड़ रुपए है। रिलायंस पावर 500 मेगावाट (एमडब्ल्यू) का यह प्रोजेक्ट भूटान की कंपनी के साथ मिलकर 50:50 जॉइंट वेंचर में डेवलप करेगी। इसपर करीब 2000 करोड़ रुपए खर्च होंगे। यह प्रोजेक्ट भूटान के सोलर सेक्टर में अब तक का सबसे बड़ा प्राइवेट सेक्टर का फॉरेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट (एफडीआई) होगा। रिलायंस पावर ने भूटान की कंपनी ड्रुक होल्डिंग एंड इन्वेस्टमेंट्स लिमिटेड (डीएचआई) के स्वामित्व वाली ग्रीन डिजिटल प्राइवेट लिमिटेड (जीडीएल) के साथ टर्म शीट साइन की है। इस प्रोजेक्ट को अगले 24 महीनों में चरणबद्ध तरीके से पूरा किया जाएगा। कंपनी ने एक बयान में कहा, 'रिलायंस पावर की टोटल क्लीन एनर्जी पाइपलाइन सोलर सेगमेंट में 2.5 गीगावाट पीक (जीडब्ल्यूपी) पर है, जो इसे इंटीग्रेटेड सोलर एंड बैटरी एनर्जी स्टोरेज सिस्टम (बीईएसएस) सेगमेंट में भारत की सबसे बड़ी कंपनी बनाती है।' कंपनी ने कहा कि बिजली को एक लॉन्ग-टर्म एग्रीमेंट के जरिए ग्रीन डिजिटल को बेचा जाएगा। रिलायंस पावर ने प्रोजेक्ट का काम शुरू करने के लिए कॉम्पिटेटिव बिडिंग प्रोसेस के जरिए कॉन्ट्रैक्टर्स की खोज शुरू कर दी है।रिलायंस पावर की सहायक कंपनी रिलायंस एनयू एनर्जीज ने बीते दिनों एसजेवीएन की टैरिफ आधारित कॉम्पिटिटिव बिडिंग प्रोसेस में सबसे बड़ा अलॉकेशन जीता था।

कंपनी को 350 मेगावाट सौर उत्पादन क्षमता के साथ 175 मेगावाट/700 एमडब्ल्यूएच बैटरी एनर्जी स्टोरज सिस्टम का आवंटन हासिल हुआ था। सरकारी कंपनी एसजेवीएन लिमिटेड की कॉम्पिटिटिव बिडिंग प्रोसेस एक स्ट्रक्चर्ड और ट्रांसपैरेंट मेथड है। इसका उपयोग सोलर, विंड-सोलर हाइब्रिड या हाइड्रोपावर प्रोजेक्ट जैसी रिन्यूएबल एनर्जी प्रोजेक्ट्स के लिए गुड्स, सर्विसेज की खरीद या डेवलपर्स का चयन करने के लिए किया जाता है।

60 करोड़ लोगों से कमाई करने का रिलायंस ने बनाया प्लान, फिर चलाएगी 'कैंपा' जैसा तीर

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। भारत और एशिया के सबसे बड़े रईस मुकेश अंबानी की कंपनी रिलायंस इंडस्ट्रीज अब देश के गांव- गांव तक अपनी पहुंच बनाने की तैयारी में है। इसके लिए कंपनी ने तगड़ा प्लान बनाया है। इस समय कंपनी की नजर देश में तेजी से बढ़ रहे एमएफसीजी सेक्टर पर है। ताकि लो आम लोगों तक भी पहुंच सके। ईटी की रिपोर्ट के मुताबिक इसके लिए कंपनी एफएमसीजी सेक्टर में सस्ते प्रोडक्ट्स को लेकर आना चाहती है। लेकिन दूसरी ओर, एचयूएल, आईटीसी, नेस्ले, डाबर जैसी अधिकतर कंपनियां अपने ज्यादा प्रॉफिट के लिए प्रीमियम प्रोडक्ट्स पर ध्यान दे रही हैं। तो वहीं मुकेश अंबानी की कंपनी गांव-गांव लोगों तक पहुंचने की तैयारी में है।

60 करोड़ लोगों से कमाई करने का प्लान

रिलायंस कंज्यूमर प्रोडक्ट्स लिमिटेड के डायरेक्टर टी कृष्णकुमार ने कहा कि उनकी नजर 60 करोड़ ग्राहकों पर है। कंपनी वहां आस-पास के दुकानों के साथ मिलकर काम करेगी और उन्हें अच्छा मार्जिन भी देगी। इसपर कृष्ण कुमार ने एक इंटरव्यू में कहा कि भारत की आबादी लगभग 1.4 अरब है। इसमें सबसे ज्यादा मध्यम वर्ग परिवार है। लगभग 60 करोड़ लोग जिनके लिए हम एक अच्छी क्वालिटी के प्रोडक्ट्स बनाना चाहते हैं।बता दें, कंपनी का कंज्यूमर बिजनेस 2022 में रिलायंस रिटेल वेंचर्स की सहायक कंपनी के रूप में शुरू हुआ था। तब से ही इसने 15 से ज्यादा ब्रांड खरीदे हैं। इसमें सबसे पहले कैंपा सॉफ्ट ड्रिंक्स शामिल थी। लेकिन इसे 2022 में प्योर ड्रिंक्स लिमिटेड से लगभग 22 करोड़ रुपए में खरीदा गया था। फिलहाल अधिकतर मार्केट्स में अभी ये उपलब्ध नहीं है। कैंपा के अलावा रिलायंस के पोर्टफोलियो में एसआईएल जैम और स्प्रेड, कन्फेक्शनरी ब्रांड लोटस चॉकलेट, टॉफमैन और रावलगांव, एलन के बगल्स स्नैक्स, वेलवेट शैम्पू और इंडिपेंडेंस स्टेपल्स जैसे खुद के बनाए ब्रांड शामिल है।

10 लाख दुकानों तक पहुंचने का टारगेट

वित्तीयवर्ष 25 में आरसीपीएल ने कुल 11,500 करोड़ रुपए का राजस्व दर्ज किया है, जिससे 60 प्रतिशत से ज्यादा जनरल ट्रेड से आया। कंपनी ने घोषणा की कि कैंपा और इंडिपेंडेंस दोनों की सेल में 1 हजार करोड़ रुपए और कुल मिलाकर 10 लाख दुकानों तक पहुंचने का टारगेट है।

इसपर कृष्ण कुमार ने कहा कि हमें एक सप्लाई चेन बनाने की जरूरत है। पिछले साल के अंत तक हमारे पास पेय पदार्थों और स्टेपल्स में मार्केट की हिस्सेदारी लगभग 20 प्रतिशत थी। वहीं मार्च 2026 तक इसे 60 से 70 प्रतिशत लेकर जाने का टारगेट है।

नॉर्थ ईस्ट की किस्मत बदलेंगे गौतम अडानी

करेंगे एक लाख करोड़ का निवेश

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने पूर्वोत्तर को लेकर ''पूर्व की ओर कार्य करो, तेजी से कार्य करो, पहले कार्य करो' की नीति अपनाई है। इसी पर अमल करते हुए अरबपति उद्योगपति गौतम अडानी इस क्षेत्र में अपना निवेश दोगुना करने जा रहे हैं। उन्होंने इस क्षेत्र में अगले 10 साल में एक लाख करोड़ रुपये के निवेश को लेकर प्रतिबद्धता जताई है। नॉर्थ ईस्ट ग्लोबल इंवेस्टर्स समिट को संबोधित करते हुए गौतम अडानी ने कहा कि उनके ग्रुप ने 3 महीने पहले ही असम में 50,000 करोड़ रुपये के निवेश की प्रतिबद्धता जताई थी। अब उनका ग्रुप आने वाले 10 सालों में नॉर्थ ईस्ट के अंदर 50,000 करोड़ रुपये का अतिरिक्त निवेश करेगा।

इन सेक्टर में होगा विकास

गौतम अडानी ने अपने संबोधन में साफ किया कि उनके ग्रुप का फोकस बिजली के स्मार्ट मीटर, हाइड्रो, पंप स्टोरेज, पावर ट्रांसमिशन, रोड एंड हाईवे, डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, लॉजिस्टिक और स्किल डेवलपमेंट एवं वोकेशनल ट्रेनिंग सेंटर की मदद से कैपेसिटी बिल्डिंग पर रहेगा।

गौतम अडानी ने कहा कि यहां के इंफ्रास्ट्रक्चर से ज्यादा हम यहां के लोगों में

निवेश करेंगे।उनके ग्रुप का फोकस स्थानीय स्तर पर जॉब्स बढ़ाने, लोकल एंटरप्रेन्योरिशिप को बढ़ावा देने पर होगा। यही 2047 का विकसित भारत होगा।

इस मौके पर उन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी और उनकी सरकारी की पूर्वोत्तर नीति की तारीफ भी की। उन्होंने कहा, ' सरकार की 'पूर्व की ओर कार्य करें, तेजी से कार्य करें, पहले कार्य करें' नीति ने पूर्वोत्तर को एक वेक-अप कॉल दिया है। पिछले एक दशक में पूर्वोत्तर के पहाड़ों और घाटियों में एक नया उदय हुआ है।' पीएम मोदी ने यहां 65 से ज्यादा दौरे किए। 2014 के बाद से अब तक इस क्षेत्र में 6.2 लाख करोड़ रुपये का निवेश आया है। सड़क नेटकर्व दोगुना होकर 16,000 किमी हो गया है। एयरपोर्ट की संख्या दोगुनी होकर 18 हो गई है। सरकार की ये नीति महज एक पॉलिसी नहीं है, बल्कि ये बड़ी सोच, बड़े विश्वास, सबका साथ – सबका विकास का प्रतीक है।

आरबीआई का बड़ा फैसला, वित्त वर्ष 2025 के लिए 2.68 लाख करोड़ अधिशेष हस्तांतरण को दी मंजूरी

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई)के केंद्रीय निदेशक मंडल की 616वीं बैठक आज मुंबई में रिजर्व बैंक के गवर्नर संजय मल्होत्रा की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में आरबीआई ने एक महत्वपूर्ण वित्तीय निर्णय में वित्त वर्ष 2024-25 के लिए केंद्र सरकार को 2.68 लाख करोड़ रुपये (2.69 ट्रिलियन रुपये) का अधिशेष हस्तांतरण करने की घोषणा की है। यह केंद्रीय बैंक द्वारा किया गया अब तक का सबसे बड़ा हस्तांतरण है, जिसमें चालू वित्त वर्ष में सरकार के राजकोषीय संसाधनों को काफी बढ़ावा मिल सकता है। बोर्ड ने वैश्विक और घरेलू आर्थिक परिदृश्य की समीक्षा की जिसमें दृष्टिकोण में जोखिम को भी ध्यान में रखा गया। बोर्ड ने अप्रैल 2024 से मार्च 2025 के दौरान रिजर्व बैंक के कामकाज पर भी चर्चा की और वर्ष 2024-25 के लिए रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट और वित्तीय विवरणों को मंजूरी दी।

नारियल तेल हुआ महंगा,कंपनियों ने एक साल में 30 प्रतिशत बढ़ा दिए दाम

कितना पड़ा जेब पर असर?

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। लगभग हर घर में इस्तेमाल होने वाली नारियल तेल की कीमत बढ़ गई है। पिछले एक साल में नारियल के तेल में 30 फीसदी से ज्यादा की बढ़ोतरी हुई है। इसका सबसे बड़ा कारण कच्चे सामान की कीमत में आई तेजी है। इस तेजी के कारण कंपनियों को नारियल के तेल की कीमत बढ़ानी पड़ी है। टाइम्स ऑफ इंडिया के मुताबिक मारिको और डाबर जैसी कंपनियों ने पिछले एक साल में नारियल तेल की कीमतों में लगभग 40% तक की बढ़ोतरी की है। मारिको के एमडी और सीईओ सौगत गुप्ता का कहना है कि कमोडिटी की कीमतें अब लगभग स्थिर हो गई हैं। उनके अनुसार, अब कीमतों में बड़ी बढ़ोतरी होने की संभावना कम है। लेकिन अगर कोई अप्रत्याशित घटना होती है, तो कीमतें बढ़ सकती हैं। गुप्ता एफएमसीजी सेक्टर के लिए इस वित्तीय वर्ष में बेहतर ग्रोथ की उम्मीद कर रहे हैं। मारिको पैराशूट नारियल तेल बनाती है। नारियल तेल बनाने में इस्तेमाल होने वाला खोपरा एक महत्वपूर्ण कच्चा माल है। पिछले एक साल में खोपरा की कीमतें 40 से 50% तक बढ़ गई हैं। इस वजह से मारिको को कीमतों में लगभग 30% की बढ़ोतरी करनी पड़ी। बाजार के अनुमानों के अनुसार, मारिको की नारियल तेल बाजार में 50% से ज्यादा हिस्सेदारी है। मारिको जैसी बड़ी कंपनियां खोपरा से नारियल तेल बनाती हैं, जबकि कुछ कंपनियां सीधे बाजार से तेल खरीदती हैं। स्टॉकिस्ट सूत्रों के अनुसार, डाबर ने पिछले तीन से छह महीनों में इस श्रेणी में लगभग 10% की मूल्य वृद्धि की है। डाबर इंडिया के सीएफओ अंकुश जैन ने कहा, 'हमने वैल्यू इंजीनियरिंग, लागत बचाने के उपायों और सोच-समझकर कीमतों में वृद्धि करके महंगाई के असर को कम किया है। हमने प्रतिस्पर्धा को भी ध्यान में रखा है।' नारियल तेल की कीमतें पूरी दुनिया में बढ़ रही हैं।

कान्स के रेड कार्पेट पर छत्तीसगढ़ की जूही

'जलती पृथ्वी' वाली ड्रेस पहनकर किया वॉक कहा– पर्यावरण पर कोई बात नहीं कर रहा

रायपुर, 23 मई (एजेंसियां)। कान्स फिल्म फेस्टिवल दुनिया भर में ग्लैमर, सिनेमा और सेलिब्रिटीज के लिए जाना जाता है। छत्तीसगढ़ से पहली बार यहां कोई रेड कार्पेट पर दुनिया के सामने एक संदेश लिए चला है। हम बात कर रहे हैं दुर्ग जिले की रहने वाली जूही व्यास की। पर्यावरण संरक्षण पर काम करने वाली राष्ट्रीय संस्था ग्रीनपीस इंडिया के साथ जूही कान्स पहुंचीं। संस्था की राष्ट्रीय निदेशक मोहिनी शर्मा के साथ जूही ने 'वॉइस ऑफ द प्लैनेट' अभियान के तहत ग्लोबल वार्मिंग से जुड़े संदेश के साथ अनोखी ड्रेस कैरी की।

जूही की ड्रेस को वियतनाम के प्रसिद्ध डिजाइनर गुयेन टीएन ट्रिएन ने डिजाइन किया। इस ड्रेस को तैयार करने में ढाई महीने का वक्त लगा। इस ड्रेस के जरिए धरती की पीड़ा को दिखाया गया है। जूही की ड्रेस 'जलती हुई पृथ्वी' का प्रतीक थी। जिसमें तापमान में बढ़ोतरी और जलवायु असमानता के परिणामों को दिखाया गया।

आग जैसे रंगों और डिजाइन से सजी यह ड्रेस दुनिया के संकट की ओर इशारा करती है और

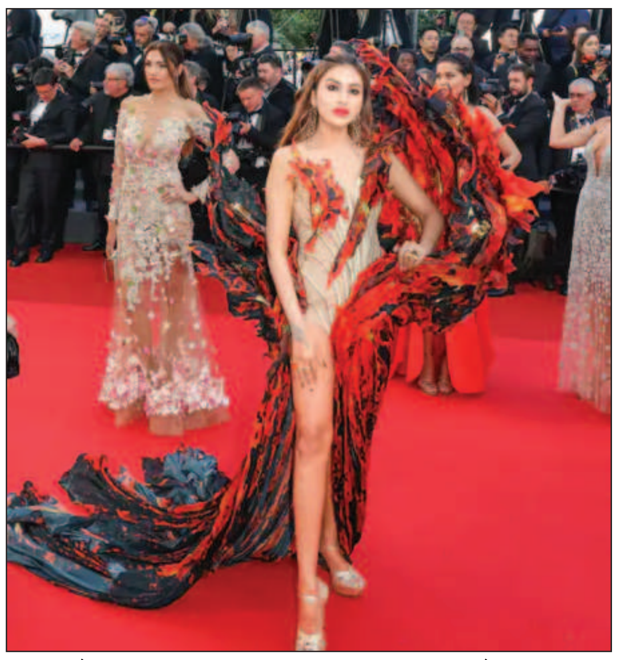

प्रदूषण फैलाने वालों को भविष्य की पृथ्वी कैसी होगी यह दिखा रही है। जूही ने कहा, 'यह सिर्फ एक ड्रेस नहीं है, बल्कि उन लोगों की कहानी है जो चुपचाप जलवायु संकट झेल रहे हैं। एक मां होने के नाते, मुझे अगली पीढ़ी के लिए पृथ्वी की रक्षा करने की जिम्मेदारी और भी ज्यादा महसूस होती है।' जूही ने कहा, हम चाहते तो कांस में कोई भी स्टाइलिश ड्रेस पहनकर पार्टिसिपेट कर सकते थे, मगर हमने इस मौके को दुनिया का ध्यान सबसे बड़ी समस्या की ओर ले जाने का प्रयास किया। हवा, मिट्टी पानी को बचाना इंसानों का काम है। इस पर कोई बात नहीं कर रहा है।

भिलाई निवासी जूही व्यास दो बच्चों की मां हैं और एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। हालांकि, अपने जुनून को तराशते हुए, उन्होंने फैशन और मेकअप की दुनिया में कदम रखा। लगभग 12 साल पहले, उन्होंने दुर्ग में जूही सैलून एंड स्पा शुरू किया था। वो एक मेकअप आर्टिस्ट और मॉडल हैं।

जूही ने 2022 में 'मिसेज इंडिया इंक' प्रतियोगिता में प्रथम रनर-अप का खिताब जीता।

2023 में उन्होंने कैलिफोर्निया में आयोजित 'मिसेज ग्लोब' प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व किया और 'पीपल्स चॉइस' का खिताब जीतने वाली पहली भारतीय बनीं।

2024 में चीन में आयोजित 'मिसेज ग्लोब' प्रतियोगिता में, जूही व्यास जूरी पैनल में शामिल होने वाली पहली भारतीय महिला बनीं।

पहली बार मॉल में खुलेंगी कंपोजिट शराब की दुकानें

रांची, 23 मई (एजेंसियां)। उत्पाद एवं मद्य निषेध विभाग ने नई उत्पाद नीति की अधिसूचना जारी कर दी।इसके अनुसार राज्य में पहली बार मॉल में कंपोजिट शराब की दुकान खुलेगी। इसके माध्यम से देशी और मसालेदार देशी शराब भी मॉल में उपलब्ध हो सकेगी। इसके पहले मॉल में सिर्फ विदेशी शराब की दुकान का ही लाइसेंस दिया गया था।

कंपोजिट शराब की दुकानों का मतलब है कि वैसी दुकान जहां एक ही लाइसेंस पर देसी शराब, देसी मसालेदार शराब, विदेशी शराब, बियर, वाइन या अन्य किसी भी प्रकार की शराब, जिसे राज्य सरकार द्वारा मानव उपयोग के लिए अनुमति दी गई हो, बिक सकेगी। मॉल में शराब की कंपोजिट दुकान केवल वैसे मॉल में खोली जा सकेंगी, जिसके कारपेट एरिया का क्षेत्रफल कम से कम 50,000 वर्गफीट (पार्किंग एरिया को छोड़कर) हो।

एक मॉल में अधिकतम दो दुकानें खोली जा सकेंगी। इस दुकान का न्यूनतम क्षेत्रफल कम से कम 200 वर्गफीट होनी चाहिए। इसके लिए लाइसेंस समान्यतः एक वित्तीय वर्ष के लिए ही मिलेगा।

बदमाशों ने दो को मारी गोली, एक की मौत

साहिबगंज के दो थाना क्षेत्र में हुई घटना आक्रोशित लोगों ने सड़क पर की आगजनी

साहिबगंज, 23 मई (एजेंसियां)। साहिबगंज में गुरुवार की रात दो अलग-अलग थाना क्षेत्र में फायरिंग की घटना हुई। इसमें एक युवक की मौके पर मौत हो गई। जबकि दूसरा व्यक्ति गंभीर रूप से जख्मी है। घटना तालझारी थाना क्षेत्र और राधानगर थाना क्षेत्र की है। वहीं, घटना के बाद लोगों ने सड़क पर आगजनी कर रोड जाम कर दिया।

पहली घटना तालझारी थाना क्षेत्र के महाराजपुर स्थित डाक बंगला खंता इलाके में हुई। यहां पांचू मंडल (30) की गोली मारकर हत्या कर दी गई। जुआ खेलने के दौरान पैसे की लेनदेन पर विवाद हुआ था। इसके बाद आरोपी ने इस घटना को अंजाम दिया। गोली लगने के बाद पांचू मंडल को गंभीर हालत में सदर अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉ. मुकेश कुमार ने उसे मृत घोषित कर दिया। डॉक्टर ने बताया कि गोली सीने के बीचों-बीच लगी थी, जो आर-पार हो गई। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट होगा कि कितनी गोलियां लगी थीं।

घटना स्थल पर पहुंचने पर मृतक के बड़े भाई फेकन मंडल ने बताया कि घायल पांचू ने अंतिम सांस लेने से पहले खुद

बताया कि गदाई दियारा का जॉनी टाइगर नामक युवक ने उसे गोली मारी है। पांचू मंडल और आरोपी के बीच जुआ खेलने को लेकर पैसे की लेनदेन पर कुछ विवाद भी हुआ था। पुलिस इस हत्याकांड को आपसी रंजिश या व्यक्तिगत दुश्मनी से भी जोड़कर देख रही है। वहीं, दूसरी घटना राधानगर थाना क्षेत्र में हुई। राधानगर पंचायत भवन के पास अज्ञात हमलावरों ने कृष्ण घोष (60) को गोली मार दी। परिजन उन्हें गंभीर हालत में पश्चिम बंगाल के फरक्का स्थित एक निजी अस्पताल ले गए।

कृष्णा घोष बाजार से घर लौट रहे थे। राधानगर थाना घाट के निकट एक पुलिया के नीचे से अचानक गांव के ही तीन लोग निकले और किसी ने गोली चलाई तो किसी ने धारदार हथियार से उनके सिर पर वार कर दिया। उसी अवस्था में कृष्ण घोष वहां से भागे और कुछ दूर जाकर जमीन पर गिर गए। घटना को अंजाम देकर तीनों आरोपी घटनास्थल से फरार हो गए।

सूचना मिलते ही राधानगर, बरहरवा और राजमहल थाना की पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने घटनास्थल का मुआयना किया। घायल कृष्णा घोष ने गांव के ही वासुदेव घोष, संतोष घोष तथा जोष्टी मंडल के बेटे पर हमला करने का आरोप लगाया है।

बैडमिंटन खेलते वक्त युवक की मौत

रेस्ट के लिए जमीन पर बैठते ही मुंह के बल गिरा, हार्ट अटैक की आशंका

रायपुर, 23 मई (एजेंसियां)। रायपुर में बैडमिंटन खेलते हुए युवक की मौत हो गई है। युवक बैडमिंटन खेलने के बाद रेस्ट करने के लिए कोर्ट से बाहर निकला, फिर जमीन पर बैठा। कुछ देर बाद अचानक मुंह के बल गिर गया। घटना का सीसीटीवी वीडियो भी सामने आया है। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है।

मिली जानकारी के मुताबिक मृतक का नाम हिमांशु श्रीवास्तव (35) है। वह सेक्टर 4 भिलाई का रहने वाला था। रायपुर के खुशी इंक्लेव अमलीडीह में अपनी पत्नी के साथ रह रहा था। शंकर नगर स्थित एक प्राइवेट कंपनी में मैनेजर के पद पर पदस्थ था।

जानकारी के मुताबिक, यह पूरी घटना सप्रे शाला स्कूल स्थित जिला बैडमिंटन एकेडमी की है। शुक्रवार सुबह 6-7 बजे के करीब वहां खिलाड़ी बैडमिंटन की प्रेक्टिस कर रहे थे। इस दौरान युवक भी वहां पहुंचा।युवक ने बैडमिंटन खेलने की इच्छा जाहिर की। इसके बाद वह खिलाड़ियों के साथ बैडमिंटन खेलने लगा।

कुछ देर खेलने के बाद वहां रेस्ट करने के लिए कोर्ट से बाहर आकर जमीन पर बैठ गया। वीडियो में देखा जा सकता है कि कुछ देर बाद मुहं के बल नीचे गिर गया।

वहां मौजूद लोगों ने उसे उठाने की कोशिश की, लेकिन वह नहीं उठा। जहां से लोग उसे मेकाहारा अस्पताल ले गए, लेकिन डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया।

मिली जानकारी के मुताबिक शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। हार्ट अटैक से युवक की मौत की आशंका जताई जा रही है। फिलहाल पुलिस परिजनों से पूछताछ करके आगे की जानकारी जुटाएगी। घटना के बाद परिजनों का रो-रो कर बुरा हाल है।

क्या होता है हार्ट अटैक?

हमारे हार्ट की ब्लड सप्लाई तीन तरफ से होती है। शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से हार्ट की नसों में ब्लॉकेज आना शुरू हो जाता है।

40% तक ब्लॉकेज ज्यादा प्रॉब्लम नहीं करता। जब ये ब्लॉकेज 70% से ज्यादा बढ़ जाता है तो हार्ट का ब्लड फ्लो धीमा पड़ जाता है और ब्लड की पंपिंग बंद हो जाती है। इसे ही हार्ट अटैक कहते हैं।

25 किलो गांजा जब्त

भुवनेश्वर से दिल्ली ले जा रहे दो तस्कर गिरफ्तार, रेलवे स्टेशन के पास पकड़े गए

रामगढ़, 23 मई (एजेंसियां)। रामगढ़ पुलिस ने पतरातू रेलवे स्टेशन के पास से दो गांजा तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से 25.709 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ है। पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि दो युवक रांची से गांजा लेकर पतरातू आएंगे और वहां से ट्रेन पकड़कर दिल्ली जाएंगे।

एसपी अजय कुमार के निर्देश पर एसडीपीओ गौरव गोस्वामी के नेतृत्व में एक विशेष टीम का गठन किया गया। टीम ने पतरातू रेलवे स्टेशन के सभी मार्गों पर निगरानी रखी। पुतरिया नदी पुल के पास दो संदिग्ध पुलिस को देखकर भागने लगे। पुलिस ने दोनों को पकड़ लिया।

पूछताछ में पकड़े गए आरोपी शत्रुघन कुमार और लालू कुमार ने बताया कि वे भुवनेश्वर से गांजा लाते हैं। इसे ट्रेन और बस से रांची होते हुए पतरातू लाया जाता है। फिर यहां से ट्रेन के जरिए दिल्ली के सकरपुर चार खंभा इलाके में एक दुकान तक पहुंचाया जाता है।

शत्रुघन कुमार के पास से 6 पैकेट में 11.801 किलोग्राम और लालू कुमार के पास से 14 पैकेट में 13.908 किलोग्राम गांजा बरामद हुआ।

दोनों के पास गांजा रखने का कोई वैध कागजात नहीं मिला। पुलिस ने आरोपियों से बरामद गांजा, मोबाइल और बैग को जब्त कर लिया है। दोनों को एनडीपीएस एक्ट के तहत गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

खदान में डूबे मजदूरों का नहीं चला पता

घटना के तीसरे दिन एनडीआरएफ को दी गई सूचना, नदी में बहने से डूबे थे खदान में

हजारीबाग, 23 मई (एजेंसियां)। हजारीबाग जिले के केरेडारी प्रखंड के कंडाबेर गांव में 21 मई खदान में डूबे मजदूरों का घटना के तीसरे दिन भी कुछ पता नहीं चल सका। हजारीबाग की डीसी नैंसी सहाय के निर्देश पर एनडीआरएफ को भी सूचना दी गई है।

दरअसल, भारी बारिश के कारण खावा नदी में आए तेज बहाव में तीन मजदूर बह गए थे। वे नदी के पास स्थित एक पुराने खदान की गुफानुमा संरचना में डूब गए। घटना उस समय हुई, जब तीनों मजदूर अपने घर लौट रहे थे।

स्थानीय लोगों के अनुसार, मजदूरों ने नदी पार करने का प्रयास किया। तेज बारिश के कारण बहाव अधिक होने से वे नदी पार नहीं कर पाए और बहते हुए खदान में डूब गए। पास में बकरी चरा रहे बच्चों ने यह घटना देखी और गांव में सूचना दी।

ग्रामीणों ने स्थानीय मुखिया के माध्यम से प्रशासन को सूचित किया। केरेडारी अंचल अधिकारी राम रतन बरनवाल मौके पर पहुंचे। एनटीपीसी की मदद से खोज अभियान शुरू किया गया। दो दिनों की मेहनत के बाद भी कोई सफलता नहीं मिली है।

अवैध खदानों को कंक्रीट से भरकर सील करने की मांग

इधर, सांसद मनीष जायसवाल ने घटना पर शोक व्यक्त किया है। उन्होंने जिले में स्थित पुराने और अवैध खदानों को कंक्रीट से भरकर सील करने की मांग की है। प्रशासन की ओर से बचाव कार्य जारी है।

शैतान का डर दिखाकर छाती पर चढ़कर इलाज युवती की मौत

गरियाबंद, 23 मई (एजेंसियां)। गरियाबंद जिले के सुरसाबांधा गांव में एक महिला के इलाज से योगिता सोनवानी (18) की संदिग्ध हालत में मौत हो गई। योगिता की मां सुनीता के बताया कि, ईश्वरी साहू नाम की महिला ने इलाज के नाम पर उसे अपने घर ले गई और 3 महीने बंधक बनाकर रखा। वहां उसने प्रार्थना और बाइबिल पढ़ने को मजबूर किया। योगिता लंबे समय से मानसिक रूप से बीमार थी। मामला राजिम थाना क्षेत्र का है। सुनीता सोनवानी के मुताबिक, ईश्वरी ने उन्हें बताया था कि योगिता के शरीर में शैतान है। इलाज के नाम पर वो महिला की छाती पर चढ़कर शैतान भगाने का ढोंग करती थी और गर्म तेल लगाती थी और विरोध करने पर मारती थी।

स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल ने डेंटल कॉलेज का किया निरीक्षण

स्वास्थ्य सुविधाओं को बेहतर करने के दिए निर्देश

रायपुर, 23 मई (एजेंसियां)। छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने आज शुक्रवार को रायपुर डेंटल कॉलेज का दौरा किया। वहां की व्यवस्थाओं और स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग के सचिव अमित कटारिया भी उपस्थित रहे। निरीक्षण के दौरान उन्होंने अस्पताल में इलाज के लिए आए मरीजों और उनके परिजनों से मुलाकात की। उनका कुशलक्षेम जाना और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता के बारे में जानकारी ली।

मंत्री जायसवाल ने अस्पताल प्रबंधन और अधिकारियों के साथ चर्चा कर मरीजों को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने के लिए आवश्यक कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वास्थ्य सेवाओं को और सुदृढ़ करने पर जोर देते हुए

कहा कि मरीजों को गुणवत्तापूर्ण उपचार और सहूलियत सुनिश्चित करना सरकार की प्राथमिकता है। इस अवसर पर अस्पताल के चिकित्सा अधिकारियों ने स्वास्थ्य मंत्री को महाविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं और चल रही योजनाओं की जानकारी दी। जायसवाल ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मरीजों की सुविधा के लिए कोई कमी न रहे और अस्पताल में सभी आवश्यक संसाधन समय पर उपलब्ध हों।

डेंटल कॉलेज के स्वशासी समिति की बैठक स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में स्वास्थ्य विभाग के सचिव अमित कटारिया, चिकित्सा शिक्षा विभाग के संचालक प्रोफेसर डॉ. यूएस पैकरा, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. वीरेंद्र वाढेर समेत समिति के अन्य सदस्य उपस्थित रहे। बैठक में शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के तहत स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल ने महाविद्यालय में उपचार की पूर्व निर्धारित दरों की समीक्षा की। भीषण गर्मी को देखते हुए मरीजों की सुविधा के लिए महाविद्यालय परिसर में सेंट्रल एयर कंडीशनिंग सिस्टम स्थापित करने के निर्देश दिए गए।

इसके साथ ही महाविद्यालय की समस्याओं का निराकरण करने और आधारभूत संरचना को मजबूत करने के लिए कई निर्णय लिए गए। बैठक में कलेक्टर दरों पर विभिन्न भर्तियों को मंजूरी दी गई, जिससे आम जनता को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त होंगी।

पत्नी की हत्या मामले में पति गिरफ्तार, फरार था आरोपी

16 मई को बालू में दफन महिला की मिली थी लाश, दंपती में अक्सर होता था झगड़ा

लातेहार, 23 मई (एजेंसियां)। लातेहार के गारू थाना क्षेत्र के लुहुरटांड़ कोयल नदी से 16 मई को मिली बालू में दफन महिला के शव मामले में पुलिस ने खुलासा कर दिया है। महिला की हत्या उसके पति मुकेश प्रसाद ने की थी। मुकेश लातेहार थाना क्षेत्र के सुकरी गांव का रहने वाला है। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर शुक्रवार को जेल भेज दिया।

बरवाडीह पुलिस निरीक्षक अशोक कुमार सिंह ने बताया कि दंपती के बीच एक दूसरे पर अवैध संबंध का आरोप लगाकर अक्सर झगड़ा होता था। इसी विवाद से गुस्से में आकर मुकेश ने पत्नी की हत्या कर दी। हत्या के बाद शव को कोयल नदी के बगल बालू में दफना दिया।

पुलिस ने घटनास्थल से महिला का मोबाइल, सैंडल, हत्या में इस्तेमाल किया गया लोहे का तावा और एक अन्य मोबाइल बरामद किया है।

उन्होंने आगे बताया कि पति-पत्नी के बीच पिछले डेढ़ साल से तलाक का मामला न्यायालय में चल रहा था।

घर में फंदे से लटकी मिली महिला की लाश

बेटे से मिलकर रांची से लौटी थी गुमला, पति से नोकझोंक के बाद सुसाइड की आशंका

गुमला, 23 मई (एजेंसियां)। गुमला के चैनपुर थाना क्षेत्र में एक दुखद घटना सामने आई है। शुक्रवार को बेंदोरा स्थित अखरा के पास नीलिमा लकड़ा (28) की लाश घर में फंदे से लटकी अवस्था में मिली।

नीलिमा हाल ही में रांची से अपने बेटे ऋषभ उरांव से मिलकर लौटी थीं, जो वहां पढ़ाई कर रहा है। आशंका जाहिर की जा रही है कि किसी बात पर पति से नोकझोंक के बाद नीलिमा ने आत्महत्या कर ली। परिजनों के अनुसार, गुरुवार को नीलिमा साप्ताहिक बाजार से लौटने के बाद अपने पति रितेश उरांव के साथ एक ही कमरे में थीं। रात को परिवार के सभी सदस्यों ने साथ खाना खाया और सोने चले गए। इधर, नीलिमा ने घर में रखे एक बक्से पर चढ़कर चुनरी का फंदा लगाकर जान दे दी। परिजनों के अनुसार, पति-पत्नी के बीच अक्सर नोकझोंक होती रहती थी, जिसे इस घटना का संभावित कारण माना जा रहा है। घटना की सूचना मिलते ही चैनपुर थाना के एसआई दिनेश कुमार दलबल के साथ मौके पर पहुंचे। बेंदोरा मुखिया सुशील दीपक मिंज भी घटनास्थल पर मौजूद थे। पुलिस ने पंचनामा कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए गुमला सदर अस्पताल भेज दिया है और मामले की जांच कर रही है।

वायरल होने की चाह, जान जोखिम में डाल रहे युवा

कोडरमा के रेलवे ब्रिज पर रील्स बना रहे युवक, 100 मीटर तक नहीं है बचने का रास्ता

कोडरमा, 23 मई (एजेंसियां)। कोडरमा के जवाहर घाटी रेलवे पुल पर युवाओं द्वारा रील्स बनाने का मामला सामने आया है। ट्रैक पर ट्रेन आने की स्थिति में बचने के लिए दोनों तरफ 100 मीटर तक जाना होगा। रेलवे ने पहले ही लोगों को ट्रैक से दूर रहने की सलाह दी है। यह पुल कोडरमा-बरकाकाना रेलखंड के तिलैया डैम पर स्थित है। एनएच-20 का रांची-पटना मुख्य मार्ग भी इसके पास से गुजरता है। स्थानीय लोगों और पर्यटकों के लिए सड़क किनारे जंगल में रोड बना हुआ है।

यहां लोग न केवल सेल्फी लेते हैं बल्कि पिकनिक भी मनाते हैं। डल झील जैसी शिकारा बोट की सवारी का भी आनंद उठाते हैं। चिंता की बात यह है कि युवा रेलवे ब्रिज के ट्रैक पर चढ़कर रील्स बना रहे हैं। जवाहर घाटी

का यह स्थान बेहद खूबसूरत है, लेकिन सोशल मीडिया कंटेंट बनाने के चक्कर में युवा अपनी जान जोखिम में डाल रहे हैं।

रेलवे ट्रैक पर सेल्फी या रील्स बनाना जानलेवा साबित हो सकता है। मामले को लेकर हजारीबाग टाउन रेलवे स्टेशन के आरपीएफ प्रभारी उदय शंकर ओझा ने बताया कि वीडियो के माध्यम से ही उन्हें इसकी सूचना प्राप्त हुई है। उन्होंने कहा कि वे पीडब्ल्यूआई को इस मामले से अवगत कराएंगे। उनसे प्राप्त आवेदन के आधार पर वैसे लोग जो रील्स बनाने या सेल्फी लेने के लिए रेलवे ट्रैक पर चढ़े हुए हैं, उन्हें चिन्हित कर उनके खिलाफ रेलवे की अलग-अलग धाराओं के तहत मामला दर्ज किया जाएगा।

झारखंड में लगातार 28 मई तक बारिश का अलर्ट

आज भी चल सकती है तेज हवा आकाशीय बिजली गिरने की भी चेतावनी

रांची, 23 मई (एजेंसियां)। झारखंड में गरज के साथ बारिश और आंधी का चलना फिलहाल जारी रह सकता है। मौसम विभाग ने लगातार 28 मई तक राज्य के कई हिस्सों में बारिश और तेज हवा के साथ वज्रपात का भी अलर्ट जारी किया है।

मौसम विभाग के अनुसार, शुक्रवार को देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहिबगंज जिले में कहीं-कहीं पर गर्जन और तेज हवा के साथ वज्रपात की संभावना है। हवा की रफ्तार 40 से 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रह सकती है।

अधिकतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं

वहीं, पलामू, गढ़वा, चतरा, कोडरमा, लातेहार और लोहरदगा जिले समेत उत्तरी मध्य हिस्सों में कहीं-कहीं पर भारी बारिश होने

की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार, राज्य में अगले 5 दिनों के दौरान अधिकतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है।

मौसम का पूर्वानुमान

24 मई: देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहिबगंज में कहीं-कहीं पर गर्जन और तेज हवा चल सकती है। साथ ही आकाशीय बिजली गिरने की संभावना है।

25 और 26 मई: देवघर, धनबाद, दुमका, गिरिडीह, गोड्डा, जामताड़ा, पाकुड़ और साहिबगंज के कहीं-कहीं पर गर्जन और तेज हवा का झोंका चल सकता है। वज्रपात की भी संभावना बनी हुई है।

भारत-पाकिस्तान जंग में रूस की भूमिका शर्मनाक

जब चीन ने मॉस्को को लगाई लताड़ एक्सपर्ट ने पुतिन की 'दोस्ती' पर उठाए सवाल

बीजिंग/मॉस्को, 23 मई (एजेंसियां)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान रूसी हथियारों ने जरूर पाकिस्तान को घुटने टेकने के लिए मजबूर कर दिया, लेकिन मॉस्को की चुप्पी ने डिप्लोमेसी की दुनिया में पुतिन की पॉलिसी पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। रूस ने भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पूरी तरह से चुप्पी साध रखी थी, जबकि चीन का लहजा भारत के लिए धमकी वाला था। चीन अप्रत्यक्ष तौर पर पाकिस्तान के साथ खड़ा था और माना जा रहा है की पाकिस्तान एयरफोर्स को चीन ने नेटवर्किंग और इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर में मदद दी। इसके अलावा चीन ने भारत से लड़ाई से ठीक पहले पीएल-15 मिसाइल भी पाकिस्तान को सौंपी थी, जिसका इस्तेमाल उसने भारत के खिलाफ किया था। लिहाजा सवाल उठ रहे हैं कि जिस तरह से चीन, पाकिस्तान के साथ खड़ा है, क्या भविष्य में जंगों के दौरान वो खुलकर पाकिस्तान का भागीदार बन जाएगा? क्या भारत को अब हर हाल में 'टू फ्रंट वॉर' की तैयारी करनी चाहिए।

इसके अलावा जो सबसे अहम सवाल उठ रहा है, वो रूस की भूमिका को लेकर है। रूस, जो हमेशा से भारत का आजमाया हुआ भरोसेमंद भागीदार रहा है, उसकी इस चुप्पी ने मॉस्को और दिल्ली के संबंधों पर सवाल खड़ कर कर दिए हैं, कि क्या चीन के अहसानों के बोझ में दबे रूस की अब वो हैसियत नहीं रही कि भारत के साथ खड़ा हो सके। लेकिन एक हकीकत ये भी है कि पाकिस्तान ने जब जब युद्ध थोपा है, भारत ने हर बार अकेले ही युद्ध का सामना किया है, सिवाय 1971 के, जब रूस भारत के समर्थन में खड़ा हो गया था। जबकि चीन सीधे तौर पर कई वजहों से पाकिस्तान के साथ सीधा खड़ा नहीं हो पाया, लेकिन अंदर से पूरी मदद देता रहा है। ऐसे में भारत के लिए पाकिस्तान को चीनी मदद कोई नई बात नहीं है। जियो-पॉलिटिकल डिफेंस एक्सपर्ट प्रकाश नंदा ने लिखा है कि पाकिस्तान के खिलाफ हर युद्ध में भारत 'टू फ्रंट वॉर' की चुनौती का सामना करता आया है। स्ट्रैटजी के हिसाब से देखें तो 'टू फ्रंट वॉर' की स्थिति दो तरह की होती है। पहला गुप्त रूप से सहयोगी बनकर साथ देना और दूसरा सीधी लड़ाई। ऑपरेशन सिंदूर के बाद 'टू फ्रंट वॉर' के मायने बदले हैं और अगले युद्ध में चीन के सीधे तौर पर शामिल होने की आशंका सबसे ज्यादा बन गई है, क्योंकि चीन अब जान चुका है कि पाकिस्तान, अकेले किसी भी हाल में भारत का मुकाबला करने में सक्षम नहीं है। लिहाजा चीन, जो अभी तक पाकिस्तान को नैतिक, राजनीतिक और सैन्य समर्थन देकर भारत के खिलाफ गुप्त समर्थन दे रहा था, वो आगे जाकर खुलकर भारत के खिलाफ पाकिस्तान का युद्ध साझेदार बन सकता है।

प्रकाश नंदा ने लिखा है कि इतिहास के पन्नों को पलटकर अगर देखें तो 1962 में चीन ने भारत पर हमला किया था और उसके बाद से चीन और पाकिस्तान के बीच काफी मजबूत संबंध बनने शुरू हुए। 1963 में पाकिस्तान ने पीओके का एक बड़ा हिस्सा (शक्सगाम घाटी) चीन के हवाले कर दिया। जिसकी वजह से चीन सीधे तौर पर भारत के लद्दाख सीमा के पास पहुंच गया। वहीं 1965 में भारत और पाकिस्तान के बीच जब युद्ध लड़ा गया, उस दौरान चीन ने भारत को सिक्किम सीमा पर सीमा उल्लंघन के बहाने युद्ध की धमकी दी थी।

जर्मन चांसलर फ्रीडरिख मर्ज ने लिथुआनिया में ब्रिगेड का उद्घाटन किया

नाटो के पूर्वी हिस्से की सुरक्षा करना मकसद

बर्लिन, 23 मई (एजेंसियां)। जर्मन चांसलर फ्रीडरिख मर्ज ने गुरुवार को लिथुआनिया में एक जर्मन ब्रिगेड का उद्घाटन किया। जिसका मकसद नाटो के पूर्वी हिस्से की रक्षा में मदद करना है। मर्ज ने कहा कि यह अपनी सैन्य शक्ति को बढ़ाने के साथ सहयोगी देशों की सुरक्षा के लिए उठाया गया एक कदम है।

लिथुआनिया में यह पहली बार है, जब द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कोई जर्मन ब्रिगेड जर्मनी से बाहर इतने लंबे समय तक तैनात हुआ है। नाटो के इस्टर्न बॉर्डर को सुरक्षित करने के प्रयासों के तहत जर्मनी ने 2017 से लिथुआनिया में अपनी सेना तैनात कर रखी है, जो रूस के कलिनिनग्राद एक्सक्लेव और मास्को-संबद्ध बेलारूस की सीमा पर है। लिथुआनिया के राष्ट्रपति गिटानास नौसेदा ने मर्ज से मुलाकात को एक ऐतिहासिक दिन बताया।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में विदेशी छात्रों के एडमिशन पर रोक

ट्रम्प प्रशासन का फैसला, अभी यहां 7 हजार विदेशी छात्र, इनमें 788 भारतीय

न्यूयॉर्क, 23 मई (एजेंसियां)। अमेरिका के डोनाल्ड ट्रम्प प्रशासन ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की विदेशी स्टूडेंट्स को एडमिशन देने की योग्यता रद्द कर दी है। अमेरिका की होमलैंड सिक्योरिटी सेक्रेटरी क्रिस्टी नोएम ने गुरुवार देर रात होमलैंड सुरक्षा विभाग (डीएचएस) को हार्वर्ड के स्टूडेंट एंड एक्सचेंज विजिटर प्रोग्राम (एसईवीपी) का सर्टिफिकेशन तत्काल प्रभाव से रद्द करने का आदेश दिया।

विदेशी स्टूडेंट्स को एडमिशन देने की योग्यता वापस पाने के लिए हार्वर्ड को 72 घंटों में मौजूदा बाहरी स्टूडेंट्स की जानकारी देनी होगी। अभी यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे सभी विदेशी छात्रों को दूसरे संस्थानों में ट्रांसफर लेने के लिए कहा गया है। नहीं तो उन्हें देश छोड़ना पड़ सकता है।

बीते कुछ दिनों से हार्वर्ड और सरकार के बीच विदेशी छात्रों से जुड़े रिकॉर्ड को लेकर खींचतान चल रही थी। डीएचएस ने अप्रैल में कहा था कि अगर हार्वर्ड ने 30 अप्रैल तक विदेशी स्टूडेंट्स के अवैध और हिंसक मामलों का पूरा रिकॉर्ड नहीं दिया, तो उसका एसईवीपी सर्टिफिकेशन छीन लिया जाएगा। यूनिवर्सिटी ने जो रिकॉर्ड दिया था, उससे प्रशासन संतुष्ट नहीं है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में लगभग 27% बाहरी छात्र हैं। वहां अभी लगभग 6,800 विदेशी स्टूडेंट्स पढ़ रहे हैं। इनमें भारत के 788 छात्र हैं। ज्यादातर स्टूडेंट्स एफ-1 या जे-1 वीजा पर हैं। एफ-1 वीजा अमेरिकी शैक्षणिक संस्थान में पढ़ने वाले छात्रों के लिए है, जबकि जे वीजा स्कॉलर्स, रिसर्चर्स सहित एक्सचेंज विजिटर्स के लिए है। ट्रम्प प्रशासन में होमलैंड सिक्योरिटी सेक्रेटरी क्रिस्टी नोएम ने हार्वर्ड को लिखा लेटर X पर शेयर किया है। उन्होंने कैप्शन में लिखा, 'ट्रम्प प्रशासन हार्वर्ड को अपने कैंपस में हिंसा, यहूदी-विरोधी सोच को बढ़ावा देने और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ समन्वय बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराता है।' 'यूनिवर्सिटीज के लिए विदेशी छात्रों को एडमिशन देना और उनसे मोटी फीस लेना, जिससे वे अपनी मल्टी-अरब डॉलर के खजाने को बढ़ा सके, एक विशेषाधिकार है, न कि अधिकार। हार्वर्ड को कई मौके दिए, लेकिन वह कानून का पालन करने में विफल रही। यह कार्रवाई इसे देश भर के सभी यूनिवर्सिटी और शैक्षणिक संस्थानों के लिए एक चेतावनी है।'

ऑपरेशन सिंदूर के ठीक बाद यूं ही नहीं नीदरलैंड पहुंचे भारत के चाणक्य जयशंकर

पाकिस्तानी नौसेना की गर्दन दबाने की तैयारी

एम्स्टर्डम, 23 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर की सफलता के बाद भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर नीदरलैंड के दौरे पर पहुंचे हैं। पाकिस्तान की मदद करने वाले तुर्की, अजरबैजान और चीन पर राजनयिक पलटवार के बाद अब भारत की नजर पाकिस्तान की नौसेना पर है। दरअसल, नीदरलैंड पाकिस्तान की नौसेना को बड़े पैमाने पर हथियार और युद्धपोत की सप्लाई करता है। पाकिस्तान अपने 81 फीसदी हथियार चीन से खरीदता है और उसके बाद रूस, नीदरलैंड, इटली और तुर्की से लेता है। पाकिस्तान को हथियारों की सप्लाई करने वाले टॉप 5 देशों में नीदरलैंड भी शामिल है।

पाकिस्तान और नीदरलैंड के बीच 1980 के दशक से हथियारों की डील जारी है। पाकिस्तान ने नीदरलैंड से बारूदी सुरंगों का पता लगाने वाले युद्धपोत और गश्ती जहाज खरीदे हैं। भारतीय विदेश मंत्री ने नीदरलैंड के साथ आतंकिस्तान बन चुके पाकिस्तान के सीमापार आतंकवाद का मुद्दा उठाया। जयशंकर ने साफ कह दिया कि अगर पाकिस्तान से सीमापार आतंकवादी हमले जारी रहे तो इस्लामाबाद को गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। नीदरलैंड के एक अखबार को दिए इंटरव्यू में जयशंकर ने 22 मई के पहलगाम आतंकी हमले का जिक्र किया।

उन्होंने कहा कि पाकिस्तानी सेना का नेतृत्व धार्मिक कट्टरपंथ में डूबा हुआ है। इससे पहले पीएम मोदी का नीदरलैंड का दौरा होना था लेकिन ऑपरेशन सिंदूर को देखते हुए ऐसा नहीं हो पाया। माना जा रहा है कि आतंकवाद का हवाला देकर जयशंकर ने एक बार फिर से नीदरलैंड पाकिस्तान को हथियारों की सप्लाई रोकने के लिए कहा है।

ऑस्ट्रेलिया में बाढ़ से तबाही, चार की मौत

50 हजार से ज्यादा लोग हुए विस्थापित

मेलबर्न, 23 मई (एजेंसियां)। ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी तटीय इलाकों में भारी बारिश के चलते बाढ़ और तबाही का मंजर है। इस बाढ़ में चार लोगों की मौत हो गई है और एक व्यक्ति लापता है। गनीमत है कि अब बादल छंट गए हैं और मौसम साफ है, जिससे राहत और बचाव कार्यों में तेजी आने की उम्मीद है। बाढ़ और बारिश के चलते 50 हजार से ज्यादा लोग विस्थापित हुए हैं। पूर्वी तटीय इलाकों में कम दाब का क्षेत्र बनने पर भारी बारिश हुई थी और अब यह कम दाब का क्षेत्र सिडनी की तरफ चला गया है। बुधवार से न्यू साउथ वेल्स में बाढ़ के पानी से चार शव निकाले गए हैं। तीन लोग वाहन चलाते समय बाढ़ के पानी में बह गए थे, जबकि एक व्यक्ति का शव उसके घर के बरामदे में मिला था। बुधवार रात बाढ़ग्रस्त इलाके में घूमने के दौरान एक 49 वर्षीय व्यक्ति लापता हो गया, जिसकी अभी भी तलाश जारी है।

बांग्लादेश में फिर बदलेगी सरकार?

मोहम्मद यूनुस के इस्तीफे पर उनके विशेष सहायक ने दिया अहम बयान

ढाका, 23 मई (एजेंसियां)। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुखिया मोहम्मद यूनुस अपने पद से इस्तीफा नहीं देंगे। यूनुस के विशेष सहायक फैज अहमद तैयब ने शुक्रवार को यह जानकारी दी है। तैयब ने कहा कि प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस को सत्ता का लालच नहीं है लेकिन फिलहाल वह बांग्लादेश में शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक परिवर्तन के लिए जरूरी हैं। ऐसे में वह अपने पद पर बने रहेंगे। तैयब का यह बयान ऐसे समय सामने आया है, जब बांग्लादेश के राजनीतिक गलियारों में यूनुस के इस्तीफे की चर्चा जोरों पर है।

मोहम्मद यूनुस ने पिछले साल अगस्त में अंतरिम सरकार की कमान संभाली थी। शेख हसीना के सत्ता से हटने के बाद अंतरिम सरकार बनी थी। हाल के महीनों में यूनुस के सेना से टकराव और राजनीतिक दलों का भरोसा खोने का दावा किया जा रहा है। कई ऐसे घटनाक्रम हुए हैं, जिससे

यूनुस के इस्तीफे की अटकलें लगाई गईं। मोहम्मद यूनूस ने गुरुवार को सलाहकार परिषद की बैठक की और परिषद के सदस्यों के साथ भी मीटिंग की। बैठक के बाद कहा गया कि यूनुस सहयोग ना मिलने से नाखुश है और इस्तीफा देने के बारे में सोच रहे हैं।

क्यों लगी यूनुस के इस्तीफे की अटकलें

यूनुस के इस्तीफे की अटकलों के बीच तैयब ने शुक्रवार को सोशल मीडिया पर लिखा, 'कैबिनेट को ज्यादा सक्रिय होना चाहिए। सरकार को अपने काम को जनता दिखाना चाहिए। हमें यह दिखाना होगा कि लोगों की सहमति से सत्ता में आने के बाद यूनुस ने कई सफलता हासिल की हैं। मोहम्मद यूनुस को पूरी दुनिया सम्मान करती है। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उस सम्मान को बनाए रखें।'

तैयब ने आगे कहा कि सरकार को राजनीतिक पार्टियों से बात करनी चाहिए। उन्हें नियमित रूप से मिलकर अलग-अलग मुद्दों पर राय लेनी चाहिए। किसी को भी अलग-थलग नहीं किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि सेना को राजनीति में दखल नहीं देना चाहिए। हालांकि सेना को सम्मान देना चाहिए और उन्हें विश्वास में रखना चाहिए। सेना के बारे में अचानक कोई फैसला नहीं लेना चाहिए।

तैयब ने ये भी कहा कि जरूरी तैयारी के बाद अगले साल अप्रैल और मई के बीच चुनाव होने की उम्मीद है। दिसंबर से जून तक का रोडमैप के आधार पर चुनाव की तारीख तय करने का अधिकार सिर्फ यूनुस सर के पास है। इस अधिकार को उनसे नहीं छीना जा सकता। जब उनको लाया गया था तो उन्होंने एयरपोर्ट पर ही कह दिया था कि मेरी आवाज सुनी जानी चाहिए। मुझे लगता है कि ऐसा ही होगा।

कनाडा में विदेशी छात्रों का पढ़ाई करना मुश्किल हुआ

सरकार कम परमिट जारी कर रही, भारतीय छात्रों की संख्या में 31% गिरावट

ओटावा, 23 मई (एजेंसियां)। कनाडा ने इंटरनेशनल स्टूडेंट को दिए जाने वाले स्टडी परमिट की संख्या में कटौती की है। पिछले साल की समान अवधि के मुकाबले 2025 की पहली तिमाही में भारतीय स्टूडेंट को दिए गए परमिट में 31% की गिरावट आई है।

इमिग्रेशन, रिफ्यूजीज एंड सिटिजनशिप कनाडा (आईआरसीसी) के आंकड़ों के मुताबिक जनवरी-मार्च 2025 के बीच सिर्फ 30,640 स्टूडेंट को स्टडी परमिट दिया गया। जबकि 2024 में इसी अवधि के दौरान यह संख्या 44,295 थी।

जनवरी 2025 में, कनाडा की आबादी 4 करोड़ 15 लाख थी, जिसमें अस्थायी निवासियों की संख्या 3 करोड़ 2 लाख थी। यह लगभग 7.25% है। कनाडा सरकार इसे 2028 तक 5% से

कम पर ले जाना चाहती है।

यही वजह है कि आईआरसीसी ने 2025 के लिए स्टडी परमिट की लिमिट 437,000 कर दी है, जो 2024 के मुकाबले 10% कम है। यह सीमा 2026 तक लागू रहेगी।

कनाडा ने साल 2023 से ही इंटरनेशनल स्टूडेंट की संख्या को कम करने के लिए कोशिश शुरू कर दी थी। कनाडा ने 2023 में कुल 6.81 लाख स्टडी परमिट जारी किए, जिनमें से 2.78 लाख भारतीय छात्रों के लिए थे।

2024 में कुल परमिट की संख्या घटकर 5.16 लाख हो गई, जिसमें 1.88 लाख भारतीय छात्र थे। इसके कारण कनाडा में आने वाले इंटरनेशनल स्टूडेंट की संख्या में लगभग 40% की कमी आई है। कनाडा दो ग्रुप में परमिट देगी। जिसके लिए प्रांतीय सत्यापन पत्र (पीएएल) या क्षेत्रीय सत्यापन पत्र (टीएएल) जमा करना होगा। कनाडा सरकार ने स्टडी परमिट आवेदनों के लिए कई नए नियम लागू किए हैं, जो अंतरराष्ट्रीय छात्रों के लिए आवेदन प्रक्रिया को और सख्त बनाते हैं।

धन प्रमाण: 1 जनवरी, 2024 से, आवेदकों को यह साबित करना होगा कि उनके पास लगभग 12.7 लाख रुपए हैं। इससे पहले यह रकम लगभग 6.14 लाख रुपए थी।

स्वीकृति पत्र का सत्यापनः दिसंबर 2023 से, डेजिग्नेटेड लर्निंग इंस्टीट्यूशंस (डीएलआईस) को प्रत्येक आवेदक के स्वीकृति पत्र को आईआरसीसी के माध्यम से सत्यापित करना अनिवार्य है। यह कदम फर्जी आवेदनों को रोकने के लिए उठाया गया है।

पाकिस्तान में कोरोना से एक हफ्ते में 4 मौतें

हर दिन 8-10 पॉजिटिव केस, भारत में अब तक कोरोना के 261 नए मामले

इस्लामाबाद, 23 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान के कराची में बीते एक हफ्ते में कोरोना की वजह से 4 लोगों की मौत हो गई है। मरने वालों में ज्यादातर बुजुर्ग थे और ये लोग पहले से ही कई बीमारियों से जूझ रहे थे। ये सभी मौतें आगा खान यूनिवर्सिटी हॉस्पिटल में हुई है। यहां पर बीते कुछ दिनों से लगातार कोरोना मरीजों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है। वहीं, भारत में अब तक कोरोना के 261 नए मामले मिले हैं। केरल में सबसे ज्यादा 95, तमिलनाडु में 66 और महाराष्ट्र में 56 नए केस मिले हैं।

भारत के अगले 'आपरेशन सिंदूर' को फेल करने की तैयारी में जुटा चीन

पाकिस्तानी सेना को देगा 30 सैटेलाइट के नेटवर्क का कवरेज

बीजिंग, 23 मई (एजेंसियां)। चीन क्या पाकिस्तान की मदद करने के लिए भारत के खिलाफ खुलकर मैदान में आ गया है? ये सवाल इसलिए उठ रहे हैं क्योंकि भारत के ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की नाकामी को देखते हुए चीन ने अपनी मिलिट्री सैटेलाइट की पहुंच का विस्तार पाकिस्तान तक करने का फैसला किया है। रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान और चीन के सैन्य अधिकारियों के बीच 16 मई को एक बैठक की गई है, जिसमें चीन ने पाकिस्तान की सेना के लिए अपने बेइदो सैटेलाइट सिस्टम की पहुंच का विस्तार करने की बात कही है। दोनों देशों के सैन्य अधिकारियों के बीच हुई ये रणनीतिक बैठक थी। इस बैठक का आयोजन इसलिए किया गया था, क्योंकि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम के साथ साथ रडार सिस्टम को तबाह कर दिया था और 12 से ज्यादा पाकिस्तानी एयरफोर्स के एयरबेस पर सटीक हमले किए थे।

इंडिया टूडे की एक रिपोर्ट के मुताबिक, दोनों देशों की सेनाओं के बीच बैठक का मकसद सैटेलाइट कवरेज के मामले में पाकिस्तानी सेना के लिए समर्थन बढ़ाना और उन्हें भारतीय सेना की गतिविधियों के बारे में लगातार जानकारी देना है।

इस बैठक के दौरान चीन और पाकिस्तानी सैन्य अधिकारियों के बीच रीयल टाइम कॉर्डिनेशन और सर्विलांस क्षमता को बढ़ाने के लिए 5जी कम्युनिकेशन सिस्टम को इंटीग्रेट करने पर भी बात की गई है। भारत ने साफ कह रखा है कि उसका ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है और पाकिस्तान को भारत के अगले हमले का डर सता रहा है, लिहाजा माना जा रहा है की चीन, पाकिस्तान को भारत के अगले हमले से बचाने की तैयारी कर रहा है।

रूस से और एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम खरीद सकता है भारत

अजीत डोभाल जा रहे मॉस्को, एस-500 और सू-57 पर भी होगी बात?

मॉस्को/नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत के तीन हथियारों ने पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया। ये तीन हथियार हैं एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम, ब्रह्मोस सुपसोनिक क्रूज मिसाइल और आकाश एयर डिफेंस सिस्टम। जिनमें से एस-400 भारत ने रूस से खरीदा है, ब्रह्मोस को भारत ने रूस के साथ मिलकर भारत में बनाया है, जिसमें 51 प्रतिशत से ज्यादा भारत की हिस्सेदारी है और आकाश डिफेंस सिस्टम पूरी तरह से स्वदेशी है। भारत ने साल 2018 में रूस के साथ 5 यूनिट एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम के लिए 35 हजार करोड़ रुपये यानि 5.4 अरब डॉलर में समझौता किया था। लेकिन यूक्रेन युद्ध में फंसने की वजह से रूस सिर्फ 3 यूनिट की ही डिलीवरी दे पाया है। 2 यूनिट एस-400 डिफेंस सिस्टम की डिलीवरी मिलना अभी बाकी है और रूस डेडलाइन में बार बार चूक कर रहा है।

इन सबके बीच रूसी मीडिया में दावा किया गया है कि भारत के नेशनल सिक्योरिटी एडवाइजर अजीत डोभाल जल्द ही मॉस्को का दौरा करने वाले हैं, जिसमें एस-400 के बाकी बचे दो यूनिट की जल्द डिलीवरी के लिए रूसी सरकार पर प्रेशर डालने के अलावा कई तरह के और डिफेंस डील पर बात होने की संभावना है। अजीत डोभाल की यात्रा से पहले भारतीय सांसदों की मॉस्को यात्रा होने वाली है। जबकि भारत और रूस के ज्वाइंट वेंचर से बनी ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल को लेकर भी दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण बातचीत होने वाली है।

यूक्रेन युद्ध में फंसने और पश्चिमी प्रतिबंधों को झेलने के बावजूद रूस अभी पी-5 देशों का हिस्सा और महत्वपूर्ण यूरेशियाई शक्ति बना हुआ है। इसके अलावा रूस और भारत की साझेदारी ने कई यूरेशियाई शक्तियों को संतुलित भी किया है।

दुनिया को डरा रही बाबा वेंगा की साल 2025 को लेकर ये भविष्यवाणियां

अब तक कई हो चुकीं सच, अभी और क्या है बाकी

सोफिया, 23 मई (एजेंसियां)। बुल्गारिया की नेत्रहीन भविष्यवक्ता बाबा वेंगा ने बिना आंखों के ही दुनिया का जो भविष्य देखा, वो उनकी मौत के दशकों बाद भी सच हो रही हैं। बाबा वेंगा ने ऐसी बहुत सी भविष्यवाणियां की जो हूबहू घटित हुईं, फिर चाहे वह वर्ल्ड ट्रेड सेंटर का हमला हो या राजकुमारी डायना की मौत के बारे में उनकी भविष्यवाणी हो। यही वजह है कि उनकी भविष्यवाणियों ने लोगों में कौतूहल जगा दिया है। इस बीच साल 2025 को लेकर बाबा वेंगा की भविष्यवाणियों को लोग फिर से खंगाल रहे हैं, खासतौर पर उन्होंने युद्ध, आर्थिक संकट और प्राकृतिक आपदाओं से संबंधित जो भविष्यवाणियां की थीं। आइए उनकी भविष्यवाणियों पर एक नजर डालते हैं।

बाबा वेंगा ने साल 2025 में दुनिया भर में युद्ध के साथ ही आर्थिक संकट की भविष्यवाणी की थी। वैश्विक बाजारों को अस्थिर करने वाली नीतियों से भू-राजनीतिक अस्थिरता पैदा हो सकती है। ऐसे में जब दुनिया आर्थिक उथल-पुथल का अनुभव कर रही है, उनकी भविष्यवाणी पहले से अधिक प्रासंगिक हो गई है। उदाहरण के लिए अमेरिका और चीन में टैरिफ युद्ध के चलते वैश्वि अर्थव्यवस्था अस्थिर हो गई है। आपूर्ति श्रृंखला में रुकावटें आ रही हैं। आज वैश्विक अर्थव्यवस्था आपस में इतनी जुड़ी हुई है कि एक प्रमुख अर्थव्यवस्था में पतन से वैश्विक स्तर पर वित्तीय अस्थिरता फैलने की संभावना है।

बाबा वेंगा ने साल 2025 में आर्थिक पतन की भी भविष्यवाणी

की है। उनकी भविष्यवाणी के अनुसार, यह एक विश्वव्यापी आर्थिक तबाही होगी जिसके कारण बैंकिंग प्रणाली ध्वस्त हो सकती है और अन्य देशों में फैल सकती है। इससे हिंसा शुरू होगी जिसे उन्होंने 'मानवता के पतन' के रूप में संबोधित किया है।

टेलीपैथी से इंसान करेंगे संपर्क

बाबा वेंगा के सबसे विचित्र दावों में टेलीपैथी है। उन्होंने अनुमान गाया कि साल 2025 तक मनुष्य सीधे मन से मन तक संवाद करने में सक्षम हो जाएगा। मस्तिष्क-मशीन इंटरफेस ने इस तरफ ध्यान खींचा है। एलन मस्क का न्यूरालिंक ऐसी क्षमताओं की ओर एक संभावित कदम है। ये देखना दिलचस्प होगा कि ये नई तकनीकें बाबा वेंगा की भविष्यवाणी पर खरे उतरते हैं।

बाबा वेंगा ने साल 2025 में विनाशकारी भूकंप का जिक्र किया है। हाल की कुछ घटनाओं को देखते हुए यह भविष्यवाणी सटीक लगती है।

28 मार्च को म्यांमार में 7.7 तीव्रता का बड़ा भूकंप आया था। जुंटा शासन ने 1500 लोगों की मौत की पुष्टि की। इसका असर थाईलैंड तक देखा गया। इसके अलावा दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में भूकंप के बाद सुनामी की चेतावनी जारी की गई।

राजस्थान से अब तक 301 घुसपैठिए भेजे गए

दूसरे राउंड में 153 को एअर इंडिया की स्पेशल फ्लाइट से पश्चिम बंगाल भेजा

जोधपुर, 23 मई (एजेंसियां)। राजस्थान से अब तक (14 से 23 मई तक) 301 बांग्लादेशी घुसपैठियों को भेजा गया है। दूसरे राउंड में सुबह जोधपुर एयरपोर्ट से 153 बांग्लादेशियों को एअर इंडिया के विशेष विमान से पश्चिम बंगाल भेजा गया। वहां से सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) इन सभी को बांग्लादेश भेजने की कार्रवाई करेगी। पहले राउंड में 14 मई को 148 घुसपैठियों को डिपोर्ट किया गया था। बांग्लादेश सरकार को भी उनके नागरिकों की जानकारी दी गई है।

पहलगाम हमले के बाद घुसपैठियों को पकड़ा

पहलगाम में आतंकी हमले के बाद सरकार हरकत में आई थी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जिलों में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी और रोहिंग्याओं को ढूंढने को कहा था। इसके लिए बाकायदा अभियान चलाया गया। इसके बाद विभिन्न जिलों में अवैध रूप से रह रहे ऐसे नागरिकों को पकड़ा गया। ये लोग अपनी पहचान छुपाकर रह रहे थे। प्रदेश में अभियान के तहत एक हजार से भी ज्यादा लोगों को पकड़ा गया था।

पुलिस और जिला प्रशासन मिलकर कर रहा चिह्नित

पहले चरण में 14 मई को 148 घुसपैठियों को जयपुर के प्रतापनगर डिटेंशन सेंटर से जोधपुर लाया गया था। जोधपुर से पश्चिम बंगाल भेजा गया था। राजस्थान पुलिस और जिला प्रशासन ने अपने-अपने इलाकों में रह रहे बांग्लादेशियों को चिह्नित कर जिले के डिटेंशन सेंटर पर शिफ्ट कर दिया था। डिटेन किए गए लोगों के पास भारत के मूल निवासी होने का वैध प्रमाण-पत्र नहीं मिला। सूत्रों की मानें तो इनके पास जो भी सर्टिफिकेट मिले थे, वो फर्जी थे। ये दस्तावेज आखिर किसकी मिलीभगत से बने हैं, इसकी जांच चल रही है।

प्रदेश के अलग-अलग जिलों से पकड़े जा चुके घुसपैठिए

अभियान के तहत प्रदेश के अलग-अलग जिलों से घुसपैठियों को पकड़ा गया। इसमें सीकर से 394 अवैध बांग्लादेशी घुसपैठियों को पकड़ा जा चुका है। इनमें अकेले खंडेला में 50 से ज्यादा घुसपैठियों को पकड़ा गया। इसी तरह अजमेर जिले में अवैध रूप से रह रहे 31 बांग्लादेशी नागरिकों को पकड़ा गया है। इसके अलावा जयपुर से 218, अलवर से 117 घुसपैठियों को पकड़ा गया है। ये सभी अपनी पहचान छुपाकर रह रहे थे। महिलाएं घरों में कामकाज करती मिलीं। वही पुरुष कबाड़ी, खान मजदूरी, ईंट-भट्टों में मजदूरी, कचरा बीनने या बेलदारी जैसे काम कर रहे थे। डिटेन किए गए इन लोगों में से कुछ के आपराधिक रिकॉर्ड भी सामने आए हैं।

घुसपैठियों के लिए बनाए 6 डिटेंशन सेंटर

राजस्थान में बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ विशेष अभियान के तहत 6 डिटेंशन सेंटर बनाए गए हैं। इनमें अलवर, उदयपुर का झाड़ोल, नागौर के मेड़ता, बहरोड़ में 1-1 और जयपुर में 2 डिटेंशन सेंटर बनाए गए हैं। इनमें अलवर का डिटेंशन सेंटर स्थायी है, जबकि घुसपैठियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करने के लिए 5 अस्थायी डिटेंशन सेंटर बनाए गए हैं। इन डिटेंशन सेंटर में करीब 1008 बांग्लादेशियों को डिटेन किया गया है।

मजदूर का बेटा लाया 99% पड़ोसी डीजे पर नाचे

कोटा, 23 मई (एजेंसियां)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (आरबीएसई) 12वीं क्लास का रिजल्ट गुरुवार को जारी हुआ। विज्ञान, कला और वाणिज्य संकायों के नतीजे एक साथ आए। इनमें साइंस का रिजल्ट 98.43%, कॉमर्स का 99.07% और आर्ट्स का 97.78% रहा।

नतीजों में होनहारों ने सफलता की नई कहानी लिखी। पाली में खेतिहर मजदूर की बेटी मीनाक्षी चौधरी ने आर्ट्स में 97.80 प्रतिशत अंक हासिल किए। वहीं, जोधपुर के भोपालगढ़ में भेड़-बकरियां चराने वाले चरवाहे दुर्गाराम देवासी की बेटी प्रीति साइंस में 97.80% मार्क्स लाईं। पाली के जैतारण निवासी मुकेश गहलोत आर्ट्स में 98% अंक लाए। उनके पिता मजदूर है, वहीं मां घर- घर जाकर सब्जियां बेचने का काम करती है। जालोर के भीनमाल की निकिता ने 92.60 मार्क्स लाकर अपने पिता जबरदान से किया वादा निभाया। दरअसल, पिता ने कहा था कि 90% से अधिक अंक आए तो बेटी का फोटो अखबार में छपवा दूंगा।

शौर्य चक्र लेने निकला जवान, रास्ते में पिता की मौत

शव के साथ बांसवाड़ा लौटे, अंतिम संस्कार किया फिर दिल्ली में नम आंखों से अवॉर्ड लिया

बांसवाड़ा, 23 मई (एजेंसियां)। नक्सलियों को अपनी वीरता का लोहा मनवाने के लिए राजस्थान के जवान को शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। बेटे को जब 22 मई अवॉर्ड मिलने की घोषणा हुई तो पिता भी खुशी से झूम उठे। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) में असिस्टेंट कमांडेंट बेटे के साथ पिता भी 20 मई को बांसवाड़ा से दिल्ली के लिए रवाना हुए, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। कमांडेंट राजेश पांचाल के परिवार की खुशियां मातम में बदल गई। इसके बाद भी उन्होंने नेशनल ड्यूटी को ऊपर रखा। पिता का अंतिम संस्कार कर अगले ही दिन वे अवॉर्ड लेने के लिए दिल्ली पहुंचे।

कोटा में तबीयत बिगड़ी, वहीं मौत

कमांडेंट राजेश पांचाल घाटोल (बांसवाड़ा) से पिता केशव चंद्र के साथ 20 मई को चित्तौड़गढ़ पहुंचे थे। यहां से वे दिल्ली जाने के लिए ट्रेन में बैठे थे। वे 21 मई को कोटा पहुंचे ही थे कि पिता की तबीयत अचानक बिगड़ गई। कोटा में वे पिता को अस्पताल ले गए जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। राजेश अपने पिता के पार्थिव शरीर को कोटा से लेकर अपने गांव खमेरा लौटे। वहां अंतिम संस्कार की विधि पूरी की।

सम्मान लेने के दौरान भावुक हुए

पिता को अंतिम विदाई देने के बाद कमांडेंट राजेश पांचाल 21 मई की शाम को ही दिल्ली के लिए रवाना हो गए। उन्होंने उदयपुर से दिल्ली के लिए फ्लाइट ली। अगले दिन 22 मई को उन्होंने नम आंखों से शौर्य चक्र राष्ट्रपति के हाथों प्राप्त किया। देश से मिले सम्मान को पाने का गर्व उनकी आंखों में था, लेकिन पिता के साथ नहीं होने का दुख भी था।

गोली लगने के बाद भी नक्सलियों को मार गिराया

राजेश पांचाल को शौर्य चक्र नक्सलियों से मुठभेड़ के दौरान कुशल नेतृत्व और अदम्य साहस के लिए दिया गया। नक्सलियों ने उनके दल पर भारी गोलीबारी की थी। इस दौरान राजेश पांचाल के हाथ पर और उनके साथी मलकीत सिंह को सीने पर गोली भी लगी। राजेश ने हार नहीं मानी और लगातार डटकर सामना किया। खुद घायल होने के बावजूद उन्होंने साथी मलकीत सिंह को भी संभाला। सभी नक्सली को घंटों की मशक्कत से बाद उन्होंने मार गिराया।

कानून मंत्री की पोती को नकल करते पकड़ा

जोधपुर में सिविल इंजीनियरिंग की परीक्षा में चीटिंग कैलकुलेटर के कवर पर थे नोट्स

जोधपुर, 23 मई (एजेंसियां)। राजस्थान के कानून मंत्री जोगाराम पटेल की पोती को इंजीनियरिंग की परीक्षा में नकल करते हुए पकड़ा है।

मामला जोधपुर की मुगनीराम बांगुर मेमोरियल (एमबीएम) यूनिवर्सिटी से जुड़ा है। कैंपस में इन दिनों सेमेस्टर एग्जाम हो रहे हैं। गुरुवार एन्वायरमेंटल इंजीनियरिंग की परीक्षा थी। इसी में केबिनेट मंत्री की पोती भी एग्जाम दे रही थी। फ्लाइंग टीम निरीक्षण के लिए पहुंची तो स्टूडेंट के पास रखे कैलकुलेटर के कवर पर पेंसिल से नोट्स लिखे मिले।

केस बनाकर स्टूडेंट को दी दूसरी कॉपी

परीक्षा हॉल में स्टूडेंट्स की जांच के लिए पहुंची फ्लाइंग टीम में दो शिक्षक थे।

कैलकुलेटर के कवर कुछ लिखा होने की जानकारी के बाद स्टूडेंट्स से दोनों पूछताछ भी की थी। टीम के सदस्य डॉ. अंशु अग्रवाल व डॉ. मनीष कुमार ने नकल का केस बनाकर स्टूडेंट को दूसरी कॉपी दिलवा दी।

यूनिवर्सिटी की कमेटी करेगी निर्णय

इसके बाद टीम ने नकल का मामला मानते हुए विवि प्रबंधन को अपनी रिपोर्ट सौंप दी। वहीं, केंद्र अधीक्षक डॉ. श्रवणराम ने अपनी रिपोर्ट में कैलकुलेटर पर लिखे हुए को अस्पष्ट बताते हुए नकल का केस नहीं मानना बताया। इस मामले में पुलिस में कोई शिकायत नहीं दी गई है। ऐसे में अब विवि की कमेटी ही इस पर निर्णय करेगी कि यह केस नकल की श्रेणी में आने योग्य है या नहीं।

कृष्णगंज सीएचसी में औचक निरीक्षण करने पहुंची कलेक्टर

> व्यवस्थाओं में सुधार को लेकर दिए निर्देश

सिरोही, 23 मई (एजेंसियां)। जिला कलेक्टर अल्पा चौधरी ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कृष्णगंज का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान वहां का एक बाथरूम बंद पाया गया, जिस पर कलेक्टर ने नाराजगी जताते हुए अधिकारियों को तत्काल ताला खुलवाने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान उन्होंने सफाई, बायो मेडिकल वेस्ट निस्तारण, पेयजल और गर्मी से बचाव की व्यवस्थाओं का जायजा लिया तथा संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

कलेक्टर चौधरी ने सीएचसी परिसर में मरीजों के लिए स्वच्छता, पेयजल, पंखे और कूलर जैसी मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मरीजों और उनके परिजनों को किसी प्रकार की असुविधा नहीं होनी चाहिए। उन्होंने बायो मेडिकल वेस्ट निस्तारण को निर्धारित मानकों के अनुसार करने की भी हिदायत दी। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर अल्पा चौधरी ने स्वास्थ्य सेवाओं में पारदर्शिता और भरोसा बढ़ाने के उद्देश्य से खुद का ब्लड सैंपल देकर सीबीसी जांच करवाई। उन्होंने स्टाफ के कार्य की सराहना करते हुए आमजन को नियमित स्वास्थ्य जांच के लिए प्रेरित करने की बात कही। उन्होंने लाडो योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को समय पर भुगतान सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके लिए संबंधित दस्तावेज जैसे बैंक खाता और जनआधार कार्ड समय रहते तैयार करने की बात कही। कलेक्टर ने सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी को निर्देश दिए कि सीएचसी में सप्ताह में कम से कम एक बार स्त्री रोग विशेषज्ञ की सेवा उपलब्ध कराई जाए।

इस पर डॉ. खराड़ी ने बताया कि जिला अस्पताल से समन्वय कर जल्द ही यह सुविधा शुरू की जाएगी। इसके बाद सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी और बीसीएमओ डॉ. विवेक जोशी ने सीएचसी कालंद्री, पीएचसी वेलांगरी और पीएचसी डोडुआ का भी निरीक्षण किया। कालंद्री में उन्होंने बाथरूम और इन्वर्टर बैटरियों की स्थिति जांची और नियमित रखरखाव के निर्देश दिए। वेलांगरी में वेटिंग एरिया में कूलर लगाने की बात कही गई, वहीं डोडुआ में स्वास्थ्य सुविधाओं को और बेहतर बनाने के निर्देश दिए गए। कलेक्टर अल्पा चौधरी ने कहा कि आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना प्रशासन की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसके लिए समय-समय पर निरीक्षण कर खामियों को दूर किया जा रहा है।

सड़क हादसे में नवविवाहित युवक और बुआ की मौत

उदयपुर, 23 मई (एजेंसियां)। उदयपुर में सड़क हादसे में नवविवाहित युवक और उसकी बुआ की मौत हो गई। हादसे में परिवार की 3 महिलाएं भी बुरी तरह घायल हो गईं।

हादसा ऋषभदेव थाना क्षेत्र में नेशनल हाईवे-48 पर कल्लाजी मंदिर के पास सुबह 7:30 बजे हुआ। हादसे में नैना देवी बेन (50) और पवन (30) की मौत हो गई। पवन की तीन दिन पहले ही शादी हुई थी।

पेपर लीक कर पास हुई महिला वनरक्षक समेत तीन गिरफ्तार

एक ने 1 लाख तो दूसरे ने 3 लाख रुपए दिए, दलाल भी पकड़ा गया

जयपुर, 23 मई (एजेंसियां)। स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप (एसओजी) ने वनरक्षक भर्ती परीक्षा 2020 के पेपर लीक मामले में एक युवती समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। इनमें दो वनरक्षक हैं, जिन्होंने लीक पेपर पढ़कर एग्जाम पास किया था। पेपर के लिए दोनों वनरक्षक ने कुल 4 लाख (1 लाख और 3 लाख) रुपए दलाल को दिए थे।

एसओजी के एडीजी वीके सिंह ने बताया- वनरक्षक भर्ती परीक्षा 2020 के पेपर लीक मामले की एसओजी ने जांच की। जांच के दौरान 12 मार्च को कार्रवाई कर पेपर लीक मामले में आरोपी कंवराराम जाट (गुजरात के पालनपुर में स्टेशन मास्टर) को अरेस्ट किया गया था। उससे पूछताछ में खुलासा हुआ कि उसने वनरक्षक उमाराम और प्यारी कुमारी को 13 नवम्बर 2022 को हुई वनरक्षक भर्ती परीक्षा का पेपर उदयपुर में एग्जाम से पहले ही दे दिया था। पूछताछ में नाम सामने आने पर एसओजी ने गुरुवार को गुडामलानी (बाड़मेर) के रहने वाले आरोपी वनरक्षक उमाराम (23) और वनरक्षक प्यारी कुमारी (30) को गिरफ्तार किया।

भीलवाड़ा के जैन मंदिर से 1 करोड़ का सोना चोरी

प्रतिमा के पीछे लगा था, चांदी के जेवरात भी ले गए बदमाश

भीलवाड़ा, 23 मई (एजेंसियां)। भीलवाड़ा के जैन मंदिर से करीब 1 करोड़ कीमत का सोना चोर ले गए। इसके साथ ही 3 किलो चांदी और अष्टधातु से बना कछुआ भी चोरी हुआ है।

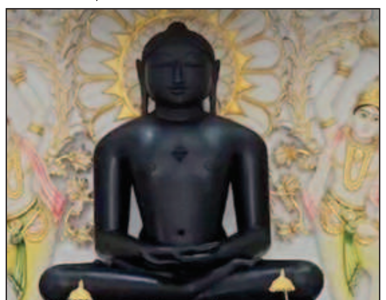

घटना गुरुवार रात करीब 12 से एक बजे की बीच की बताई जा रही है। ये चोरी भीलवाड़ा के जहाजपुर स्थित स्वस्ति धाम जैन मंदिर (जहाज मंदिर) में हुई। इधर, चोरी की जानकारी मिलने पर एडिशनल एसपी राजेश आर्य और अन्य पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे। मंदिर में लगे सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले गए। बताया जा रहा है कि चोरी की पूरी वारदात सीसीटीवी में कैद हो गई है।

सुबह भक्त पहुंचे तो पता चला

मंदिर में मुनि सूव्रतनाथ की प्रतिमा है। शुक्रवार सुबह कई श्रावक और श्राविका मंदिर में दर्शन करने पहुंचे थे। यहां प्रतिमा पर लगे आभा मंडल (पीछे वाले हिस्से) पर सोने के जेवरात गायब थे।

इसके बाद सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए। पता चला कि चोर आभा मंडल पर लगे करीब 1 किलो 300 ग्राम सोना चोरी कर ले गए। इसकी कीमत करीब 1 करोड़ 30 लाख रुपए है। वहीं 3 किलो चांदी के जेवरात भी चोर ले गए।

पार्षद पति ने मुंह बोला बेटा बनकर लगाया लाखों का चूना, पीड़ित ने लगाई न्याय की गुहार

जयपुर, 23 मई (एजेंसियां)। आदर्श नगर वार्ड नंबर 92 की पार्षद रितु मोतियानी के पति किशोर मोतियानी पर इलाके के वरिष्ठ नागरिक प्रकाशचंद खट्टर ने आरोप लगाया है कि किशोर ने मुंह बोला बेटा बनकर विश्वास में लेकर उनसे लाखों रुपये की ठगी की और पैसा वापस मांगने पर धमकियां भी दीं।

प्रकाशचंद खट्टर के अनुसार किशोर मोतियानी पहले उनके घर रोजाना आता-जाता था, साथ में खाना खाता, बातचीत करता और उन्हें दद्दू कहकर सम्मान दिखाता था। इसी विश्वास का फायदा उठाते हुए किशोर ने अचानक पैसों की जरूरत बताकर उनसे एक लाख रुपये उधार ले लिए। फिर धीरे-धीरे लिखित दस्तावेज पर कुल चार लाख रुपये और लिए। खट्टर के अनुसार किशोर ने बाद में घर आना बंद कर दिया और फोन पर संपर्क करने पर साफ कह दिया कि अब मेरे पास कोई पैसा नहीं है और कॉल काट दी। जब खट्टर ने समाज के लोगों और पुलिस से मदद लेनी चाही तो न तो समाज से ठोस सहयोग मिला और न ही आदर्श नगर थाने से। शिकायतें करने के बावजूद भी पुलिस ने कोई कार्रवाई नहीं की।

सरकारी नौकरी पाने में फर्जीवाड़ा करने वाले 65 कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज

297 कार्मिक रडार पर, यूं पकड़ी गई कारस्तानी

जयपुर, 23 मई (एजेंसियां)। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार के समय हुई सरकारी नौकरियों की कई भर्तियां सवालों के घेरे में रही। पेपर लीक, डमी कैंडिडेट और फर्जी डिग्रियों का जमकर दुरुपयोग सामने आया। इस तरह के सैकड़ों केस सामने आने के बाद सरकार ने व्यापक स्तर पर जांच शुरू करने के आदेश दिए। एसओजी की ओर से 6 जून 2024 को राज्य सरकार के सभी विभागों को निर्देश दिए गए कि पिछले पांच साल में सरकारी कर्मचारी अधिकारी बने तमाम लोगों के दस्तावेजों की पुन जांच की जाए।

सरकारी नौकरी लगने वालों के आवेदन फार्म, फोटो, साइन इत्यादी की जांच होने पर सैकड़ों संदिग्ध सामने आने लगे। इन्हें सूचीबद्ध कर जांच की गई तो फर्जीवाड़े की पोल खुलने लगी। अब एसओजी ने ऐसे 65 कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है जिन्होंने गड़बड़ियां करके सरकारी नौकरी हासिल की थी। दिसंबर 2023 में भाजपा सरकार बनते ही सरकारी नौकरियों में हुई गड़बड़ियों की जांच के लिए एसआईटी का गठन किया गया। एसओजी के एडीजी को इस एसआईटी का प्रभारी बनाया गया। एसआईटी की जांच में कई प्रतियोगिता परीक्षाओं में भारी फर्जीवाड़ा मिला। 200 से ज्यादा आरोपियों की गिरफ्तारी हुई। सब इंस्पेक्टर भर्ती, वनरक्षक, वनपाल, पटवारी, ग्रामसेवक, स्कूल व्याख्याता, वरिष्ठ अध्यापक, लैब सहायक, एलडीसी सहित कई ऐसी भर्तियां हैं जिनमें अभ्यर्थियों द्वारा गड़बड़ियां की गई। ऐसे सरकारी कर्मचारियों की अब खैर नहीं है। एसओजी ने ऐसे सरकारी कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है और जल्द ही धरपकड़ शुरू की जाएगी। आरोपियों की सरकारी नौकरी भी छूटेगी और उन्हें जेल भी जाना पड़ेगा।

एसओजी के डीआईजी परिस देशमुख ने बताते हैं कि माध्यमिक शिक्षा निदेशालय ने एक जांच कमेटी बनाई थी। इस कमेटी के अधीन सभी विभागों में 40 से ज्यादा अलग अलग कमेटियां बनाई गई।

राजस्थान में आंधी-बारिश से पेड़ और टीन शेड उखड़े

दोपहर के समय जोधपुर में ट्रैफिक सिग्नल फ्री किया गया, आज भी गर्मी का रेड अलर्ट

जयपुर, 23 मई (एजेंसियां)। भीषण गर्मी को देखते हुए दोपहर के समय जोधपुर में ट्रैफिक सिग्नल फ्री कर दिया गया है। कलेक्टर गौरव अग्रवाल ने बताया कि आने वाले दिनों में हीटवेव और तेज चलने की चेतावनी जारी की गई है। लू की चपेट में आने वालों के लिए हॉस्पिटल में अलग से वार्ड बनाया गया है, जहां एसी-कूलर, दवाओं की पर्याप्त व्यवस्था है। उधर, प्रदेश में कल (बुधवार) 7 शहरों (श्रीगंगानगर, बाड़मेर, बीकानेर, चूरू, जैसलमेर, पिलानी और वनस्थली) का तापमान 45 डिग्री से ज्यादा रहा। अचानक भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़ के आस-पास मौसम बदला। भीलवाड़ में तेज आंधी-बारिश से पेड़ और घर में लगे सोलर प्लेट तक उखड़ गए। चित्तौड़गढ़ के साडास गांव में तेज हवा से दीवार गिरी और मां-बेटे की मौत हो गई। शुक्रवार को प्रदेश के बीकानेर संभाग में गर्मी का रेड अलर्ट जारी किया गया है।

वक्फ संशोधन कानून के खिलाफ फिर उठी आवाज

जयपुर, 23 मई (एजेंसियां)। वक्फ कानून में किए गए संशोधन के खिलाफ जयपुर में एक बार फिर विरोध शुरू हो गया है। कई मुस्लिम संगठनों ने जयपुर के शहीद स्मारक पर गुरुवार को धरना दिया। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के बेनरतले दिए गए इस धरने में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुई।

कांग्रेस नेता और राजस्थान वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष खानू खान बुधवाली, जामा मस्जिद कमेटी के पूर्व सचिव अनवर शाह और मुस्लिम तेली महापंचायत के अध्यक्ष सहित विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने वक्फ संशोधित कानून का विरोध किया। इन प्रतिनिधियों का आरोप है कि केंद्र सरकार ने संविधान के खिलाफ जाकर इस कानून में बदलाव किया है जो कि मंजूर नहीं है। जब तक केंद्र सरकार वापस इसे मूलरूप में नहीं लाएगी, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

ये लो, एक और भ्रष्ट अफसर पकड़ा गया

हिंडौन सिटी में पीडब्ल्यूडी का एक्सईएन 3 लाख रुपये लेते गिरफ्तार

करौली, 23 मई (एजेंसियां)। भ्रष्ट अफसरों के खिलाफ एसीबी लगातार कार्रवाई कर रही है। इसके बावजूद कई अफसर भ्रष्टाचार करने से बाज नहीं आ रहे हैं। अभी तीन दिन पहले एसीबी ने अपने ही एडिशनल एसपी को और एक इंस्पेक्टर को गिरफ्तार किया था। अब मुख्यालय की टीम ने करौली जिले में एक बड़ी कार्रवाई की है। करौली के हिंडौन सिटी में सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिशाषी अभियंता भवानी सिंह मीणा को 3 लाख रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथों गिरफ्तार किया है।

43 लाख रुपए के लिए 3 प्रतिशत कमिशन मांगा

एसीबी के डीजी डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा ने बताया कि करौली चौकी को सरकारी अफसर के घूस मांगने की शिकायत प्राप्त हुई थी। परिवादी का कहना था कि उसकी फर्म मैसर्स संतोष कंट्रक्शन कंपनी द्वारा वर्ष 2024-25 में पीडब्ल्यूडी से टेंडर लेकर सड़कों की मरम्मत का काम किया गया था। कुल 43.19 लाख रुपए का कार्य करने के बाद भुगतान के लिए बिल विभाग में लगाए गए। प्रथम बिल के 10 लाख रुपए जारी करने की एवज में एक्सईएन भवानी सिंह मीणा ने पूरे 43 लाख रुपए का तीन प्रतिशत कमीशन मांगा। कमीशन नहीं देने पर भुगतान जारी नहीं करने की बात कही।

सत्यापन में यह शिकायत सही पाई गई। जिसके बाद ट्रेप की कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया। आरोपी एक्सईएन भवानी सिंह मीणा ने परिवादी को रिश्वत लेकर गंगापुर सिटी स्थित घर पर बुलाया था। शुक्रवार 23 मई की सुबह परिवादी अपने बेटे के साथ भवानी सिंह के घर पहुंचा। परिवादी से रिश्वत की राशि लेने के बाद एसीबी की टीम ने दबिश दी। आरोपी के बेडरूम में बेड पर बिछाई गई चादर पर रखे 3 लाख रुपए मिल गए। इसके बाद एसीबी ने आरोपी भवानी सिंह के हाथ धुलवाए को गुलाबी रंग आया। रिश्वत लेने की पुष्टि होने के बाद भवानी सिंह को उसके घर से ही गिरफ्तार कर लिया गया।

टीजीसीएचई का कौशल विकास पहल करने के लिए नैसकॉम के साथ समझौता

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना उच्च शिक्षा परिषद (टीजीसीएचई) ने उभरती प्रौद्योगिकियों में कौशल विकास पहल करने के लिए नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज (नैसकॉम)/आईटी-आईटीईएस सेक्टर स्किल्स काउंसिल के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। यह समझौता ज्ञापन शुक्रवार को आईटी और उद्योग मंत्री श्रीधर बाबू की उपस्थिति में हुआ। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य टीजीसीएचई के तत्वावधान में विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और संस्थानों के इंजीनियरिंग और गैर-इंजीनियरिंग (सभी स्तरों) के छात्रों और शिक्षकों के लिए उभरती प्रौद्योगिकियों में प्रासंगिक कौशल को उन्नत करने के उद्देश्य से प्रशिक्षण कार्यक्रमों को लागू करना है। इस सहयोग का उद्देश्य माइक्रो-लर्निंग सामग्री, फाउंडेशन और डीप-स्किलिंग पाठ्यक्रम (निःशुल्क और सशुल्क दोनों) और एम्बेडेड सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट एंड टेस्टिंग में एक विशेष ऑफ़लाइन पाठ्यक्रम प्रदान करना है, ताकि एक महत्वपूर्ण डिजिटल क्षमता का निर्माण किया जा सके। नैसकॉम तेलंगाना राज्य में तीन (3) वर्षों के दौरान सालाना एक लाख शिक्षार्थियों के कौशल विकास की सुविधा प्रदान करेगा। मंत्री श्रीधर बाबू ने इस अवसर पर बोलते हुए सूचना प्रौद्योगिकी और संचार (आईटी एंड सी) क्षेत्र के विकास में तेलंगाना सरकार द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने मुख्यमंत्री के दृष्टिकोण को दोहराया जो प्रत्येक स्नातक को उद्योग-प्रासंगिक कौशल के साथ सशक्त बनाना है। इस संदर्भ में, उन्होंने इस महत्वपूर्ण मिशन को आगे बढ़ाने में तेलंगाना उच्च शिक्षा परिषद (टीजीसीएचई) और नैसकॉम/आईटी-आईटीईएस सेक्टर स्किल्स काउंसिल के सहयोगी प्रयासों की सराहना की। श्रीधर बाबू ने आईटीआई को उन्नत प्रशिक्षण केंद्रों (एटीसी) में परिवर्तित करने पर प्रकाश डाला, जिससे सभी छात्रों को 100 प्रतिशत रोजगार मिलेगा। मंत्री ने हैदराबाद को भारत की कौशल राजधानी बनाने पर भी जोर दिया। उन्होंने तेलंगाना में छात्रों को बाजार की मांग के अनुसार कौशल प्रदान करके और उपयुक्त उद्योग इंटर्नशिप प्रदान करके उद्योग अकादमिक सहयोग के महत्व पर भी प्रकाश डाला। नैसकॉम की आईटी-आईटीईएस सेक्टर स्किल्स काउंसिल की सीईओ डॉ. अभिलाषा गौर ने अपने संबोधन में भारत में आईटी उद्योग के विकास में नैसकॉम द्वारा किए गए महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने पूरे क्षेत्र में कौशल विकास को मजबूत करने के लिए आईटी-आईटीईएस सेक्टर स्किल्स काउंसिल द्वारा की गई विभिन्न पहलों को भी रेखांकित किया। टीजीसीएचई के अध्यक्ष प्रो.वी. बालाकिस्ता रेड्डी ने अपने भाषण में उद्योग की मांगों के साथ उच्च शिक्षा को संरेखित करने के लिए टीजीसीएचई द्वारा की गई हाल की पहलों को प्रदर्शित किया। उन्होंने स्नातक स्तर पर शुरू किए जा रहे व्यापक पाठ्यक्रम सुधारों के बारे में विस्तार से बताया, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि प्रत्येक छात्र डिजिटल मार्केटिंग, साइबर सुरक्षा, फिनटेक, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सस्टेनेबल साइंस जैसे उभरते क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी-संचालित पाठ्यक्रमों से परिचित हो। इन परिवर्तनकारी बदलावों का उद्देश्य तेलंगाना भर में स्नातकों की रोजगार क्षमता और उद्योग-तैयारी को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाना है।

एनएचआरसी ने हैदराबाद पुलिस को जारी किया नोटिस

संध्या थिएटर भगदड़ पर 6 सप्ताह के भीतर मांगी विस्तृत रिपोर्ट

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) ने कथित तौर पर हैदराबाद पुलिस को नोटिस जारी कर छह सप्ताह के भीतर अभिनेता अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2 की स्क्रीनिंग के दौरान 4 दिसंबर, 2024 को संध्या थिएटर में हुई भगदड़ पर विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। इससे पहले, न्यायालय ने पुलिस महानिदेशक और हैदराबाद के पुलिस आयुक्त को नोटिस जारी कर संध्या थिएटर में हुई भगदड़ पर विस्तृत कार्रवाई रिपोर्ट (एटीआर) मांगी थी, जिसमें रेवती नामक महिला की मौत हो गई थी और उसका सात वर्षीय बेटा श्रीतेज घायल हो गया था। आयोग ने अधिवक्ता रामा राव इम्माननी द्वारा दायर शिकायत पर कार्रवाई करते हुए रिपोर्ट के लिए चार सप्ताह की समय सीमा तय की है। आयोग कथित तौर पर हैदराबाद पुलिस द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट से संतुष्ट नहीं था, क्योंकि उसमें आवश्यक विवरण नहीं थे। इसमें कहा गया है कि पुलिस ने दुर्घटना को रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठाया और पहले पेश की गई रिपोर्ट संतोषजनक नहीं थी।

ईडी चार्जशीट में रेवंत रेड्डी का नाम केटीआर ने कांग्रेस से स्पष्टीकरण मांगा

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा नेशनल हेराल्ड मनी लॉन्ड्रिंग मामले में अपने आरोपपत्र में रेवंत रेड्डी का नाम शामिल किए जाने के बाद बीआरएस के कार्यकारी अध्यक्ष केटी रामाराव ने मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी पर तीखा हमला किया। आज मीडियाकर्मियों से बात करते हुए केटीआर ने रेवंत रेड्डी को एक आदतन अपराधी और बैगमैन बताया, जिसमें उन्होंने कुख्यात 2015 के कैश-फॉर-वोट मामले का जिक्र किया, जिसमें रेड्डी को विधायकों को 50 लाख रुपये की रिश्वत देने की कोशिश करते हुए वीडियो में पकड़ा गया था। केटीआर ने कहा, अब वह भ्रष्टाचार का वही तरीका अपना रहे हैं। नेशनल हेराल्ड घोटाले में ईडी की चार्जशीट के अनुसार, उस समय तेलंगाना प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष रहे रेवंत रेड्डी ने व्यापारिक घरानों से पैसे मांगे और कथित तौर पर कई कांग्रेस पदाधिकारियों को रिश्वत दी। यह विपक्ष की ओर से लगाया गया आरोप नहीं है। यह केंद्रीय एजेंसी की कानूनी फाइलिंग में है। केटीआर ने इस घटनाक्रम पर कांग्रेस नेता राहुल गांधी की चुप्पी पर सवाल उठाया। उन्होंने पूछा, यहां तक कि जब उनके अपने सांसद कोमटीरेड्डी वेंकट रेड्डी ने रेवंत पर 50 करोड़ रुपये में पीसीसी पद खरीदने का आरोप लगाया, तब भी कांग्रेस ने आंखें मूंद लीं। क्या राहुल गांधी अब कम से कम जिम्मेदारी लेंगे? ईडी द्वारा चार्जशीट में रेवंत का औपचारिक रूप से नाम दर्ज किए जाने के बाद केटीआर ने कहा कि सच्चाई सामने आ गई है। बिल्ली बैग से बाहर आ गई है। तेलंगाना अब आधिकारिक तौर पर कांग्रेस पार्टी के लिए एटीएम बन गया है। पहले पार्टी के भीतर पद के बदले पैसे मिलते थे।

अब राज्य स्तर पर खुली लूट हो गई है। कांग्रेस के सत्ता में आने के बाद से भ्रष्टाचार के पैटर्न का हवाला देते हुए केटीआर ने कहा कि तेलंगाना में घोटाले साप्ताहिक मामला बन गए हैं। उन्होंने कहा, अमृत घोटाले से लेकर आरआर टैक्स घोटाले और नागरिक आपूर्ति घोटाले तक, यह सूची अंतहीन है। यह अब केवल राजनीतिक बयानबाजी नहीं है।

भ्रष्टाचार अब खुलकर सामने आ गया है। उन्होंने एआईसीसी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और विपक्ष के नेता राहुल गांधी से स्पष्ट बयान जारी करने का आह्वान किया : क्या वे ऐसे सीएम का समर्थन करना जारी रखेंगे, जिसके खिलाफ ईडी ने आरोप पत्र दाखिल किया है या वे निर्णायक कार्रवाई करेंगे? केटीआर ने इसे रिश्वतखोरी और राजनीतिक पक्षपात का खुला मामला बताते हुए निष्कर्ष निकाला। उन्होंने कहा, यह अब केवल बीआरएस का आरोप नहीं है। इसे अब एक केंद्रीय एजेंसी ने मान्य किया है। हम केवल रेवंत रेड्डी से ही नहीं, बल्कि कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व से भी जवाब मांगते हैं। बीआरएस नेता ने राष्ट्रीय मीडिया और संवैधानिक संस्थाओं से इस बात पर ध्यान देने का आह्वान किया कि उन्होंने "तेलंगाना में नैतिक शासन का पूर्ण पतन" कहा है।

सिकंदराबाद छावनी बोर्ड ने नए भवन उपनियमों पर शुरू की चर्चा

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। नए भवन नियमों में कुछ संशोधनों के बाद, सिकंदराबाद छावनी बोर्ड (एससीबी) के अधिकारियों ने शुक्रवार को आयोजित बोर्ड बैठक में इसे मुख्य एजेंडे के रूप में रखा। नए भवन नियमों पर चर्चा शुरू हो गई है। दरअसल, एससीबी को रक्षा मंत्रालय (एमओडी) के तहत प्रशासन चलाने वाला नागरिक निकाय माना जाता है, फिर भी कैंटोनमेंट बोर्ड के पास पड़ोसी जीएचएमसी की तरह अलग से बिल्डिंग बायलॉज नहीं हैं।

दक्षिण मध्य रेलवे

हमें @SCRailwayIndia पर फॉलो करें

द.म. रेलवे की निविदा सूचनाओं के विवरणों को हमारी वेबसाइट : www.scr.indianrailways.gov.in

ई-निविदा सूचना सं. 018-2025 दि.22-05-2025 PUB/0599

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, वरिष्ठ विभागीय अभियंता/को-आर्ड./गुंटकल द्वारा निम्न कार्यों हेतु ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

बंद करने की तिथि व समयः 17-06-2025 के 15.00 बजे

क्रम सं.01, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल-पश्चिम-1851, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः एसडब्ल्यूः। स्प्रिंग शाप में सेंटर आफ एक्सेलेन्स के लिए इपोक्सी फ्लूरिंग का प्रावधान। एसडब्ल्यूः।। व्हील शाप में सेंटर आफ एक्सेलेन्स के लिए इपोक्सी फ्लूरिंग का प्रावधान। विज्ञापित मूल्य रु. 87,49,219.86, पूर्व धरोहर राशि(पूधरा) रु.175000.00

क्रम सं.02, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल- सेंट्रल या मध्य-1852, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः 1) जीवाय-पीडीएल(एसएल) सेक्शनः-एडीइएन/जीवाय सब डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/जीवाय क्षेत्राधिकार में सेस्स का प्रस्तावित मरम्मत कार्य। 2) डीएचएनइ-जीटीएल सेक्शनः-एडीइएन/ डीएचएनइ सब डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/पीडीएल एवं एसएसइ/पी.वे/डीएचएनइ क्षेत्राधिकार में सेस्स का प्रस्तावित मरम्मत कार्य। 3) केडीपी-जीवाय(डीएल),जीवाय-पीडीएल(एसएल)--एडीइएन/ जीवाय सब डिवीजन के तहत एसएसइ/पी.वे/केडीपी एवं एसएसइ/पी.वे/ जीवाय क्षेत्राधिकार में सैन्ड हम्प्स का मानकीकरण या स्टैंडर्डाइजेशन कार्य। विज्ञापित मूल्य रु.1,15,06,474.19, पूर्व धरोहर राशि(पूधरा) रु.207500.00

क्रम सं.03, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल- दक्षिण-1853, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः वायए-एनडीएल सेक्शन(एसएसइ/पी.वे/जेएमडीजी)-फार्मेशन का मजबूतीकरण/ सेस्स की मरम्मत-165410 सीयुएम। विज्ञापित मूल्य रु.5,03,09,405.00, पूधराःरु.401600.00

क्रम सं.04, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल- दक्षिण-1854, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः जीडीआर-टीपीटीवाय एण्ड आरयु-जीवाय सेक्शन (सीनि. डीइएन/साउथ/जीटीएल)-एडीइएन/आरयु सब डिवीजन (दो पैकेट) के तहत 77.23 किमी फेन्सिंग लंबाई(फेज-।।) के लिए एनएचएआई एन्टि-क्रैश बैरियर/डब्ल्यू-बीएम स्टील फेन्सिंग का इस्तेमाल करते हुए, स्पीड 130 किमी प्रति घंटा एवं उससे अधिक के लिए ट्रैक के चहुं ओर सेफ्टी फेन्सिंग या सुरक्षा बाड का प्रावधान। विज्ञापित मूल्य रु.27,46,32,634.74 पूधराःरु.1523200.00

क्रम सं.05, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल- दक्षिण-1855, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः आरयु-केडीपी सेक्शन (सीनि. डीइएन/साउथ/जीटीएल)-एडीइएन/आरजेपी सब डिवीजन (दो पैकेट) के तहत 134.704 किमी फेन्सिंग लंबाई(फेज-।) के लिए एनएचएआई एन्टि-क्रैश बैरियर/डब्ल्यू-बीएम स्टील फेन्सिंग का इस्तेमाल करते हुए, स्पीड 130 किमी प्रति घंटा एवं उससे अधिक के लिए, ट्रैक के चहुं ओर सेफ्टी फेन्सिंग या सुरक्षा बाड का प्रावधान। विज्ञापित मूल्य रु.46,72,74,787.95 पूधराःरु.2486400.00

क्रम सं.06, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल-दक्षिण-1856, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः आरयु-केडीपी सेक्शन (सीनि. डीइएन/साउथ/जीटीएल)-एडीइएन/एचएक्स सब डिवीजन (दो पैकेट) के तहत 95.99 किमी फेन्सिंग लंबाई(फेज-।) के लिए एनएचएआई एन्टि-क्रैश बैरियर/डब्ल्यू-बीएम स्टील फेन्सिंग का इस्तेमाल करते हुए, स्पीड 130 किमी प्रति घंटा एवं उससे अधिक के लिए, ट्रैक के चहुं ओर सेफ्टी फेन्सिंग या सुरक्षा बाड का प्रावधान। विज्ञापित मूल्य रु.34,09,02,653.83 पूधराःरु.1854500.00

क्रम सं.07, निविदा सं.-इएनजीजी-जीटीएल- उत्तर-1857, कार्य विवरणः गुंटकल डिवीजनः गूटी -वाडी सेक्शन-रायचूर डिपो पर 50 एमएम गेज हार्ड व टिकाउ मशीन से कुचला हुवा स्टोन बल्लास्ट की आपूर्ति व स्टैकिंग करना तथा उपरोक्त को, मेकानिकल ढंग से हापर्स/ट्राफिक बल्लास्ट वैगान्स में लदान/लोडिंग करना(1,80,000सीयुएम)। विज्ञापित मूल्य रु.20,92,98,600.00 पूधराःरु.1196500.00

किसी भी शुद्धिपत्रों को केवल आनलाईन पर ही जारी किया जायेगा।

विभागीय रेल प्रबंधक/कार्य/गुंटकल

निविदा सं.05/2025-26/एसआर.डीइइ/टीआर/एचवायबी दि.22-05-2025 PUB/0596

कृते भारत के राष्ट्रपति की ओर से व के लिए, एसआर.डीईई/टीआर/एचवायबी द्वारा तत्संबंधित निविदा सं.05/2025-26/एसआर.डीईई/टीआर/एचवायबी, दि.22-05-2025, बंद करने की तिथिः 13-06-2025 के 15.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं। बोलीदाता अपने मूल/संशोधित बोलियों को तत्संबंधित बंद करने की तिथि एवं समय तक ही प्रस्तुत कर सकते हैं। इस निविदा के लिए मैन्युएल आफर्स अमान्य हैं तथा इस तरह के किसी भी मैन्युएल आफर्स की प्राप्ति पर उसे नजर अंदाज किया जायेगा।

क्रम सं.01, कार्य विवरणः निविदा सं. 05/2025-26/एसआर.डीईई/टीआर/एचवायबीः हैदराबाद डिवीजनः एचवायबी डिवीजनः दो वर्षों की अवधि के लिए एनजेडबी, केसीजी, टीएमएक्स व जीडब्ल्यूडी पर वार्षिक रखरखाव ठेका(एएमसी) एवम् 8 व्हीलर टावर कारों के 8 नग डिजल इंजिनों का बी,सी एवम् डी निरीक्षण या चेक्स। अनुमानित लागतःरु.82,30,619.60, पूर्व धरोहर राशि(पूधरा) रु.1,64,600.00, पूरा करने की अवधिः 02 वर्ष(24 महिने), बंद करने की तिथिः 13-06-2025

वेबसाइट विवरण:www.ireps.gov.in **पर देखें।**

निविदा का संपूर्ण विवरण देखने के लिए नोटिस बोर्ड स्थानः एसआर.डीईई/टीआर/एचवायबी का कार्यालय, हैदराबाद भवन, सिकंदराबाद-500025

वरिष्ठ विभागीय बिजली अभियंता(ट्रैक्शन), हैदराबाद

सं.- एनडब्ल्यू/148/डब्ल्यू।।।/निविदा सूचना/2025-26 दि.22-05-2025 PUB/0597

निविदा के विवरण को पहले ही वेबसाइटः www.ireps.gov.in पर अपलोड किया गया है।

क्रम सं. 01, निविदा सं. टी-202526-3-011, एथारिटीः को-आर्ड., कार्य विवरणः (एसडब्ल्यू-।) एनइडीः एमएमआर-एमयुइ सेक्शनः पीओजेड-डीएलबी स्टेशनों के बीच मानवनिर्मित एलसी नं. 41@ किमी 95/9-96/0 के स्थान पर लिमिटेड हाइट सब-वे का प्रावधान। (एसडब्ल्यू-।।) एनइडीः एमएमआर-एमयुइ सेक्शनः पीओजेड-डीएलबी स्टेशनों के बीच मानवनिर्मित एलसी नं. 42@ किमी 97/2-3 के स्थान पर लिमिटेड हाइट सब-वे का प्रावधान। निविदा मूल्यःरु.143949902.61, पूधराःरु.869800.00, पूरा करने की अवधिः पंद्रह महिने, निविदा प्रपत्र मूल्यःरु.शून्य

क्रम सं.01, निविदा सं. टी-202526-3-011, तत्समान स्वभाव का कार्य (50 लाख रुपये से ज्यादा मूल्य के लिए)- बाक्स पुषिंग/पाइप जैकिंग तकनीक से जुडा पुल कार्य या ब्रिज वर्क निहित कोई भी सिविल इंजीनियरिंग या अभियांत्रिकी कार्य।

उपरोक्त निविदा दि.16-06-2025 के 15.00 बजे बंद होगी।

एसआर.डीईएन/को-आर्ड./नांदेड

ई-निविदा सूचना सं. जीएनटी/एसजी/36/334, दि.20-05-2025 PUB/0598

अधोहस्ताक्षरी द्वारा निम्न कार्यों हेतु दि.16-06-2025 के 12.00 बजे तक ई-निविदाएं आमंत्रित हैं।

आइडी नं. -334, कार्य विवरणः गुंटूर डिवीजन के 8 स्थानों (जैसे केसीडी, वीकेएन(पीएफ-2), एनडीएल (पीएफ-3), जीआयडी, एमआरजीए (पीएफ-2), सीबीएम, आरएएल व एमसीएलए) पर सीआईबी, टीआईबी, एजीडीबी आदि डिस्प्ले सिस्टम्स का प्रावधान। विज्ञापित निविदा मूल्यःरु.4,94,25,229.38, पूधरा/बोली-सुरक्षा रु. 3,97,200.00, निविदा दस्तावेज मूल्यःरु. शून्य

यदि निविदाओं के खोलने की तिथि को अवकाश घोषित रहता है तो, निविदाओं को उसके अगले कार्य दिन के नियत समय पर खोला जायेगा।

ई-बोलियों की आनलाईन प्रस्तुति अंतिम तिथि 16-06-2025 के दोप.12.00 बजे तक है। अधिक जानकारी हेतु हमारे वेबसाइटः www.ireps.gov.in पर लाग आन करें।

किसी भी अधिक संचार/शुद्धिपत्रों को केवल ई-पोर्टलःwww.ireps.gov.in द्वारा सूचित किया जायेगा।

वरिष्ठ विभागीय सिग्नल दूर संचार अभियंता, गुंटूर

A0729

निविदा शर्तों/अधिक जानकारी एवं निविदा दस्तावेजों की डाउनलोडिंग हेतु कृपया वेबसाइट्स https://www.ireps.gov.in अथवा www.scr.indianrailways.gov.in पर जाएं।

200 करोड़ की ज़मीन को पुनः प्राप्त करने के लिए हटाया अतिक्रमण

हाइड्रा की कार्रवाई, जुबली हिल्स में पेद्दम्मा मंदिर के पास है जमीन

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। शुक्रवार को हाइड्रा अधिकारियों द्वारा पेद्दम्मा मंदिर के पास जुबली हिल्स रोड नंबर 41 पर अवैध संरचनाओं को ध्वस्त करने के दौरान हल्का तनाव व्याप्त हो गया। स्थानीय निवासियों की शिकायतों के बाद कि खुले नाले पर अतिक्रमण कर अवैध निर्माण किया गया है, हाइड्रा ने सुबह ही तोड़फोड़ शुरू कर दी। 500 गज से ज़्यादा क्षेत्र में अवैध निर्माणों को जमींदोज कर दिया गया। मौके पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया था।

अधिकारियों के अनुसार, हाइड्रा की कार्रवाई में आज 200 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की 2 एकड़ पार्क भूमि और नाला भूमि को पुनः प्राप्त किया गया। नाला और पार्क रोड के किनारे बने अवैध ढांचों को हटा दिया गया, जिससे पार्क तक रास्ता बन गया, जो लगभग 2 एकड़ क्षेत्र में फैला हुआ है। एक किराएदार ने मकान किराए पर लेकर मकान के आसपास की सरकारी और सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए बनी जमीन पर मालिक की जानकारी के बिना कब्जा कर लिया था। किराएदार होटल और हॉस्टल चला रहा था और हर महीने 10 लाख रुपए किराया वसूल रहा था। हाइड्रा ने कहा कि पूर्व में नोटिस जारी किए जाने के बाद किरायेदार ने अदालत का दरवाजा खटखटाया। कोर्ट ने कहा कि किराएदार का उन ढांचों पर कोई अधिकार नहीं है। नाले और सड़क पर अतिक्रमण करने वाले ढांचों को हटाने का काम कोर्ट के आदेश पर शुरू किया गया।

रेवंत रेड्डी की विधायकों के साथ गुप्त बैठकों से तेलंगाना कांग्रेस में दरार

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी की नागरकर्नूल और महबूबनगर के विधायकों के साथ गोपनीय बैठकों ने तेलंगाना कांग्रेस मंत्रिमंडल के भीतर मतभेद को और गहरा कर दिया है, जिससे चर्चा से बाहर रखे गए वरिष्ठ नेताओं के बीच चिंता बढ़ गई है।

हाल के हफ्तों में मुख्यमंत्री ने वरिष्ठ नेताओं, मंत्रियों या करीबी सहयोगियों को शामिल किए बिना बंद कमरे में बैठकें कीं। इस गोपनीयता ने इन चर्चाओं के उद्देश्य और समय के बारे में सवाल खड़े कर दिए हैं।

सत्ता संभालने के बाद, तेलंगाना कांग्रेस ने राज्य के पूर्ववर्ती जिलों में प्रजा पालना गतिविधियों, कल्याण और विकास कार्यक्रमों की देखरेख के लिए जिला प्रभारी मंत्रियों को नियुक्त किया। जबकि विधायकों के साथ मुख्यमंत्री की बैठकों का स्वागत किया गया, पारदर्शिता की कमी ने चिंताएं पैदा कीं। बैठकों से कुछ घंटे पहले ही विधायकों को निमंत्रण भेजे गए, जिससे सांसदों, जिला प्रभारी मंत्रियों, वरिष्ठ नेताओं और टीपीसीसी अध्यक्ष महेश कुमार गौड़ को कोई जानकारी नहीं मिली।

गांधी भवन के एक वरिष्ठ नेता ने टिप्पणी की कि यदि इन बैठकों का उद्देश्य पार्टी को मजबूत करना है, तो जिला प्रभारी मंत्रियों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए और उन्हें कार्यवाही की जानकारी होनी चाहिए। उन्होंने सवाल उठाया कि प्रमुख हस्तियों को इसमें क्यों शामिल नहीं किया गया।

मुख्यमंत्री ने विधायकों के साथ व्यक्तिगत बैठक कर उनके निर्वाचन क्षेत्र में प्रदर्शन सुधारने का वादा किया था। हालांकि, वरिष्ठ नेताओं का तर्क है कि जिला प्रभारी मंत्रियों और पार्टी के वरिष्ठ नेताओं को शामिल न करने से यह लक्ष्य कमजोर होगा और पार्टी कार्यकर्ताओं में आशंकाएं पैदा होंगी।

इस बीच, एआईसीसी तेलंगाना प्रभारी मीनाक्षी नटराजन गांधी भवन में निर्वाचन क्षेत्रवार बैठकें कर रही हैं, जिसमें वरिष्ठ नेता और मंत्री शामिल हैं। मुख्यमंत्री की समानांतर बैठकों ने एआईसीसी और पार्टी कार्यकर्ताओं को भेजे जा रहे संदेश को लेकर चिंताएं पैदा कर दी हैं। कुछ नेताओं को डर है कि वरिष्ठ नेताओं को दरकिनार करने से पार्टी की एकता पर और अधिक असर पड़ सकता है, जिसका असर आगामी चुनावी चुनौतियों के लिए कांग्रेस की तैयारियों पर पड़ सकता है।

अवैध कनेक्शन देने की कोशिश करते समय इलेक्ट्रीशियन की करंट से मौत

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। शुक्रवार को शहर के बाहरी इलाके मेडचल के अठवेल्ली गांव में अवैध कनेक्शन देने का प्रयास करते समय एक निजी इलेक्ट्रीशियन की कथित तौर पर बिजली लगने से मौत हो गई। जानकारी के अनुसार, उसी गांव के डी. लिंगम (50) बिजली के ट्रांसफार्मर से अवैध कनेक्शन लेने का प्रयास कर रहे थे, तभी उन्हें करंट का झटका लगा और उनकी मौके पर ही मौत हो गई। सूचना मिलने पर मेडचल पुलिस मौके पर पहुंची और जांच की तथा मामला दर्ज किया गया।

श्री समर्थ कामधेनु गौशाला में आज गौपूजा गौग्रास सेवा एवं श्रीराम कीर्तन आयोजित

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। लव फॉर काऊ फाउंडेशन के ट्रस्टी रिद्धिश जागीरदार एवं मुकेश चौहान ने बताया कि गत रविवार को चारमिनार गुलज़ार हौज के पास हुए दर्दनाक अग्निकांड में स्वर्गस्थ 17 आत्माओं को शांति एवं मोक्ष प्राप्ति हेतु जियागुडा समर्थ कामधेनु गौशाला मे गौपूजा, गौग्रास सेवा एवं श्रीराम कीर्तन किया गया!

इस अवसर पर जसमत पटेल ने बताया कि इस दुर्घटना में छोटे छोटे बच्चों के साथ उनके माता पिता दादा दादी चाचा चाची एवं अन्य का झुलस कर स्वर्गवास होने का सुनते ही बहुत आघात हुआ! रिद्धिश जागीरदार ने बताया कि सनातन धर्म के अनुसार गौमाता में 33 करोड़ देवी देवताओं का वास होता है, गौमाता की पूजा और गौसेवा कर के गौमाता से यही प्रार्थना की गयी कि दिवंगत सभी 17 आत्माओं को शांति प्रदान हो और सभी आत्माओ को गौकृपा प्राप्त हो।

तेलंगाना का समस्त गोप्रेमी परिवार इस मुश्किल घड़ी में पीड़ित परिवारों के साथ खड़ा है। लव फॉर काऊ फाउंडेशन के चेयरमैन जसमत पटेल, ट्रस्टी रिद्धिश जागीरदार, आल इंडिया ओल्ड टेम्पल रेनोवेशन ट्रस्ट के मुकेश चौहान जैन, गौशाला फेडरेशन के महेश अग्रवाल, सोनी समाज के गौसेवक हरिकिशन मायच्छ, अग्रवाल समाज के पुरुषोत्तम गुप्ता, भाग्यनगर कावड़ समिति के पंकज वर्मा, रितेश मोदी, यशमित वर्मा, जियागुडा गौशाला के प्रभुदत्त महाराज एवं अन्य गौप्रेमी उपस्थित रहे।

इंदिराम्मा मकान वितरित करने का जिम्मा जग्गा रेड्डी को

सरकार में किसी पद पर नहीं हैं जग्गा रेड्डी

संगारेड्डी, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी द्वारा राष्ट्रीय निवेश एवं विनिर्माण क्षेत्र (एनआईएमजेड) के तहत विस्थापितों को इंदिराम्मा मकान सौंपने की जिम्मेदारी कांग्रेस नेता टी जग्गा रेड्डी को सौंपने के फैसले की सभी वर्गों ने आलोचना की है, क्योंकि सरकार में उनके पास कोई पद नहीं है। शुक्रवार को जहीराबाद में जनसभा को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने घोषणा की कि उन्होंने आवास योजना के लाभ वितरित करने की जिम्मेदारी जग्गा रेड्डी को सौंपी है। इस घोषणा से जहीराबाद के कांग्रेस नेता भी हैरान रह गए। हालांकि सेटविन के चेयरमैन गिरिधर रेड्डी, जहीराबाद के सांसद सुरेश शेतकर और अन्य नेता मौजूद थे, लेकिन रेवंत ने यह जिम्मेदारी संगारेड्डी के पूर्व विधायक को सौंप दी।

जग्गा रेड्डी का इस आयोजन, ज़हीराबाद कांग्रेस से पहले कोई संबंध नहीं था। रेवंत रेड्डी ने कलेक्टर, वलुरू क्रांति और अन्य अधिकारियों को योजना को लागू करने में जग्गा रेड्डी के निर्देशों का पालन करने का निर्देश भी दिया था। ज़हीराबाद क्षेत्र के 5,600 से अधिक किसान एमआईएमजेड के तहत विस्थापित हुए थे, और उन्होंने परियोजना के कारण 12,500 एकड़ जमीन खो दी थी।

यदि बीज एवं उर्वरक ऊंचे दामों पर बेचे गए तो सख्त कार्रवाई की जाएगी : जिला कलेक्टर

कुमरमभीम आसिफाबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। जिला कलेक्टर वेंकटेश धोत्रे ने कहा कि जिले में बीज और उर्वरक को ऊंचे दामों पर बेचने वाले दुकान मालिकों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। शुक्रवार को उन्होंने जिले के कागजनगर कस्बे में हिमांशु ट्रेडर खाद भंडार का औचक निरीक्षण किया और वहां स्टॉक रजिस्टर, रसीद बुक, मूल्य सूची, तौल मशीन और बीज के पैकेट का निरीक्षण किया तथा किसानों को बेचे जा रहे बीज के मूल्य के बारे में जानकारी ली।

इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने कहा कि किसानों को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त गुणवत्ता वाले बीज ही बेचे जाएं तथा बिक्री के समय क्रेता को संबंधित कंपनी के नाम की रसीद उपलब्ध कराई जाए। उन्होंने कहा कि यदि नियमों का उल्लंघन किया गया और ऊंचे दामों पर सामान बेचा गया तो दुकान का लाइसेंस रद्द कर दिया जाएगा और संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ मामला दर्ज किया जाएगा। सुझाव दिया गया कि स्टोर में उपलब्ध स्टॉक का विवरण प्रतिदिन कृषि विभाग के अधिकारियों को उपलब्ध कराया जाए। बाद में, उन्होंने कस्बे में सत्य साईं फर्टिलाइजर्स की दुकान का निरीक्षण किया और किसानों को बेचे जा रहे कंपनी के बीजों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने कहा कि किसानों की इच्छानुसार सभी कम्पनियों के बीज उपलब्ध करवाए जाएं, बीज बिक्री के समय क्रेता को रसीद दी जाए तथा नकली व प्रतिबंधित बीज बेचे जाने पर सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि किसानों को बीज के पैकेट सुरक्षित रखने चाहिए। उन्होंने कहा कि बीज सरकार द्वारा निर्धारित मूल्य पर ही बेचे जाएं, संभाग में पर्याप्त बीज उपलब्ध हो, खाद की कमी न हो तथा खाद की दुकानों का प्रतिदिन निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए।

इस कार्यक्रम में जिला कृषि अधिकारी श्रीनिवास राव, एडीए मनोहर, तहसीलदार किरण, कृषि विभाग अधिकारी रामकृष्ण, डीलरों व किसानों ने भाग लिया।

प्रथम पृष्ठ का शेष भाग...

ट्रंप की ऐपल ...

जबकि चीन टैक्स टैरिफ को लेकर अनिश्चितता के बीच अन्य बाजारों के लिए ज्यादातर डिवाइस का उत्पादन करेगा। इसका मतलब है कि अमेरिका में बिकने वाले आईफोन ज्यादातर भारत में बनेंगे। बाकी दुनिया के लिए ये फोन चीन में तैयार होंगे।

ट्रंप चाहते हैं कि ऐपल अमेरिका में नौकरियां पैदा करे। इसलिए उनकी इच्छा है कि ऐपल अपने फोन अमेरिका में ही बनाए। ऐपल अभी भारत और चीन में अपने फोन बनाती है क्योंकि यह सस्ता पड़ता है। अगर ऐपल को अमेरिका में फोन बनाने के लिए मजबूर किया जाता है तो आईफोन महंगे हो सकते हैं।

ट्रंप की धमकी से भारत के इलेक्ट्रॉनिक निर्माण क्षेत्र, निवेश और व्यापार संबंधों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह घटना वैश्विक व्यापार नीतियों की अनिश्चितता को भी दर्शाती है। इसके भारत पर कई तरह के संभावित असर हो सकते हैं।

ऐपल चीन पर अपनी निर्भरता कम करने के लिए भारत में अपने उत्पादन को बढ़ा रही है। ट्रंप की धमकी से ऐपल की इस रणनीति पर असर पड़ सकता है। भारत सरकार 'मेक इन इंडिया' पहल के तहत इलेक्ट्रॉनिक्स निर्माण को बढ़ावा दे रही है। ऐपल का भारत में उत्पादन विस्तार इस पहल के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। ट्रंप के टैरिफ से भारत के इस लक्ष्य को झटका लग सकता है।

फ्लाइट के टेक ...

न्यूजपेपर द हिंदू ने डीजीसीए के एक सीनियर अधिकारी के हवाले से बताया कि, यह आदेश रक्षा मंत्रालय की सिफारिश पर जारी किया गया है। आदेश 20 मई को जारी किया गया था। जानकारी अब सामने आई है।

डीजीसीए ने एयरलाइंस को निर्देश दिया है कि वे इसके लिए क्रू मेंबर्स के लिए एक एसओपी तैयार करें। ताकि क्रू वेस्टर्न बॉर्डर के पास मौजूद एयरपोर्ट्स पर फ्लाइट के उड़ान भरने से पहले या लैंडिंग के बाद पैसेंजर्स को इसकी सूचना दे सकें। आदेश में कहा गया है कि इन नियमों का उल्लंघन करने पर यात्रियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

अब जानिए मौजूदा नियम क्या है :

> रिपोर्ट के मुताबिक, कई पायलटों का कहना है कि टेकऑफ और लैंडिंग के वक्त खिड़की को खुला रखना जरूरी होता है।

> यह एक सिक्योरिटी प्रोटोकॉल है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि बाहर खतरे का अंदाजा लगाया जा सके। जिसमें तकनीकी खराबी, पक्षी टकराने से इंजन में आग लगना शामिल है।

> खुली खिड़कियां इमरजेंसी में मौजूदा स्थिति को समझने में मदद करती हैं। जिससे स्थिति को संभालने और उसका सॉल्यूशन निकालने में मदद मिलती है।

विमान में चीख ...

बच्चों के रोने की आवाजें भी आ रही हैं।

डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) ने एक बयान जारी करते हुए कहा कि, 21 मई को इंडियो की ए321 फ्लाइट दिल्ली से श्रीनगर जा रही थी। पंजाब के पठानकोट के पास अचानक मौसम बिगड़ गया। ओले गिरने लगे। पायलट के मुताबिक, उसने इंडियन एयर फोर्स से बाईं तरफ यानी इंटरनेशनल बॉर्डर की तरफ मुड़ने की परमीशन मांगी। जिसे मना कर दिया गया।

स्वतंत्र वार्ता

Email :
svaarttha2006@gmail.com
svaarttha@rediffmail.com
svaarttha2006@yahoo.com

Epaper :
epaper.swatantravaartha.com

For Advertisement :
swadds1@gmail.com

भारतीय टेक्नीशियंस नहीं लौटे पाकिस्तान

बिना डीआरएस हो रहे मैच > पीएसएल में तकनीकी संकट > 25 मई को है फाइनल

लाहौर, 23 मई (एजेंसियां)। पाकिस्तान सुपर लीग के बाकी मैच डिसीजन रिव्यू सिस्टम (डीआरएस) के बिना खेले जाएंगे। यह तकनीक मुहैया कराने वाली टेक्नीशियन टीम लीग के फिर से शुरू होने के बाद पाकिस्तान वापस नहीं आई। रिपोर्ट के मुताबिक, टेक्निकल टीम में ज्यादातर भारतीय हैं। पीसीबी ने 9 मई को पाकिस्तान-भारत के बीच टकराव के कारण पीएसएल स्थगित कर दिया था। सीजफायर के बाद 17 मई से इसे फिर शुरू किया गया है।

पांच मैच बिना डीआरएस के ही खेले गए

क्रिकेट की वेबसाइट क्रिकइंफो के मुताबिक, फिर शुरू हुए पीएसएल में अब तक 5 मैच हुए हैं। ये बिना डीआरएस के ही खेले गए हैं। हालांकि, इस बीच विवाद का मामला सामने नहीं आया है। वहीं, पीसीबी ने अभी तक इस पर सार्वजनिक रूप से कुछ नहीं कहा है। लीग के अब 2 मैच ही बाकी हैं। फाइनल 25 मई को है, जबकि क्वालिफायर 23 मई यानी आज खेला जाना है।

2017 से पीएसएल में उपलब्ध था डीआरएस

पीएसएल में डीआरएस का इस्तेमाल 2017 से शुरू हुआ था। इसका इस्तेमाल भी अब भी हो रहा था। भारत-पाक के बीच बढ़ते तनाव की वजह से पीएसएल को स्थगित किए जाने से पहले तक डीआरएस का इस्तेमाल किया जा रहा है।

पहले पीसीबी बचे हुए मैच यूएई में करवाना चाहता था

पीसीबी अपनी लीग के बचे मैच दुबई में कराना चाहता था, लेकिन आमीरात क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने मैच होस्ट करने से इनकार कर दिया। 8 मई की सुबह पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड ने पीएसएल के बाकी मैचों को यूएई में कराने का ऐलान किया था। इसके बाद अमीरात क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने न्यूज एजेंसी से कहा था तनाव के बीच पीएसएल के मैच यूएई में कराना मुश्किल है। जिसके बाद पीएसबी ने इसे स्थगित कर दिया है। वहीं 7 मई को भारत के ड्रोन हमले में रावलपिंडी का स्टेडियम बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था, जिसके बाद पीएसएल मैच री-शेड्यूल कर दिया गया था।

क्वेटा ग्लैडिएटर्स फाइनल में पहुंच चुकी है

पीएसएल का फाइनल 25 मई को लाहौर में खेला जाएगा। क्वेटा ग्लैडिएटर्स फाइनल में पहुंच चुकी है। दूसरा फाइनलिस्ट के फैसला आज लाहौर कैलंदर्स और इस्लामाबाद यूनाइटेड के बीच खेले जाने वाले दूसरे क्वालिफायर्स मैच से हेगा। यह मैच भी लाहौर में खेला जाना है।

पंजाब के 3 खिलाड़ी अंडर-19 भारतीय टीम में सिलेक्ट

इंग्लैंड दौरे पर जाएंगे, पूर्व क्रिकेटर हरभजन ने पीसीए की तारीफ की

जालंधर, 23 मई (एजेंसियां)। भारत के पूर्व स्पिनर हरभजन सिंह ने पंजाब के युवा क्रिकेटरों विहान मल्होत्रा, राहुल कुमार और अनमोलजीत सिंह को आगामी इंग्लैंड दौरे के लिए भारत की अंडर-19 टीम में चुने जाने पर बधाई दी है। तीनों को आयुष म्हात्रे की अगुआई वाली टीम में शामिल किया गया है। इस दौरे में 50 ओवर का अभ्यास मैच, उसके बाद पांच मैचों की युवा वनडे सीरीज और 24 जून से 23 जुलाई तक इंग्लैंड अंडर-19 के खिलाफ दो बहु-दिवसीय मैच शामिल हैं।

हरभजन ने अंडर-19 टीम में पंजाब के तीन खिलाड़ियों को शामिल किए जाने पर खुशी जताई और भारतीय क्रिकेट के सर्वोत्तम हित में लगातार काम करने के लिए पंजाब क्रिकेट संघ की प्रशंसा की। पंजाब क्रिकेट संघ के मुख्य क्रिकेट सलाहकार हरभजन ने कहा- यह बहुत खुशी का दिन है क्योंकि पंजाब के तीन खिलाड़ियों को अंडर-19 टीम में शामिल किया गया है। विहान, राहुल और अनमोलजीत बहुत प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं। हरभजन ने कहा- मैं प्रार्थना करता हूं कि वे विजयी होकर लौटें और उनके परिवारों और कोचों को हार्दिक बधाई। बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज विहान पिछले साल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चार दिवसीय मैचों के लिए भारत की अंडर-19 टीम के उप-कप्तान थे। वहीं, बाकी दो खिलाड़ियों ने भी अपना अच्छा प्रदर्शन दिखाया है।

हरभजन सिंह ने कहा- पंजाब क्रिकेट एसोसिएशन ने हमेशा भारत और बीसीसीआई के हित में काम किया है और आगे भी करता रहेगा। पंजाब के युवा भारतीय क्रिकेट में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और भारतीय टीम के लिए पंजाब से कई मज़बूत दावेदार आ रहे है।

किदांबी श्रीकांत मलयेशिया मास्टर्स के सेमीफाइनल में पहुंचे, कपिला-क्रास्टो की जोड़ी हारी

कुआलालंपुर, 23 मई (एजेंसियां)। भारत के अनुभवी बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत का शानदार प्रदर्शन जारी है और उन्होंने मलयेशिया मास्टर्स में पुरुष एकल वर्ग के सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। श्रीकांत ने अपने से ऊंची रैंकिंग के फ्रांस के टोमा जूनियर पोपोव पर तीन गेम में जीत दर्ज कर अंतिम चार का टिकट कटाया। 65वीं रैंकिंग पर काबिज श्रीकांत ने क्वार्टर फाइनल में दुनिया के 18वें नंबर के पोपोव को कड़ी टक्कर देते हुए एक घंटे 14 मिनट में 24-22, 17-21, 22-20 से शिकस्त दी।

टनाका से होगा सामना

श्रीकांत का सामना अब सेमीफाइनल में जापान के युशी टनाका से होगा। पूर्व नंबर एक खिलाड़ी श्रीकांत एक साल में पहली बार किसी टूर्नामेंट के सेमीफाइनल पहुंचे हैं।

श्रीकांत विश्व चैंपियनशिप और एशियाई खेलों के रजत पदक विजेता हैं और अब उनके सामने टनाका की कड़ी चुनौती होगी। टनाका ने पुरुष एकल क्वार्टर फाइनल में टोमा जूनियर के भाई क्रिस्टो पोपोव को 21-18, 16-21, 21-6 से पराजित किया था। पुरुष एकल का दूसरा सेमीफाइनल जापान के चौथे वरीय कोडाई नारोका और चीन के दूसरे वरीय लि शि फेंग के बीच खेला जाएगा। ध्रुव कपिला और तनीषा क्रास्टो की मिश्रित युगल जोड़ी शुक्रवार को क्वार्टर फाइनल में हारकर बाहर हो गई जिससे श्रीकांत बीडब्ल्यूएफ विश्व टूर सुपर 500 टूर्नामेंट में एकमात्र भारतीय बचे हैं।

सूर्यवंशी और म्हात्रे इंग्लैंड दौरे के लिए भारत की अंडर-19 टीम में शामिल

मुंबई, 23 मई (एजेंसियां)। आईपीएल 2025 के उभरते स्टार खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी और आयुष म्हात्रे को इंग्लैंड के आगामी दौरे के लिए भारत की अंडर-19 टीम में शामिल किया गया है। इन दोनों ने टूर्नामेंट के मौजूदा संस्करण में अपने-अपने पक्ष के लिए शानदार प्रदर्शन किया है। म्हात्रे इस दौरे पर टीम की अगुवाई करेंगे, जिसमें 24 जून से 23 जुलाई तक 50 ओवर का अभ्यास मैच, उसके बाद पांच मैचों की यूथ वनडे सीरीज और इंग्लैंड अंडर-19 के खिलाफ दो मल्टी-डे मैच शामिल हैं।

मुंबई के अभिज्ञान कुंडू को म्हात्रे का डिप्टी नियुक्त किया गया है। सूर्यवंशी ने महज 14 साल की उम्र में आईपीएल में सबसे कम उम्र के शतक बनाने के बाद सुर्खियां बटोरीं। पिछले साल की नीलामी में राजस्थान रॉयल्स ने उन्हें 1.1 करोड़ रुपये में खरीदा था। सात मैचों में, इस किशोर ने एक शतक और एक अर्धशतक सहित 252 रन बनाए हैं। दूसरी ओर, म्हात्रा को चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ की चोट के कारण मध्य सत्र में टीम में शामिल किया गया था। 17 वर्षीय मुंबई के बल्लेबाज ने पीली जर्सी में प्रभावशाली प्रदर्शन किया है और चेन्नई की कमजोर बल्लेबाजी इकाई में तुरंत प्रभाव डाला है। सलामी बल्लेबाज ने छह मैचों में 206 रन बनाए हैं, जिसमें एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के खिलाफ 94 रनों की सर्वश्रेष्ठ पारी भी शामिल है। यह जोड़ी पिछले साल यूएई में अंडर-19 एशिया कप में भारत की उपविजेता टीम का भी हिस्सा थी। अन्य उल्लेखनीय चयन में पंजाब के बल्लेबाज विहान मल्होत्रा और केरल के लेग स्पिनर मोहम्मद एनान शामिल हैं।

टीम इंडिया को बड़ा झटका : शमी का इंग्लैंड टेस्ट सीरीज में खेलना मुश्किल

मेडिकल टीम ने बीसीसीआई को दी अहम जानकारी

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। देवेंद्र पांडे। इंग्लैंड के खिलाफ पांच मैच की टेस्ट सीरीज के लिए टीम का चयन करने को लेकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) के पास अब बस कुछ ही दिन बचे हैं। द इंडियन एक्सप्रेस को पता चला है कि सीनियर चयन समिति तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी को दौरे से बाहर कर सकती है। बीसीसीआई की मेडिकल टीम ने बोर्ड को सूचित किया है कि 34 वर्षीय तेज गेंदबाज लंबे स्पैल नहीं कर पाएंगे। उनके सभी पांच टेस्ट मैच खेलने की संभावना भी बहुत कम है।

शमी को लेकर दुविधा में चयनकर्ता

मोहम्मद शमी को भारतीय टीम के साथ ले जाने और उन्हें कुछ मुकाबलों में खिलाने पर विचार-विमर्श किया गया। चूंकि जसप्रीत बुमराह ने पहले ही बीसीसीआई को सूचित कर दिया है कि उनका शरीर तीन टेस्ट मैच से अधिक नहीं झेल सकता है। ऐसे में चयन समिति इस दुविधा में है कि क्या इसी तरह के अनिश्चित गेंदबाज को टीम में शामिल किया जाए, जो शायद कुछ ही मैच खेल पाए। इससे भारतीय टीम की योजना भी प्रभावित होती है।

प्लेऑफ में वापसी कर सकते हैं हेजलवुड

सीएसके के खिलाफ मैच से पहले चोटिल हुए थे; ब्रिस्बेन में ट्रेनिंग शुरू की

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड प्लेऑफ मैचों में वापसी कर सकते हैं। उन्होंने कंधे की चोट से उबरने के बाद डब्ल्यूटीसी फाइनल की तैयारी कर रही ऑस्ट्रेलिया टीम के साथ ब्रिस्बेन में ट्रेनिंग शुरू कर दी है। उनकी चोट में धीरे-धीरे सुधार दिख रहा है। इस सीजन में हेजलवुड का प्रदर्शन शानदार रहा है, जहां उन्होंने दस मैचों में 17.27 की औसत से 18 विकेट लिए हैं।

आरसीबी प्लेऑफ में अपना स्थान पक्का कर चुकी है

आरसीबी प्लेऑफ में अपना स्थान पक्का कर चुकी है। अब तक खेले 12 मैचों में 8 जीत और 3 में हार का सामना करना पड़ा है। वहीं, एक मैच बारिश की वजह से रद्द हो गया था। बेंगलुरु के 17 पॉइंट है, वह पॉइंट टेबल में दूसरे स्थान पर है। लीग चरण में उनके दो मैच बचे हैं। आईपीएल 2025 के सस्पेंड होने से पहले जोश हेजलवुड चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ 3 मई को बेंगलुरु में खेले मुकाबले में नहीं खेल पाए थे। उस दौरान उनकी कंधे और साइड स्ट्रेन की चोट के बारे में पता चला था। 9 मई को आईपीएल के सस्पेंड होने के बाद वह ऑस्ट्रेलिया लौट गए थे और 17 मई को फिर से आईपीएल शुरू होने के बाद अपनी टीम बेंगलुरु से नहीं जुड़े हैं।

हेजलवुड की वापसी डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए भी महत्वपूर्ण

वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल को ध्यान में रखते हुए भी हेजलवुड की वापसी महत्वपूर्ण है, जहां उनका साउथ अफ्रीका के खिलाफ खेलना तय माना जा रहा है। आईपीएल फाइनल 3 जून को होगा, जिसके बाद वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल की तैयारी के लिए सिर्फ एक हफ्ते का समय बचेगा। वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल 11 से 15 जून के बीच लॉर्ड्स में ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के बीच खेला जाना है। आईपीएल के प्लेऑफ में पहुंचने वाली टीमों में ऑस्ट्रेलिया के दो खिलाड़ी ही शामिल हैं। आईपीएल का आखिरी लीग 27 मई खत्म हो जाएगा। हेजलवुड के अलावा जोश इंगलिस (पंजाब किंग्स) भी प्लेऑफ में शामिल होंगे। कप्तान पैट कमिंस और ट्रैविस हेड 25 मई को सनराइजर्स हैदराबाद के साथ अपना सीजन समाप्त करेंगे। मिशेल स्टार्क आईपीएल के फिर शुरू होने पर अपनी टीम दिल्ली कैपिटल्स के साथ नहीं जुड़े। मार्नस लाबुशेन, कैमरन ग्रीन, ब्यू वेबस्टर और ट्रैवलिंग रिजर्व ब्रेंडन डॉगेट वर्तमान में काउंटी क्रिकेट खेल रहे हैं।

आईपीएल से हुई थी हेजलवुड की वापसी

हेजलवुड की आईपीएल से वापसी हुई थी। वह पिछले साल के आखिर में भारत के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दूसरे टेस्ट में चोटिल हो गए थे। उनके मांसपेशियों में खिंचाव आ गया था। उसके बाद वह क्रिकेट से दूर थे। वहीं, इस साल के शुरुआत में श्रीलंका दौरे पर भी नहीं गए थे। वहीं फरवरी में खेले गए चैंपियंस ट्रॉफी में भी वह टीम का हिस्सा नहीं थे।

पहला हॉकी इंडिया मास्टर्स कप 18 जून से चेन्नई में-इंडियन ओपन सर्फिंग 30 मई से

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। पूर्व खिलाड़ियों के लिये पहला हॉकी इंडिया मास्टर्स कप 2025 18 से 27 जून तक चेन्नई में खेला जाएगा। हॉकी इंडिया ने शुक्रवार को आयोजन स्थल और तारीखों की घोषणा की। इस टूर्नामेंट में पुरूष और महिला खिलाड़ी भाग लेंगे। हॉकी इंडिया ने एक बयान में कहा कि लीग के नियमों के तहत पुरूष वर्ग में 40 या उससे अधिक उम्र के खिलाड़ी भाग ले सकेंगे जबकि महिला वर्ग में यह सीमा 35 वर्ष है। दोनों श्रेणियों में टीमों की घोषणा जल्दी की जाएगी। इसमें भाग लेने के लिये खिलाड़ियों को अपनी प्रदेश ईकाइयों के पास पंजीयन कराना होगा। टूर्नामेंट लीग सह नॉकआउट आधार पर खेला जायेगा। भारतीय महिला टीम की पूर्व कप्तान असुंथा लाकड़ा ने इस बारे में कहा, 'पहले हॉकी इंडिया मास्टर्स कप का हिस्सा होना मेरे लिये भावनात्मक और रोमांचक पल है। हॉकी ने ही मुझे बनाया है और अब मुझे अपने साथ खेल चुके खिलाड़ियों के साथ फिर खेलने का मौका मिलेगा जो खास है।' राष्ट्रीय सर्फिंग चैम्पियनशिप सीरिज का दूसरा चरण इंडियन ओपन सर्फिंग का छठा सत्र 30 मई से एक जून तक खेला जाएगा। भारतीय सर्फिंग महासंघ ने कहा कि इसका आयोजन सर्फिंग स्वामी फाउंडेशन और मंत्रा सर्फ क्लब करेगा।

लखनऊ के खिलाफ हार से गुजरात को नुकसान अब आरसीबी शीर्ष-दो की प्रबल दावेदार

मुंबई-पंजाब मैच भी होगा अहम

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। आईपीएल 2025 में प्लेऑफ की चार टीमें तय हो चुकी हैं। गुजरात टाइटंस, रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, पंजाब किंग्स और मुंबई इंडियंस ने प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई कर लिया है और अब जंग शीर्ष दो में जगह बनाने को लेकर है। शीर्ष दो में रहने वाली टीमों को फायदा मिलता है। ऐसे में चारों टीमें शीर्ष पर लीग राउंड को खत्म करने की कोशिश करेंगी। हालांकि, गुरुवार को लखनऊ सुपर जाएंट्स के खिलाफ गुजरात टाइटंस की हार ने बेंगलुरु और पंजाब की उम्मीदें जगा दी हैं। अब गुजरात की टीम अधिकतम 20 अंक तक पहुंच सकती है, जबकि आरसीबी और पंजाब अधिकतम 21-21 अंक तक पहुंच सकती है। मुंबई की टीम चाहेगी कि बेंगलुरु और पंजाब अपने-अपने दोनों मैच हार जाएं ताकि उनके लिए शीर्ष दो का रास्ता खुल जाए। प्लेऑफ लेग की शुरुआत 29 मई से होने जा रही है। इस साल क्वालिफायर-एक 29 मई को मोहाली में खेला जाएगा। वहीं, एलिमिनेटर 30 मई को मोहाली में ही खेला जाएगा। एक जून को अहमदाबाद में क्वालिफायर-दो खेला जाना है, जबकि तीन जून को अहमदाबाद में ही फाइनल खेला जाएगा। क्वालिफायर-एक में अंक तालिका में शीर्ष दो स्थान पर रहने वाली टीमें भिड़ती हैं।

कोहली ने आधे घंटे लाल पिच पर बैटिंग की

इकाना में मोहम्मद शमी के साथ मस्ती, खिलाड़ियों की मैदान में लगी बैठकी

लखनऊ, 23 मई (एजेंसियां)। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में आईपीएल मैच के दौरान विराट कोहली दूसरी बार प्रैक्टिस करने उतरे। करीब आधे घंटे तक नेट पर बैटिंग करके पसीना बहाया। मोहम्मद शमी के साथ मस्ती करते हुए मैदान में भी देखे गए। उसके बाद मैदान से बाहर चले गए। 8 मई को भी विराट ने इकाना स्टेडियम में बैटिंग प्रैक्टिस की थी।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के खिलाड़ियों ने भी प्रैक्टिस की। खिलाड़ियों ने लाल और काली मिट्टी के पिच पर प्रैक्टिस की है। इस दौरान खिलाड़ियों ने मैदान में बैठकर हंसी-मजाक भी किया। आज रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के मैच खेला जाएगा।

थ्रो डाउन विशेषज्ञों ने विराट के लिए गेंद फेंकी

विराट कोहली ने लाल मिट्टी की पिच पर बैटिंग की प्रैक्टिस की। उनके लिए थ्रो डाउन विशेषज्ञ बॉलिंग करते हुए देखे गए। शुरुआती करीब 15 बॉल कोहली को थ्रो डाउन विशेषज्ञों ने डाली। विराट इन गेंदों को रोकते नजर आए। बाद में कई गेंदों पर कवर ड्राइव और स्टेट ड्राइव लगाते नजर आए। प्रैक्टिस के दौरान कुछ कैच भी उठे। स्पिन और तेज गेंदों पर विराट ने बड़ी हिट्स लगाने का भी प्रयास किया। वह मिड ऑन, मिड ऑफ और स्ट्रेट ड्राइव लगाते हुए भी दिखे। वहीं, प्लेयर्स के वार्म अप करने के दौरान आरसीबी के मुख्य कोच पिच का निरीक्षण करते हुए भी देखे गए।

मोहम्मद शमी के साथ 15 मिनट की मस्ती

विराट कोहली ने बैटिंग प्रैक्टिस के बाद करीब 15 मिनट तक मोहम्मद शमी के साथ मस्ती की। इस दौरान दोनों बातचीत करते हुए देखे गए। दोनों खिलाड़ी गले भी मिले। बातचीत के दौरान दोनों खिलाड़ी हंसते हुए दिखाई पड़े।

इसके बाद विराट कोहली मैदान से बाहर चले गए। करीब 1 घंटे तक ही विराट मैदान पर मौजूद रहे। वहीं, मैदान पर आने के बाद विराट ने पहले वार्म अप भी किया था। आरसीबी के मुख्य कोच एंडी फ्लावर ने प्रेसवार्ता करते हुए कहा था कि आज भी हमने एक छोटा ट्रेनिंग सेशन किया। हम कल के लिए पूरी तरह तैयार हैं। लखनऊ में दोनों मैच जीतकर टीम क्वालीफायर में पहुंचेगी।

जिम्बाब्वे के खिलाफ शतक लगाते ही इंग्लैंड के ओली पोप ने रच दिया इतिहास

ऐसा करने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज बने

लॉर्ड्स, 23 मई (एजेंसियां)। इंग्लैंड के नंबर 3 ओली पोप ने इतिहास रचा। उन्होंने जिम्बाब्वे के खिलाफ एकमात्र टेस्ट मैच में घरेलू मैदान (नॉटिंघम के ट्रेंट ब्रिज स्टेडियम) पर शतक लगाया। जिम्बाब्वे के खिलाफ शतक लगाने के साथ ही वह विभिन्न देशों के खिलाफ अपने पहले 8 टेस्ट शतक लगाने वाले दुनिया के पहले बल्लेबाज बन गए।

खास यह है कि ओली पोप ने अब तक 9 टीमों के खिलाफ टेस्ट मैच खेला है। इसमें से 8 टीमों के खिलाफ उन्होंने शतक लगाये हैं। वह भारत, साउथ अफ्रीका, न्यूजीलैंड, वेस्टइंडीज, श्रीलंका, पाकिस्तान, आयरलैंड और जिम्बाब्वे के खिलाफ टेस्ट मैच में शतक लगा चुके हैं। सिर्फ ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ ही वह अब तक टेस्ट मैच में शतक नहीं लगा पाए हैं। इस साल के अंत में उनके ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेलने की संभावना है। अगर वह ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भी टेस्ट शतक बनाने में सफल हो जाते हैं तो एक बेहतरीन क्लब में शामिल हो जाएंगे। नॉटिंघम के ट्रेंट ब्रिज में चार दिवसीय टेस्ट के पहले दिन पहले बल्लेबाजी करते हुए इंग्लैंड ने 88 ओवर में 3 विकेट पर 498 रन बनाए। बेन स्टोक्स की अगुआई वाली इंग्लैंड के शीर्ष तीनों बल्लेबाजों ने शतक बनाए। सलामी बल्लेबाज बेन डकेट ने घरेलू मैदान पर 100 गेंद मे शतक जड़ा, जबकि जैक क्रॉली ने अपेक्षाकृत धीमे शतक (145 गेंद में) लगाया। वह 171 गेंद में 124 रन बनाकर आउट हुए। दिन का खेल खत्म होने के समय ओली पोप 163 गेंद में 169 और हैरी ब्रूक 18 गेंद में 9 रन बनाकर क्रीज पर थे। जो रूट 44 गेंद में 3 चौके की मदद से 34 रन बनाकर पवेलियन लौट चुके थे।

ओली पोप ने 109 गेंद में अपना 8वां टेस्ट शतक पूरा किया। उन्होंने 3 अंकों का आंकड़ा पार करते हुए कई रिकॉर्ड्स अपने नाम किये। ओली पोप ने नंबर 3 पर अपना सातवां शतक बनाया। इससे वह इस स्थान पर इंग्लैंड के बल्लेबाजों में जोनाथन ट्रॉट के बराबर आ गए।

पंजाब किंग्स में संकट : टीम के सह-निदेशकों के खिलाफ कोर्ट पहुंचीं प्रीति जिंटा

नई दिल्ली, 23 मई (एजेंसियां)। पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) में मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। टीम के मालिकों के बीच विवाद छिड़ गया है। टीम की सह-मालकिन प्रीति जिंटा अदालत पहुंच गईं हैं। उन्होंने टीम के सह निदेशकों मोहित बर्मन और नेस वाडिया के खिलाफ चंडीगढ़ की एक अदालत में लीगल केस दायर किया है। यह मामला ऐसे समय सामने आया है, जब इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में टीम शानदार फॉर्म में है। श्रेयस अय्यर की अगुआई में पंजाब किंग्स प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई कर चुकी है। उसके 12 मैच में 17 अंक हैं और वह आईपीएल 2025 की अंक तालिका में तीसरे स्थान पर है। उसके अभी दो मुकाबले बाकी हैं। उसे अब 24 मई को दिल्ली कैपिटल्स और 26 मई को मुंबई इंडियंस से भिड़ना है। मुंबई इंडियंस भी आईपीएल 2025 प्लेऑफ के लिए क्वालिफाई कर चुकी है।

दिल्ली कैपिटल्स बाहर हो चुकी है। पंजाब किंग्स की नजर दोनों मैच जीतकर अंक तालिका में शीर्ष पर रहते हुए नॉकआउट चरण में प्रवेश करने पर है। आईपीएल 2014 के बाद से यह पहली बार है जब पंजाब प्लेऑफ में पहुंची है।

प्रीति जिंटा की ओर से दायर याचिका में 21 अप्रैल को आयोजित विशेष आम बैठक की वैधता को चुनौती दी गई है। आरोप लगाया गया है कि टीम के अन्य सह निदेशकों ने नियमों का उल्लंघन करते हुए बैठक की। बॉलीवुड स्टार प्रीति जिंटा, मोहित बर्मन और नेस वाडिया केपीएच ड्रीम क्रिकेट प्राइवेट लिमिटेड के निदेशक हैं। यही कंपनी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की फ्रेंचाइजी पीबीकेएस (पंजाब किंग्स) की मालिक है।

प्रीति जिंटा ने कहा है कि 21 अप्रैल को आयोजित ईजीएम (विशेष आम बैठक) में कंपनी अधिनियम, 2013 और अन्य सचिवीय नियमों के तहत उचित प्रक्रियाओं का पालन नहीं किया गया। अभिनेत्री और कारोबारी प्रीति जिंटा ने दावा किया है कि उन्होंने 10 अप्रैल को एक ईमेल के माध्यम से बैठक पर आपत्ति जताई थी, लेकिन संदेश को नजरअंदाज कर दिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि मोहित बर्मन ने नेस वाडिया के समर्थन से बैठक आयोजित की थी।

इंदिरा गांधी का मेदक से अटूट संबंध रहा है : रेवंत रेड्डी

मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने जहीराबाद में जनसभा को संबोधित किया

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने जहीराबाद में एक जनसभा को संबोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि इंदिराम्मा का मेदक क्षेत्र से अटूट संबंध है। उन्होंने कहा कि जब भी हम मेदक का नाम याद करते हैं, तो हमें इंदिराम्मा का ख्याल आता है। जब भी हम इंदिराम्मा को याद करते हैं, तो हमारे दिमाग में मेदक का ख्याल आता है।

नेता इंदिराम्मा, जो अपनी अंतिम सांस तक मेदक की सांसद रहीं। उन्होंने कहा कि पिछली सरकार के कार्यकाल में एनआईएमजेड का विकास अवरुद्ध हो गया था।जनता सरकार के सत्ता में आने के बाद, हमने निमज भूमि पर बसने वालों के लिए मुआवजा बढ़ाया और भूमि अधिग्रहण में तेजी लाई। मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि हुंडई मोटर कंपनी जल्द ही यहां परिचालन शुरू करेगी। मैं इस मंच पर घोषणा कर रहा हूं कि एनआईएमजे भूमि से विस्थापित 5612 परिवारों को इंदिराम्मा मकान दिए जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम जग्गा रेड्डी को उन परिवारों को भोजन उपलब्ध कराने और मकान का मालिकाना हक जारी करने की जिम्मेदारी सौंप रहे हैं। मैं अधिकारियों को उन परिवारों को इंदिराम्मा आवास देने के लिए आवश्यक कार्रवाई करने का आदेश दे रहा हूं।

हम जहीराबाद निर्वाचन क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक धनराशि प्रदान करेंगे। चुनाव के दौरान राजनीति होती है। हम विकास में सबको शामिल करके आगे बढ़ेंगे। मेरे ध्यान में लाया गया कि नारायणखेड़ निर्वाचन क्षेत्र के विकास के लिए धन उपलब्ध कराया जाना चाहिए। सुरेश शेतकर और संजीव रेड्डी नारायणखेड़ के लिए दो आंखों की तरह हैं। हम नारायणखेड़ के विकास के लिए आवश्यक धनराशि प्रदान करेंगे। सरकार एकीकृत मेदक जिले के विकास को आगे बढ़ाने के लिए आगे बढ़ रही है। जनता सरकार किसानों के कल्याण के लिए कदम उठा रही है।

हमने किसानों का कर्ज माफ किया है और किसानों को कर्ज मुक्त बनाया है। उन्होंने कहा कि हमने किसान बीमा की राशि बढ़ाकर 5 लाख रुपए कर दी है। हम भूमिहीन गरीबों को भी बीमा उपलब्ध करा रहे हैं। हम गरीबों को 200 यूनिट मुफ्त बिजली उपलब्ध करा रहे हैं। हम मात्र 15 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध करा रहे हैं। आरटीसी में महिलाओं को मुफ्त यात्रा की सुविधा दी गई।

हम स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को बसें उपलब्ध कराकर उन्हें प्रोत्साहित कर रहे हैं। हम लड़कियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के काम को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं लड़कियों से वादा करता हूं। हम पांच साल में एक करोड़ महिलाओं को करोड़पति बनाएंगे। उसने बेरोजगार युवकों को अपने घर पर ही नौकरी देने का वादा करके धोखा दिया और कहा कि वह उन्हें घर पर ही नौकरी देगा। जैसे ही जनता की सरकार सत्ता में आई, हमने सरकारी नौकरियों की रिक्तियों को भर दिया। हम राज्य के विकास के लिए केंद्र सरकार से मदद लेंगे।

हम राज्य को मिलने वाली धनराशि के लिए प्रधानमंत्री मोदी से जितनी बार संभव होगा, मिलेंगे। चुनाव के दौरान राजनीति होती है उसे छोड़कर आइये विकास के लिए मिलकर आगे बढ़ें। मैं विपक्ष के नेता से अपील करता हूं कि विधान सभा में आइए। जनता के मुद्दों पर चर्चा कीजिए।

यदि हमसे कोई गलती हो तो कृपया हमें सुझाव दें और हम उसे सुधार देंगे। अगर आप सोचते हैं कि आप सत्ता में आने पर ही विधानसभा में आएंगे तो लोग आपको सबक सिखाएंगे। जन प्रतिनिधि के रूप में हमें सदैव जनता के साथ खड़ा रहना चाहिए। हारें या जीतें, मैं हमेशा लोगों के बीच रहूंगा। मुख्यमंत्री बनने के बाद भी मैंने कभी अहंकार नहीं दिखाया। मैं हर किसी से मिलता हूं, चाहे वह बड़ा हो या छोटा। जब तक मैं राज्य का विकास नहीं कर लेता और इसे लोगों को समर्पित नहीं कर देता, मुझे नींद नहीं आएगी।

सुप्रीम कोर्ट ने सट्टेबाजी ऐप पर महत्वपूर्ण आदेश दिए : के.ए. पॉल

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। प्रजा शांति पार्टी के अध्यक्ष के.ए. पॉल ने आज कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने विवादास्पद सट्टेबाजी ऐप पर महत्वपूर्ण आदेश दिए हैं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने सट्टेबाजी ऐप पर केंद्र सरकार और राज्यों को नोटिस दिया है। दिल्ली में बोलते हुए उन्होंने याद दिलाया कि सट्टेबाजी ऐप की लत के कारण हजारों लोग मारे गए हैं। उन्होंने दुख व्यक्त किया कि लोग लाखों और करोड़ों का कर्ज लेने के बाद आत्महत्या कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सुप्रीम कोर्ट ने सरकारों को नोटिस देकर पूछा है कि क्या उन्होंने आत्महत्याओं को रोकने के लिए कोई कदम उठाए हैं। के.ए. पॉल ने धूम्रपान को हानिकारक बताते हुए कहा कि सट्टेबाजी ऐप धूम्रपान से लाखों गुना अधिक खतरनाक हैं और आरोप लगाया कि देश में 1100 से अधिक सेलिब्रिटी सट्टेबाजी ऐप का प्रचार कर रहे हैं। के.ए. पॉल ने कहा कि करोड़ों रुपये की फीस लेने के बाद सेलिब्रिटी सट्टेबाजी ऐप का प्रचार कर रहे हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि सट्टेबाजी ऐप के खतरे के कारण आत्महत्याएं न हों। वह चाहते हैं कि केंद्र सरकार देश में सट्टेबाजी ऐप पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून बनाए। उन्होंने कहा कि इन ऐप को बढ़ावा देने वालों के खिलाफ तेलंगाना में मामले दर्ज किए गए हैं, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है? के.ए. पॉल ने शनिवार को होने वाले शांति सम्मेलन के बारे में भी बात की।

सोशल मीडिया पर मवेशियों की हत्या के वीडियो पोस्ट करने पर कड़ी कार्रवाई : सीवी आनंद

पुलिस कमिश्नर ने बकरीद त्योहार को लेकर गौसेवा संघों के साथ बैठक की

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। आगामी बकरीद त्योहार की प्रत्याशा में, हैदराबाद सिटी पुलिस ने आज उत्सव के लिए शांतिपूर्ण माहौल को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न गौसेवा (गाय संरक्षण) संघों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक की मेजबानी की। बशीरबाग के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित इस बैठक की अध्यक्षता हैदराबाद के पुलिस कमिश्नर, डीजी, सी.वी. आनंद ने की।

बैठक में गोसेवा संगठनों के प्रमुख प्रतिनिधियों के साथ-साथ हैदराबाद के एडिशनल सीपी, लॉ एंड ऑर्डर, विक्रम सिंह मान की सक्रिय भागीदारी देखी गई। उपस्थित लोगों में युग तुलसी फाउंडेशन के अध्यक्ष कोलीशेट्टी शिवकुमार, तेलंगाना के गोरक्ष दल के अध्यक्ष दीपक सिंह, लव फ़ॉर काऊ फ़ाउंडेशन हैदराबाद अध्अयक्ष जहमत पटेल, अन्य समर्पित गौ सेवा रक्षक, साथ ही हैदराबाद सिटी पुलिस कमिश्नरेट के पुलिस उपायुक्त (डीसीपी), अतिरिक्त डीसीपी और मंडल सहायक पुलिस आयुक्त (एसीपी) भी उपस्थित थे।

चर्चा के दौरान, गौ सेवा फ़ाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने गायों और अन्य मवेशियों की रक्षा के लिए अपनी अटूट प्रतिबद्धता दोहराई, पशु क्रूरता को रोकने के अपने प्रयासों पर बल दिया। उन्होंने मवेशी संरक्षण, गाय आधारित कृषि और संबंधित उत्पादों को बढ़ावा देने में अपने महत्वपूर्ण काम पर प्रकाश डाला, गाय आधारित खेती के तरीकों में निहित पर्यावरणीय लाभों को नोट किया। उन्होंने गौ सेवा रक्षकों द्वारा गायों की सेवा और सम्मान करने के लिए महसूस की जाने वाली गहन नैतिक जिम्मेदारी को रेखांकित किया, दूध और दही जैसे आवश्यक उत्पाद प्रदान करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को मान्यता दी। सीपी सीवी आनंद ने दृढ़ता से कहा कि सोशल मीडिया पर मवेशियों की हत्या के वीडियो पोस्ट करने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने गौरक्षकों से कानून का सावधानीपूर्वक पालन करने का आग्रह किया और उन्हें चेतावनी दी कि अगर उन्हें कोई सूचना मिलती है तो वे कानून को अपने हाथ में न लें। उन्होंने उन्हें सलाह दी कि वे फोटो और वीडियो सहित किसी भी जानकारी की तुरंत पुलिस कंट्रोल रूम को मोबाइल नंबर 8712661155 पर कॉल करके रिपोर्ट करें। इसके अलावा, उन्होंने शहर की चौकियों पर कोई भी गैरकानूनी कार्रवाई न करने की सलाह दी, उन्हें हैदराबाद सिटी पुलिस से हर संभव सहायता का आश्वासन दिया और कहा कि आपको भी हमारे साथ सहयोग करना चाहिए।

हम्पी पीठाधिपति श्री श्री श्री विरुपाक्ष विद्यारण्य स्वामी ने शुक्रवार को वीआईपी घाट पर पुष्कर स्नान किया।

डीआरजी बल ने मारे गए माओवादियों के शवों के सामने मनाया जश्न

कोत्तागुडेम, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। छत्तीसगढ़ में दो दिन पहले हुई मुठभेड़ में मारे गए माओवादियों के शवों के सामने जिला रिजर्व गार्ड (डीआरजी) के जवानों ने जश्न मनाया। घटना का एक वीडियो क्लिप सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है, जिसमें सुरक्षाकर्मियों के व्यवहार को लेकर आलोचना की जा रही है। सुरक्षाकर्मी हाथों में राइफल थामे विजय के नारे लगाते नजर आए, जबकि कुछ माओवादियों के शवों के बीच बैठकर फोटो खिंचवाते नजर आए।

गौरतलब हो कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने भी मुठभेड़ की सराहना की और 31 मार्च 2026 तक माओवादियों को खत्म करने की कसम खाई। बुधवार को छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र के अबूझमाड़ जंगलों में हुई मुठभेड़ ने दुनिया भर के मीडिया का ध्यान आकर्षित किया, क्योंकि सीपीआई (माओवादी) पार्टी केंद्रीय समिति के महासचिव नंबल्ला केशव राव उर्फ बसवा राजू मुठभेड़ में मारे गए 27 माओवादियों में शामिल थे। मुठभेड़ में नारायणपुर, दंतेवाड़ा, बीजापुर और कोंडागांव के डीआरजी जवानों ने हिस्सा लिया। विभिन्न जन संगठनों और वामपंथी दलों ने सरकार से मांग की है कि मुठभेड़ में केशव राव और 26 अन्य की हत्या की सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश से न्यायिक जांच कराई जाए।

'प्रेस काउंसिल' नाम का उपयोग व्यक्तियों या संगठनों द्वारा नहीं किया जाना चाहिए: शुभा गुप्ता

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। भारतीय प्रेस परिषद के सचिव ने सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को पत्र लिखकर यह सुनिश्चित करने को कहा है कि नियमों का उल्लंघन न हो। भारतीय प्रेस परिषद की सचिव शुभा गुप्ता ने बताया कि प्रेस परिषद का कार्यालय सूचना भवन, सीजीओ कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली में स्थित है। उन्होंने कहा कि प्रेस काउंसिल की किसी भी राज्य में शाखा नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि किसी को भी "प्रेस काउंसिल" नाम का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी गई है। भारतीय प्रेस परिषद की सचिव शुभा गुप्ता ने कहा कि "प्रेस परिषद" (प्रेस परिषद) शब्द का प्रयोग किसी भी व्यक्ति या अन्य प्रेस संगठनों द्वारा किसी भी तरह से नहीं किया जाना चाहिए, जिससे इसका निहितार्थ निकलता हो। केंद्रीय विधि मामलों के मंत्रालय ने भी अपनी राय व्यक्त की है कि 'प्रेस काउंसिल' नाम और इससे संबंधित शब्द का प्रयोग किसी अन्य संगठन द्वारा केंद्र सरकार की अनुमति के बिना नहीं किया जाना चाहिए। यह प्रतीक एवं नाम (अनुचित प्रयोग निवारण) अधिनियम, 1950 की धारा 3 की प्रविष्टि 7(ii) है। उन्होंने कहा कि यह उल्लंघन होगा। यदि अन्य संगठनों एवं व्यक्तियों द्वारा 'प्रेस काउंसिल' नाम का प्रयोग किया जाएगा तो भारतीय प्रेस परिषद की प्रतिष्ठा धूमिल होगी। इसलिए, भारतीय प्रेस परिषद के सचिव ने सरकार के मुख्य सचिवों को स्थानीय निकायों और सरकारी संघों में 'प्रेस परिषद' के नाम पर पंजीकरण पर रोक लगाने के लिए उचित आदेश जारी करने की सलाह दी है।

सरस्वती पुष्करम में प्रतिदिन सरस्वती नवरात्रि माला आरती कार्यक्रम

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। कालेश्वरम में आयोजित सरस्वती पुष्करम के अवसर पर पिछले आठ दिनों से प्रतिदिन रात्रि 7:30 बजे सरस्वती नवरात्रि माला आरती का कार्यक्रम बड़े धूमधाम से चल रहा है। इसका संचालन काशी के प्रख्यात विद्वानों द्वारा किया जाता है। राज्य सरकार ने गंगा आरती में अनुभवी पुजारियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया है और वे लगातार इस पवित्र आयोजन का आयोजन कर रहे हैं। यह आरती लगभग 45 मिनट तक चलती है। इसमें नौ विशेष आरतियाँ होती हैं, जो सरस्वती नवरात्रि माला के जाप के साथ होती हैं। प्रत्येक आरती के अनूठे आध्यात्मिक और सामाजिक लाभ हैं।

ओमकारा आरती - सभी बुराइयों के निवारण के लिए, नाग आरती - सर्प दोष का निवारण और स्वास्थ्य की प्राप्ति, पंच आरती - दीर्घायु के लिए, सूर्य आरती- रोग निवारण एवं समृद्धि, चन्द्र आरती - डेयरी फसलों की समृद्धि और मन की शांति, नंदी आरती - गुण, शक्ति और ज्ञान का उपहार, सिंह आरती - नेतृत्व और साहस प्रदान करती है, कुंभ आरती - धन और सुख की प्राप्ति, नक्षत्र आरती - शुद्ध मन और प्रसिद्धि पाने के लिए है। आईटी एवं उद्योग मंत्री दुदिल्ला श्रीधर बाबू के निर्देशानुसार सूचना एवं जनसंपर्क विभाग द्वारा लोकप्रिय सरस्वती नवरात्रि माला आरती कार्यक्रम का प्रतिदिन सीधा प्रसारण किया जा रहा है। यह अनूठा कार्यक्रम भक्तों को आध्यात्मिकता में डुबो देता है और देवी सरस्वती की कृपा प्राप्त करने का एक अद्भुत तरीका है।

किसानों ने भूमि सर्वेक्षण का किया विरोध

नारायणपेट, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। मक्तल और पड़ोसी क्षेत्रों के किसान नारायणपेट-कोडंगल लिफ्ट सिंचाई योजना के लिए उनकी भूमि अधिग्रहण करने की राज्य सरकार की योजना के खिलाफ उग्र हो गए हैं। शुक्रवार को मक्तल मंडल के अंतर्गत कटरापल्ली गांव के किसानों ने राजस्व विभाग के अधिकारियों द्वारा उनकी जमीनों का सर्वेक्षण करने का विरोध किया। उन्होंने कांग्रेस सरकार के खिलाफ नारे लगाए और अधिकारियों से अपनी योजना वापस लेने की मांग की। गांव के बाहरी इलाकों में किसानों की अधिकारियों से बहस के बाद हल्का तनाव व्याप्त हो गया। उन्होंने आगे कहा कि जब तक राज्य सरकार द्वारा मुआवजे के भुगतान की स्पष्ट घोषणा नहीं की जाती और उसके अनुसार आश्वासन नहीं दिया जाता, तब तक उनकी जमीनों पर कोई सर्वेक्षण नहीं होने दिया जाएगा।

एमएलसी कविता का पत्र बीआरएस और कांग्रेस पार्टियों की साजिश है : डीके अरुणा

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। भाजपा सांसद डीके अरुणा ने आज बीआरएस पार्टी की एमएलसी कविता द्वारा पार्टी प्रमुख और उनके पिता केसीआर को लिखे गए कथित पत्र पर तीखी टिप्पणी की। शुक्रवार को महबूबनगर में मीडियाकर्मियों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस और बीआरएस पार्टियां मिलकर नाटक कर रही हैं और कहा कि कविता का पत्र इसी साजिश का हिस्सा है। उन्होंने इस पत्र के पीछे कांग्रेस पार्टी के एक प्रमुख नेता का हाथ होने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल किया कि बेटी को अपने पिता को पत्र लिखने के लिए क्यों मजबूर किया गया? उन्होंने कहा कि कविता को केसीआर से मिलने

का मौका भी नहीं मिला। डीके अरुणा ने सवाल किया, क्या कविता ने मूल पत्र लिखा था? अगर लिखा था, तो यह कैसे सामने आया? इसे किसने जारी किया। उन्होंने कहा कि बीआरएस पार्टी ने लोगों के बीच विश्वास खो दिया है और केसीआर कमजोर हो गए हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा के खिलाफ आलोचना का स्तर कम हो गया है। उन्होंने कहा कि तेलंगाना में विकल्प भाजपा है। उन्होंने कहा कि इस बार तेलंगाना में किसी भी चुनाव में भाजपा को जिताने की मंशा लोगों में शुरू हो गई है। डीके अरुणा ने अपनी राय व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा ने पिछले विधानसभा, संसद और एमएलसी चुनाव अकेले लड़े थे और उन्होंने कहा कि भाजपा आने वाले किसी भी चुनाव में अकेले लड़ेगी और जीतेगी। अपने पत्र में कविता ने आरोप लगाया कि पार्टी नेताओं को केसीआर से मिलने की अनुमति नहीं दी जा रही है। उन्होंने भाजपा के साथ बीआरएस पार्टी के व्यवहार के तरीके पर संदेह व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि केसीआर ने पार्टी की रजत जयंती सार्वजनिक बैठक में भी भाजपा के साथ गठबंधन के मुद्दे पर स्पष्टता नहीं दी।

हैदराबाद मेट्रो रेल के किराए में कमी

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। हैदराबाद में ट्रैफिक की परेशानी से लोगों को निजात दिलाने के लिए मेट्रो रेल सेवा वरदान बन गई है। लोग ट्रैफिक की चिंता किए बिना कम समय में लंबी दूरी की यात्रा कर रहे हैं। हालांकि, नियमित बस किराए की तुलना में मेट्रो रेल का किराया थोड़ा अधिक है। इससे यात्रियों को थोड़ी परेशानी होती थी। यात्रियों को किराए के मामले में किसी तरह की असुविधा न हो, इसके लिए मेट्रो रेल प्रबंधन ने अहम फैसला लिया है। मेट्रो रेल के किराए में अब कमी कर दी गई है। घटाए गए किराए शनिवार से लागू होंगे। घटाए गए किराए का विवरण : घटाए गए मेट्रो रेल किराए के अनुसार, न्यूनतम किराया 11 रुपये है, जबकि अधिकतम किराया 69 रुपये है। दो किलोमीटर तक के लिए मेट्रो रेल का किराया 12 रुपये से घटाकर 11 रुपये कर दिया गया है। 2 से 3 किलोमीटर का किराया 18 रुपये से घटाकर 17 रुपये कर दिया गया है। 4 से 6 किलोमीटर का किराया 30 रुपये से घटाकर 28 रुपये कर दिया गया है। 6 से 9 किलोमीटर का किराया 40 रुपये से घटाकर 37 रुपये कर दिया गया है। 9 से 12 किलोमीटर का किराया 50 रुपये से घटाकर 47 रुपये कर दिया गया है। 12 से 15 किलोमीटर का किराया 55 रुपये से घटाकर 51 रुपये कर दिया गया है। 15 से 18 किलोमीटर का किराया 60 रुपये से घटाकर 56 रुपये कर दिया गया है। 18 से 21 किलोमीटर का किराया 66 रुपये से घटाकर 61 रुपये कर दिया गया है। 21 से 24 किलोमीटर का किराया 70 रुपये से घटाकर 65 रुपये कर दिया गया है। 24 किलोमीटर से अधिक की यात्रा का किराया 75 रुपये से घटाकर 69 रुपये कर दिया गया है। कम किया गया किराया मेट्रो यात्रियों के लिए काफी फायदेमंद होगा। चूंकि मानसून का मौसम आ रहा है, इसलिए लोग मेट्रो से यात्रा करना पसंद करेंगे।

आनुवंशिक रक्त विकारों की रोकथाम की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

हैदराबाद, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। थैलेसीमिया और सिकल सेल सोसायटी (टीएससीएस), हैदराबाद की एक इकाई, कमला अस्पताल और अनुसंधान केंद्र ने थैलेसीमिया या सिकल सेल वाहक के रूप में पहचाने जाने वाले जोड़ों के लिए प्रसवपूर्व निदान (पीएनडी) परीक्षण शुरू करके आनुवंशिक रक्त विकारों की रोकथाम की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। यह पहल सोसायटी के व्यापक रोकथाम कार्यक्रम का एक अनिवार्य घटक है जिसका उद्देश्य थैलेसीमिया मेजर और सिकल सेल एनीमिया से प्रभावित बच्चों के जन्म को कम करना है। प्रीनेटल डायग्नोस्टिक सेंटर 2035 तक थैलेसीमिया जन्मों को खत्म करने के टीएससीएस के मिशन में एक बड़ी प्रगति के साथ एक नई सुविधा है, जो इस दर्शन से प्रेरित है कि रोकथाम इलाज से बेहतर है।

अपने चल रहे प्रसवपूर्व जांच कार्यक्रम के माध्यम से, टीएससीएस गर्भावस्था के शुरुआती दौर में वाहक जोड़ों की पहचान करता है। जब दोनों साथी वाहक पाए जाते हैं, तो अजन्मे बच्चे के हर गर्भावस्था में प्रभावित होने की 25% संभावना होती है। ऐसे मामलों में, टीएससीएस फर्नांडीज फाउंडेशन, हैदराबाद के सहयोग से, प्रारंभिक तिमाही के दौरान प्रसवपूर्व निदान परीक्षण प्रदान करता है। डॉ. सुमन जैन, मुख्य चिकित्सा अनुसंधान अधिकारी और सचिव, डॉ. के. सरोजा, चिकित्सा अधिकारी डॉ. जी. पद्मा, अनुसंधान वैज्ञानिक - टीएससीएस द्वारा समर्थित यह पहल न केवल महत्वपूर्ण आनुवंशिक स्वास्थ्य जानकारी के साथ परिवारों को सशक्त बनाती है, बल्कि प्रारंभिक पहचान और समय पर हस्तक्षेप के माध्यम से थैलेसीमिया और सिकल सेल एनीमिया के नए जन्मों को रोकने के टीएससीएस के मिशन को भी मजबूत करती है, जो अंततः थैलेसीमिया/सिकल सेल एनीमिया मुक्त भविष्य में योगदान देती है। यह साझेदारी समय पर प्रसवपूर्व निदान सेवाओं की सुविधा प्रदान करेगी, परिवारों को महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करेगी और उन्हें स्वस्थ भविष्य के लिए सूचित विकल्प बनाने में सक्षम बनाएगी। यह सहयोग भारत में प्रजनन स्वास्थ्य परिणामों को बेहतर बनाने और वंशानुगत रक्त विकारों के बोझ को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। फर्नांडीज अस्पताल में प्रसूति रोग विशेषज्ञ और मातृ एवं भ्रूण चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. गीता कोलार ने कहा, "यह साझेदारी निदान से कहीं अधिक है - यह करुणा, सशक्तिकरण और आशा के बारे में है।" "हम हर परिवार को सर्वोत्तम चिकित्सा देखभाल और जानकारी प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।" टीएससीएस के अध्यक्ष डॉ. चंद्रकांत अग्रवाल ने कहा, "यह निदान केंद्र थैलेसीमिया और सिकल सेल प्रभावित बच्चों के जन्म को रोकने के हमारे दीर्घकालिक प्रयास में एक मील का पत्थर है।" "विज्ञान और सामाजिक प्रतिबद्धता को एकजुट करके, हमारा लक्ष्य थैलेसीमिया मुक्त पीढ़ी को सुरक्षित करना है।"

पुलिस ने आदिवासी युवाओं को प्रदान किए ड्राइविंग लाइसेंस

कोत्तागुडेम, 23 मई (स्वतंत्र वार्ता)। दम्मापेटा पुलिस ने आदिवासी युवाओं की आजीविका सुनिश्चित करने के लिए उन्हें दो पहिया एवं चार पहिया वाहन के लाइसेंस प्रदान किए हैं। एसपी बी रोहित राजू के निर्देशों के बाद, दम्मापेट में कोंडा रेड्डी जनजाति के एक गांव पूसुकुंटा के 12 युवकों को प्रशिक्षित किया गया और उन्हें ड्राइविंग लाइसेंस दिए गए। एसपी ने शुक्रवार को अपने कार्यालय में उन्हें लाइसेंस की प्रतियां सौंपीं।

एसपी ने कहा कि पुलिस विभाग आदिवासी और एजेंसी क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं की मदद करेगा। उनके लिए खेलकूद प्रतियोगिताएं और नौकरी कोचिंग क्लास जैसे कार्यक्रम चलाए जाएंगे। उन्होंने आदिवासी युवाओं को शराब की लत नहीं लगाने की सलाह दी। वाहन निरीक्षण के दौरान कई आदिवासी युवक बिना ड्राइविंग लाइसेंस के पकड़े जा रहे हैं। रोहित राजू ने बताया कि जिले के सभी पुलिस थानों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले एजेंसी क्षेत्रों में रहने वाले युवाओं को ड्राइविंग लाइसेंस जारी किए जाएंगे। इस मौके पर दम्मापेट के एसआई साई किशोर रेड्डी भी मौजूद थे।

Printed and published by Dr. Gireesh Sanghi on behalf of AGA Publications Ltd., at 396, Lower Tankbund, Hyderabad-500080 Editor: *Dhirendra Pratap Singh *responsible for selection of news under the PRB Act. Postal Licence H/SD/380/21-22, Phone:27644999. Fax:27642512, RNI No.69340/98, Regd.:No.AP/HIN/00196/01/1/97/TC.